# चौथी दुनिया

www.chauthiduniya.com

हिंदी का पहला साप्ताहिक अख़बार

मूल्य 5 रुपये

1986 से प्रकाशित

21 अप्रैल–27 अप्रैल 2014

Postal Regn. No. DL (ND)-11/6139/2012-13-14, RNI No. DELHIN/2009/30467


# चुनाव से पहले ही

# राहुल हार गए

**लोकसभा चुनाव के नतीजे 16 मई को आने वाले हैं, लेकिन देश का राजनीतिक माहौल दीवार पर लिखी इबारत की तरह यह संकेत दे रहा है कि यूपीए सरकार की हार निश्चित है. कांग्रेस के उम्मीदवार चुनाव के बीच मैदान छोड़कर भाग रहे हैं. हार की वजह यूपीए सरकार के दौरान भ्रष्टाचार, महंगाई और घोटाले हैं. विकास के मुद्दे पर कांग्रेस पार्टी की बातों पर लोगों को अब भरोसा नहीं रहा. राहुल गांधी खुद को एक नेता के रूप में साबित करने में विफल रहे हैं. राहुल गांधी की सबसे बड़ी चूक यह है कि वह युवाओं का भरोसा नहीं जीत सके. राहुल गांधी का नरेंद्र मोदी को सीधे चुनौती न देना कांग्रेस की सबसे बड़ी भूल है. नरेंद्र मोदी को वॉक-ओवर देकर कांग्रेस ने भाजपा विरोधियों को निराश किया, साथ ही इस वजह से मुसलमानों का वोट बंट गया. राहुल गांधी ने मोदी का सामना न करके खुद को एक हारा हुआ योद्धा साबित किया है.**

मनीष कुमार

कांग्रेस पार्टी का कैंपेन एक शर्मनाक स्थिति में है. राहुल गांधी लोगों की नज़र में चुनाव से पहले ही हार चुके हैं. उनके भाषणों से लोगों में कोई विश्वास नहीं जगता है. वह एक ही तरह की बात हर रैली में कहते हैं, इसलिए जब उनका भाषण टीवी पर दिखाया जाता है, तो लोग चैनल बदल लेते हैं. अगर नरेंद्र मोदी की रैली साथ में होती है, तो टीवी चैनल वाले ही राहुल की आवाज़ बंद कर देते हैं. राहुल की साख एक नेता की नहीं बन सकी. राहुल गांधी किसानों का दिल नहीं जीत सके. देश के मज़दूर और दलित भी उन्हें अपना नेता नहीं मानते हैं. मुसलमानों में भी वह अपना स्थान नहीं बना पाए हैं और देश के युवाओं के बीच वह एक मजाक बनकर रह गए हैं. यही वजह है कि राहुल गांधी की रैली में अब लोग नहीं आते हैं. कई बार तो ऐसा भी हुआ है कि जब वह बोलने के लिए उठे, तो लोग रैलियां छोड़कर जाने लगे. राहुल गांधी न तो आम जनता को जीत सके और न कांग्रेस पार्टी के कार्यकर्ताओं एवं समर्थकों का हौसला बढ़ा सके. कांग्रेस के कई नेता तो चुनाव से पहले ही कांग्रेस की ऐतिहासिक हार की भविष्यवाणी करने लगे हैं. उन्हें समझ में नहीं आ रहा है कि राहुल गांधी और कांग्रेस पार्टी की लोकप्रियता रसातल में कैसे चली गई. चुनाव से पहले ही पार्टी के नेता एवं कार्यकर्ता हताश और निराश हो चुके हैं. ऐसा लगता है कि कांग्रेस ने चुनाव से पहले ही हार मान ली है या यूं कहें कि कांग्रेस ने नरेंद्र मोदी को वॉक-ओवर दे दिया है.

सवाल यह है कि कांग्रेस पार्टी से आख़िर चूक कहां हुई, वह इस हालत में पहुंची कैसे?

पिछले 10-12 सालों से कांग्रेस पार्टी राहुल गांधी को एक यूथ आइकन यानी एक युवा नेता के रूप में पेश करने की कोशिश में लगी रही. हर दो साल पर राहुल गांधी के सक्रिय राजनीति में आने की मांग उठती रही. राहुल गांधी का प्रचार होता रहा. राहुल गांधी के सक्रिय राजनीति में आने का मामला ऐसा हुआ, जैसे पहले आप-पहले आप के चक्कर में ट्रेन छूट जाती है. राहुल गांधी और कांग्रेस पार्टी की आंखें तब खुलीं, जब ट्रेन छूट चुकी थी. आख़िरकार, पिछले साल जयपुर के कार्यक्रम में उन्हें कांग्रेस पार्टी का उपाध्यक्ष घोषित किया गया, लेकिन यहां भी उन्होंने यह कह दिया कि सत्ता जहर है. अब पता नहीं कि राहुल के उस भाषण को किसने लिखा था. राजनीतिक दल के लिए अगर सत्ता जहर है, तो उन्हें समाजसेवी संस्था बना देना चाहिए. अगर सत्ता जहर है, तो चुनाव नहीं लड़ना चाहिए. कहने का मतलब यह कि राहुल गांधी का अपना ईमेज मेकओवर और कैंपेन संशय से ग्रसित रहा. इस संशय का दूसरा उदाहरण राहुल गांधी को प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार न बनाना है. कांग्रेस पार्टी यह समझ नहीं सकी कि देश की जनता मनमोहन सिंह जैसे प्रधानमंत्री से ऊब चुकी है. उसे एक सक्रिय और निर्णायक प्रधानमंत्री चाहिए. पिछले दस सालों में राहुल गांधी यह साबित नहीं कर सके हैं कि वह एक निर्णायक व्यक्तित्व हैं. यही वजह है कि लोगों की नज़रों में वह प्रधानमंत्री बनने की दावेदारी में नरेंद्र मोदी से काफी पीछे छूट गए. इतने पीछे कि कोई प्रचार अभियान उसकी पूर्ति नहीं कर सकता.

**यूपीए सरकार के मंत्री पिछले दो-तीन सालों से सोनिया गांधी और राहुल गांधी को सब्जबाग दिखाते रहे, यह भरोसा दिलाते रहे कि सरकार की नीतियों की वजह से कांग्रेस चुनाव जीत जाएगी. जब मौक़ा आया, तो मैदान छोड़कर भाग खड़े हुए. क्या कांग्रेस पार्टी में एक ऐसा गुट तैयार हो चुका है, जो राहुल गांधी को प्रधानमंत्री नहीं बनने देना चाहता है?**

वैसे कांग्रेस पार्टी का प्रचार अभियान भी अजीब है. किसी भी पोस्टर और वीडियो में कांग्रेस पार्टी ने लोगों से यह अपील तक नहीं की है कि कांग्रेस को वोट दें या हाथ के निशान पर बटन दबाएं. कांग्रेस का प्रचार अभियान पूरी तरह से ग़ैर-राजनीतिक है. सवाल यह है कि कांग्रेस के वे अक्लमंद लोग कौन हैं, जिन्होंने ऐसे प्रचार की रूपरेखा तैयार की है. पहले जब सोनिया गांधी के हाथ में कमान थी, तो हर योजना पर चर्चा होती थी. भाषण में क्या होगा, नारे क्या होने चाहिए, वीडियो कैसा बनाना है, रैलियों का आयोजन कैसे होगा, उम्मीदवारों को कैसे चुना जाएगा, समाजसेवी संगठनों को कैसे इस्तेमाल करना है, मीडिया को कैसे मैनेज करना है, इन सब बातों पर चर्चा होती थी और फिर रणनीति बनती थी. सोनिया गांधी के आसपास राजनीतिक लोग थे, जो टीवी पर नज़र नहीं आते थे. वे जमीनी स्तर पर फ़ैसले को लागू करने में माहिर थे. इसलिए हर रणनीति कामयाब होती थी. राहुल गांधी के

(शेष पृष्ठ 2 पर)

घर का डॉक्टर

प्रकृति के अनमोल तत्वों द्वारा तैयार किया गया आयुर्वेदिक तेल
राहत रूह औषधियुक्त जड़ी-बूटियों का सशक्त मिश्रण है।

- सर दर्द
- बदन दर्द
- जोड़ों के दर्द
- सर्दी जुकाम
- जले कटे एवं चर्म रोग
- चक्कर आना (समलवाई)
- दिमाग की कमजोरी
- अनिद्रा में लाभकारी

वर्ष 1881 से निरन्तर सेवा में

हरबंशराम का आयुर्वेदिक तेल राहत रूह

तिल के तेल से निर्मित

अब पाउच Packing में भी

अन्य उत्कृष्ट उत्पाद

आयुर्वेद रत्न सुपर ठंडा तेल | सुकून शुद्धता और गुणवत्ता कलौंजी की | Herbal Shampoo Anti Hair Fall | Rahat Rooh 100% PURE COCONUT OIL

हरबंशराम भगवानदास आयुर्वेदिक संस्थान प्रा.लि.

website:www.harbanshram.com Customer Care No.- 08447 427 621

जनरल मर्चेन्ट एवं केमिस्ट शॉप में भी उपलब्ध

कितने असरदार रह गए हैं इमाम बुख़ारी? 03

1952 से अब तक... 04

कांग्रेस और भाजपा में कांटे की जंग 07

साई की महिमा 12

# चुनाव से पहले ही राहुल गांधी हार गए

पृष्ठ एक का शेष

पार्टी के केंद्र में आते ही कांग्रेस के कई अनुभवी नेता निर्णायक भूमिका से दूर चले गए. राहुल गांधी अपने कुछ ख़ास लोगों से घिरे हुए हैं. ये वही लोग हैं, जिनकी वजह से बिहार, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ एवं दिल्ली के विधानसभा चुनावों में कांग्रेस पार्टी का विनाश हो गया. राहुल के ख़ास सलाहकारों में कनिष्क सिंह, मोहन सिंह, मोहन प्रकाश, मधुसूदन मिस्त्री, के जे राव एवं संजय झा जैसे लोग हैं. इनमें से किसी ने ज़मीनी स्तर की राजनीति नहीं की. ये विचारक हैं, टीवी पर बहस करते हैं और ज़मीनी स्तर पर पार्टी कार्यक्रम नहीं करा सकते. इन लोगों की न तो राजनीतिक सोच है और न इनके पास राजनीतिक अनुभव है.

ऐसे ही सलाहकारों ने चुनाव के दौरान प्रचार-प्रसार और प्रोपेगेंडा के तूफानी हमले की योजना बनाई. राहुल गांधी को योजना बताई गई, राहुल गांधी ने हां कर दी. पता चला कि यह तूफानी हमला कांग्रेस संगठन के लोग नहीं करेंगे, बल्कि इसके लिए विदेशी एजेंसियों को चुना गया. प्रचार का काम अमेरिकी कंपनी बरसन-मार्शेलर और जापानी कंपनी देन्तसू को दिया गया. इस काम के लिए कांग्रेस पार्टी ने 700 करोड़ रुपये दिए, ताकि होर्डिंग्स, पोस्टर्स, रेडियो, अख़बारों और टीवी चैनलों के जरिये प्रचार हो सके. इनका काम मनमोहन सरकार की उपलब्धियों का प्रचार और राहुल गांधी का इमेज-मेकओवर करना था, ताकि लोग कांग्रेस को भाजपा से बेहतर मानें और वोट दें. चुनाव आयोग के मॉडल कोड ऑफ कंडक्ट लागू होने से पहले ही देश भर में प्रचार-प्रसार का काम शुरू हो गया. एक कांग्रेस नेता ने बताया कि इन एजेंसियों की पहली योजना मनमोहन सरकार के ख़िलाफ़ नकारात्मक प्रचार को निष्प्रभावी करना था और उसके बाद राहुल का सकारात्मक प्रचार करके उनकी छवि निखारना था. पहली योजना के तहत इन एजेंसियों ने मनरेगा, फूड सिक्योरिटी, डायरेक्ट कैश ट्रांसफर, यूआईडी एवं आरटीआई जैसे कई मुद्दों का प्रचार किया, लेकिन उस प्रचार को देखकर लोगों का रिएक्शन उल्टा हो गया. मनरेगा भ्रष्टाचार की वजह से सबसे बदनाम योजना बनकर रह गई है, किसी को कैश मिला नहीं, यूआईडी को लेकर भी संशय बना हुआ है. विपक्ष ने सिर्फ़ इतना कहकर कि कांग्रेस पार्टी उन कामों का भी श्रेय लेना चाह रही है, जो अभी हुए ही नहीं हैं, प्रचार की हवा निकाल दी. इन्हीं कंपनियों के ज़रिये अंग्रेजी चैनल टाइम्स नाऊ के अर्नब गोस्वामी के साथ इंटरव्यू रखा गया. उस एक इंटरव्यू ने राहुल गांधी को जो नुक़सान पहुंचाया, उसकी भरपाई 700 करोड़ रुपये लेने वाली ये एजेंसियां अभी तक नहीं कर सकी हैं. इसके बाद इन कंपनियों द्वारा राहुल के इमेज मेकओवर की सारी योजना विफल हो गई. मोदी के सामने राहुल एक नौसिखिया ही बने रहे. कांग्रेस पार्टी ने राहुल की मार्केटिंग करने की बहुत कोशिश की, लेकिन वह असफल हो गई. राहुल गांधी का यह कहना कि भाजपा मार्केटिंग करने में एक्सपर्ट है, इस बात की पुष्टि करता है कि जो 700 करोड़ रुपये उन्होंने दो विदेशी कंपनियों को दिए, वे बेकार साबित हुए. राहुल गांधी को यह बात समझ में नहीं आई कि अगर पार्टी के ही अनुभवी नेताओं को 700 करोड़ रुपये देकर प्रचार की ज़िम्मेदारी सौंपी गई होती, तो आज उनकी भी मोदी के टक्कर की मार्केटिंग हो गई होती. आज वह मोदी को चुनौती देते नज़र आते. लेकिन, सवाल यह है कि आख़िर ऐसी क्या बात है कि राहुल गांधी की सारी मार्केटिंग और प्रचार योजना विफल हो गई.

यूपीए के 10 सालों को आज़ाद हिंदुस्तान के इतिहास के एक काले धब्बे के रूप में याद किया जाएगा. मनमोहन सरकार ने खुद को एक झूठी, भ्रष्ट, जनविरोधी और आज़ाद भारत की सबसे बदनाम सरकार के रूप में स्थापित किया. उसने संसद और सुप्रीम कोर्ट में झूठ बोलने का कीर्तिमान स्थापित किया. देश की जनता यह मानती है कि यूपीए सरकार आज़ाद भारत की अब तक की सबसे भ्रष्ट सरकार है. मनमोहन सिंह के कार्यकाल में ऐतिहासिक महंगाई और बेरोज़गारी देखी गई. किसानों ने सबसे ज़्यादा आत्महत्याएं कीं. यूपीए सरकार के दौरान एक-एक करके कई सारे प्रजातांत्रिक संस्थानों की विश्वसनीयता ही नष्ट कर दी गई. मीडिया में पिछले तीन सालों से यूपीए

फोटो-*प्रभात पाण्डेय*

सरकार सिर्फ़ घोटालों और अकर्मण्यता के लिए चर्चा में रही. मनमोहन सिंह एक कमजोर प्रधानमंत्री साबित हुए और उनकी सरकार फ़ैसला न लेने वाली सरकार के नाम से मशहूर हो गई. पहली बार कैबिनेट मंत्रियों को जेल जाना पड़ा. पहली बार किसी घोटाले में शक की सूई प्रधानमंत्री पर पड़ी. यह सब कम था, तो बाकी काम महंगाई और बेरोज़गारी ने कर दिया. लोग नाराज़ थे. दो साल पहले से ही कांग्रेस पार्टी को यह अंदाज़ा था कि 2014 आसान नहीं होने वाला है. अन्ना हजारे और बाबा रामदेव के आंदोलन में जिस तरह से लोगों ने हिस्सेदारी की, वह कांग्रेस के ख़िलाफ़ जनविरोध का प्रमाण था. कांग्रेस पार्टी के नेता सब देख रहे थे, सरकार देख रही थी, सबके सामने एक सबसे बड़ी चुनौती थी, राहुल गांधी को प्रधानमंत्री बनाने की चुनौती. कांग्रेस गांधी परिवार की पार्टी है. यह सबको पता था कि 2014 का चुनाव राहुल गांधी के नेतृत्व में लड़ा जाएगा. इसके लिए यूपीए सरकार और कांग्रेस के मंत्रियों ने क्या कोई तैयारी कर रखी थी?

दो साल पहले सरकार के एक वरिष्ठ अधिकारी से बातचीत के दौरान कई जानकारियां मिलीं. पता चला कि कांग्रेस पार्टी का 2014 का चुनाव जीतने का फॉर्मूला क्या है. उन्होंने बताया कि सरकार का मुख्य लक्ष्य आधार कार्ड बनवाना है. इसके बाद डायरेक्ट कैश ट्रांसफर स्कीम लागू की जाएगी. कांग्रेस पार्टी के नेताओं का यह मानना था कि अगर लोगों के बैंक एकाउंट में सीधे पैसा जाने लगेगा, तो सारी नाराज़गी ख़त्म हो जाएगी. सरकार चुनाव जीतने के लिए फूड सिक्योरिटी बिल लेकर आएगी, जिसके तहत देश की बहुमत आबादी को मुफ्त में खाने का सामान मुहैय्या कराया जाएगा. उन्होंने बताया कि आधार कार्ड बनने और इन योजनाओं को लागू करने के बाद देश के सभी जनकल्याण कार्यक्रमों को डायरेक्ट कैश ट्रांसफर से जोड़ा जाएगा. सारी सब्सिडी ख़त्म कर दी जाएगी और उसके बदले वह पैसा सीधे लोगों के बैंक एकाउंट में डाल दिया जाएगा. उन्होंने यह भी बताया कि मीडिया चीखता-चिल्लाता रह जाएगा, एक्सपर्ट बोलते रह जाएंगे कि यह देश की आर्थिक व्यवस्था के लिए ख़तरनाक साबित होगा, लेकिन कांग्रेस पार्टी चुनाव जीत जाएगी. हालांकि, ये योजनाएं तो फूलप्रूफ थीं, इसमें कोई शक नहीं कि अगर सरकार इन योजनाओं पर अमल करती और इन्हें लागू कर देती, तो कांग्रेस की हालत आज कुछ और होती. लेकिन, ऐसा नहीं हुआ. जो मंत्री इन योजनाओं को लागू करने के लिए ज़िम्मेदार थे, वे आज चुनाव नहीं लड़ रहे हैं. उन्होंने चुनाव न लड़ने का फ़ैसला किया है. इसलिए यह सवाल पूछना लाज़िमी है कि क्या यूपीए सरकार के इन मंत्रियों ने किसी साज़िश के तहत इन योजनाओं को लागू नहीं किया? कहीं ऐसा तो नहीं कि यूपीए सरकार के मंत्री पिछले दो-तीन सालों से सोनिया गांधी और राहुल गांधी को सब्जबाग दिखाते रहे, यह भरोसा दिलाते रहे कि कांग्रेस इन नीतियों की वजह से आसानी से चुनाव जीत जाएगी? और जब मौक़ा आया, तो मैदान छोड़कर भाग खड़े हुए. कहीं ऐसा तो नहीं कि मनमोहन सिंह ने इस योजनाओं को अधर में लटका दिया, क्योंकि उन्हें मालूम हो गया कि प्रधानमंत्री के रूप में यह उनकी आख़िरी पारी है. इसके अलावा, क्या कांग्रेस पार्टी में एक ऐसा गुट तैयार हो चुका है, जो राहुल गांधी को प्रधानमंत्री नहीं बनने देना चाहता है?

सरकार की नाकामी और उसके ख़िलाफ़ लोगों की नाराज़गी थी. ऐसे में राहुल गांधी के लिए जो रणनीति चाहिए थी, वह विदेशी कंपनियां नहीं बना सकीं. वहीं दूसरी तरफ़ राहुल गांधी से यह ग़लती हुई कि वह पिछले पांच सालों से संगठन मजबूत करना है, संगठन मजबूत करना है, की रट ही लगाते रह गए. नतीजा यह निकला कि वह न तो संगठन मजबूत कर सके और न ही चुनाव जीत सके. राहुल गांधी एवं उनकी टीम की देखरेख में जिन-जिन राज्यों में चुनाव हुए, वहां कांग्रेस को शर्मनाक हार का सामना करना पड़ा. बिहार और उत्तर प्रदेश की हार ने राहुल की नेतृत्व क्षमता पर सवाल खड़ा कर दिया, लेकिन हाल में हुए विधानसभा चुनावों में राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और दिल्ली में मिली जबरदस्त हार ने यह साबित कर दिया कि राहुल गांधी में नेतृत्व क्षमता नहीं है. यही वजह है कि देश का युवा वर्ग यह मानता है कि राहुल गांधी एक असफल व्यक्ति हैं, जो अपने परिवार के साये में राजनीति के इस मुकाम तक पहुंचे हैं. राहुल गांधी 43 साल के हो चुके हैं. युवा भी नहीं रहे, लेकिन राहुल गांधी के पास अपनी योग्यता और दर्शन को साबित करने के लिए कोई सुबूत नहीं है. लोगों को बताने के लिए राहुल के पास उनकी सफलता की कोई कहानी नहीं है. इतने सालों तक लोकसभा में रहने के बावजूद उनका एक भी भाषण ऐसा नहीं है, जिसे लोग याद कर सकें. हां, कभी-कभी जब उनकी जुबान फिसलती है, तो वह वीडियो सोशल मीडिया और इंटरनेट पर काफी पॉपुलर हो जाता है. वैसे कांग्रेस पार्टी के नेताओं और राहुल गांधी ने नरेंद्र मोदी की वैवाहिक स्थिति पर राजनीति करके यह संकेत दे दिया है कि कांग्रेस चुनाव से पहले ही हार चुकी है. ■

manishbph244@gmail.com

चौथी दुनिया
हिंदी का पहला साप्ताहिक अखबार

वर्ष 06 अंक 07
दिल्ली, 21 अप्रैल-27 अप्रैल 2014
RNI-DELHIN/2009/30467

संपादक
संतोष भारतीय

संपादक समन्वय
डॉ. मनीष कुमार

सहायक संपादक
सरोज कुमार सिंह (बिहार-झारखंड)
सरयू भवन, वेस्ट बोरिंग केनाल रोड,
हरीलाल स्वीट्स के निकट, पटना-800001
फोन: 0612 3211869, 09431421901

ब्यूरो चीफ (लखनऊ)
अजय कुमार
जे-3/2 डालीबाग कॉलोनी, हजरतगंज, लखनऊ-226001
फोन : 0522-2204678, 9415005111

मैसर्स अंकुश पब्लिकेशंस प्राइवेट लिमिटेड के लिए मुद्रक व प्रकाशक रामपाल सिंह भदौरिया द्वारा जागरण प्रकाशन लिमिटेड डी 210-211 सेक्टर 63 नोएडा उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं के- 2, गैनन, चौधरी बिल्डिंग, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली 110001 से प्रकाशित

संपादकीय कार्यालय
के-2, गैनन, चौधरी बिल्डिंग कनॉट प्लेस, नई दिल्ली 110001
कैंप कार्यालय एफ-2, सेक्टर -11, नोएडा, गौतमबुद्ध नगर उत्तर प्रदेश-201301

फोन न.
संपादकीय 0120-6451999
6450888
विज्ञापन व प्रसार 022-42296060
+91-8451050786
+91-9266627379
फैक्स न. 0120-2544378

पृष्ठ-16+4 (बिहार-झारखंड, उत्तर प्रदेश-उत्तराखंड) हर शुक्रवार को प्रकाशित

चौथी दुनिया में छपे सभी लेख अथवा सामग्री पर चौथी दुनिया का कॉपीराइट है. बिना अनुमति के किसी लेख अथवा सामग्री के पुन: प्रकाशन पर क़ानूनी कार्रवाई की जाएगी.

समस्त कानूनी विवादों का क्षेत्राधिकार दिल्ली न्यायालयों के अधीन होगा.

## दिल्ली का बाबू

दिलीप चेरियन

### घर की उम्मीद

मुंबई में आवास एक स्थायी समस्या है, यहां तक कि सरकारी अधिकारियों के लिए भी. राज्य सरकार के संशोधित नियमों के तहत वैसे बाबू, जिनका महाराष्ट्र में सरकारी कोटे के तहत अपना घर है, वे दूसरा घर नहीं ले सकते हैं. इस नए नियम के तहत मुंबई की मैत्री को-ऑपरेटिव हाउसिंग सोसायटी के लगभग 84 सदस्य अयोग्य ठहराए जाएंगे. इन अधिकारियों के लिए यह भले ही बुरी ख़बर हो, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि इससे प्राथमिकता के आधार पर दूसरे अधिकारियों के लिए घर आवंटन का अवसर मिल जाएगा. सूत्रों के मुताबिक, इन फ्लैटों के दावेदारों में गृह विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव अमिताभ राजन, पुलिस ज्वाइंट कमिश्नर धनंजय कमलाकर, अतिरिक्त पुलिस आयुक्त राजवर्धन सिन्हा और मुख्यमंत्री के सचिव विकास खड़गे भी अन्य लोगों में शामिल हैं. इसमें आश्चर्य की बात नहीं है, क्योंकि राज्य हाउ-सिंग बोर्ड के पास आवासों के आवंटन का विशेषाधिकार है. इससे यह उम्मीद बंधी है कि ये बाबू सौभाग्य से घर प्राप्त कर सकते हैं. ऐसा सौभाग्य आम मुंबई वालों के पास भला कहां है, जो महज सिर पर छत होने से ही अधिक खुश हो जाते हैं. ■

### कार्रवाई की धीमी रफ्तार

नौकरशाही का पहिया धीरे चलता है और यूपीए सरकार के दौरान यह और भी धीमा हो गया है. फिर भी मध्य प्रदेश के आईएएस अधिकारी दंपती अरविंद एवं टीनू जोशी का आय से अधिक संपत्ति का मामला सामने आने के चार साल बाद उनके ख़िलाफ़ अभियोग चलाने का रास्ता साफ़ हो गया. वर्ष 2010 में आयकर विभाग के छापे के बाद इन दोनों के घर से 3 करोड़ रुपये नकद बरामद हुए थे, जिसने राष्ट्रीय स्तर पर सनसनी फैला दी थी. इस बरामदगी के बाद जोशी दंपती को निलंबित कर दिया गया था. हालांकि, अभी भी यह मामला अन्य मामलों की तरह कोर्ट में लंबे समय तक लटक सकता है, लेकिन एक बात सामने आई कि केंद्र सरकार ने उनकी बर्खास्तगी को मंजूरी दे दी और उनके ख़िलाफ़ आपराधिक मामला शुरू करने की इजाजत भी. केंद्रीय सेवा के अधिकारियों के ख़िलाफ़ केंद्र सरकार की अनुमति के बिना कोई मामला नहीं चलाया जा सकता है. खास तौर पर कार्मिक, जनशिकायत एवं पेंशन मंत्रालय के अधिकारियों के ख़िलाफ़. अब जबकि यह स्पष्ट हो गया है, तो भ्रष्टाचार के मामले में अभियोग शुरू हो सकता है. ■

### बंटवारे की समस्या

आंध्र प्रदेश के बंटवारे की जटिल प्रक्रिया जारी है और केंद्र ने सीमांध्र और तेलंगाना के बीच कई विवादों को सुलझाने के लिए पूर्व शहरी विकास सचिव के शिवराम कृष्णा की अगुवाई में एक विशेषज्ञ समिति गठित की है, लेकिन यह समाधान निकालने के लिए बनाई गई अन्य समितियों में से एक ही है. केंद्र ने प्रदेश में आईएएस, आईपीएस एवं आईएफएस अधिकारियों की संख्या का निर्धारण करने के लिए 1965 बैच एवं आंध्र प्रदेश कैडर के सेवानिवृत्त आईएएस अधिकारी सी आर कमलनाथन को नियुक्त किया है. इस पैनल में राज्य के मुख्य सचिव पी के मोहंती, गृह मंत्रालय के विशेष सचिव, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय के इंस्पेक्टर जनरल ऑफ फॉरेस्ट शामिल होंगे. साथ ही कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग के अतिरिक्त सचिव कार्यवाहक सदस्य सचिव के तौर पर शामिल होंगे. बाबुओं के बारे में जानकारी रखने वालों का कहना है कि यह मसला इतना आसान नहीं है. इसके अलावा, दोनों राज्यों में अधिकारियों की कमी की समस्या हल करना मुश्किल है. एक अखिल भारतीय सेवा अधिकारी कैडर की पसंद चाहते हैं, जबकि यह विकल्प आंध्र प्रदेश पुनर्गठन अधिनियम के तहत स्वीकृत नहीं है. अधिनियम में यह भी कहा गया है कि तेलंगाना को 42 फ़ीसद, तो आंध्र प्रदेश को 58 फ़ीसद आईएएस अधिकारी मिलेंगे. फिलहाल, आईएएस अधिकारियों की कुल संख्या 376 है. यहां अपनी पसंद के कैडर के लिए बाबुओं में अंतर्विरोध भी चल रहा है. देखिए, आगे-आगे क्या होता है. ■

dilipcherian@gmail.com

## साउथ ब्लॉक

### सुरेश और चंद्रा निदेशक बने

1987 बैच के भारतीय रक्षा अभियंत्रण सेवा अधिकारी सुरेश सिंह को श्रम एवं रोज़गार मंत्रालय में लंबे समय से खाली पड़े निदेशक के पद पर नियुक्त किया गया है. वह 1987 बैच के केंद्रीय पावर इंजीनियरिंग सेवा अधिकारी गौतम रॉय का स्थान लेंगे, जिन्हें द गोल्डमैन स्कूल ऑफ पब्लिक पॉलिसी, कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय बरक्ले यूएसए के एक करियर प्रशिक्षण के लिए नामित किया गया था. इसी तरह 1995 बैच की आईआरएस-सी एंड सीई अधिकारी ए जोसेफ चंद्रा को वाणिज्य विभाग में निदेशक नियुक्त किया गया है. वह 1992 बैच के आईआरएस-सी एंड सीई अधिकारी वी के श्रीवास्तव का स्थान लेंगी, जो जेनेवा में विश्व व्यापार संगठन के काउंसलर नियुक्त किए गए हैं.

### भास्कर एफसीआई से जुड़े

1988 बैच के आईआरएसईई अधिकारी भास्कर हजारिका भारतीय खाद्य निगम के कोलकाता स्थित आंचलिक कार्यालय में महाप्रबंधक का कार्यभार संभालेंगे. यह पद पिछले कुछ समय से रिक्त था.

### पंकज सीआईसी में शामिल

पंकज के पी श्रेयास्कार को केंद्रीय सूचना आयोग में संयुक्त सचिव (क़ानून) नियुक्त किया गया है, जो अभी तक केंद्रीय सूचना आयोग में निदेशक एवं संयुक्त रजिस्ट्रार थे. वह इंडियन रेलवे सर्विस ऑफ सिग्नल इंजीनियर्स अधिकारी शांति का स्थान लेंगे.

### समारिया संयुक्त सचिव बनेंगे

1993 बैच के आईएएस एवं असम सरकार के अंतर्गत खान एवं खनिज विभाग में आयुक्त एवं सचिव कैलाश चंद सामरिया जल्द ही केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय में संयुक्त सचिव के रूप में कार्यभार संभाल सकते हैं. वह 1984 बैच एवं एजीएमयूटी कैडर की आईएएस अधिकारी शकुंतला का स्थान लेंगे, जो शीघ्र ही अपना कार्यकाल पूरा करेंगी. ■

चौथी दुनिया ब्यूरो
feedback@chauthiduniya.com

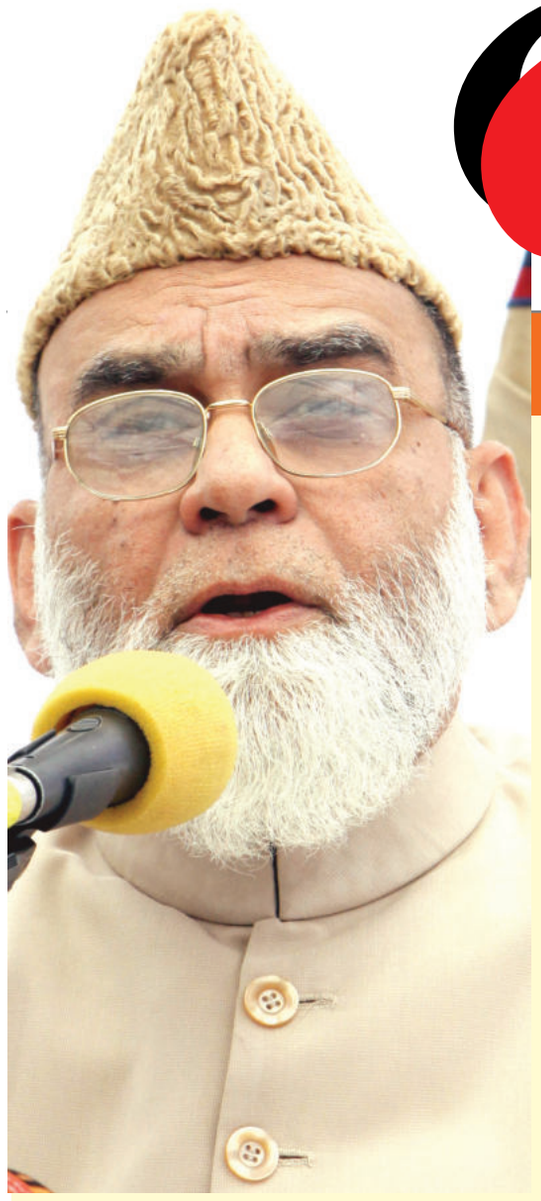

चावड़ी बाज़ार स्थित जरी–जरदोज़ी के कारीगर मोहम्मद जुनैद बताते हैं कि लोकसभा चुनाव में सबसे भ्रमित मुस्लिम मतदाता ही हैं. उन्हें समझ में नहीं आता कि वह किसे वोट करे. बेशक, इमाम साहब की कौल का असर देखने को मिलेगा. उनके मुताबिक़, मुसलमानों का आधा वोट कांग्रेस को मिलेगा, जबकि आम आदमी पार्टी के हिस्से में भी कुछ वोट आएंगे.

लोकसभा चुनाव 2014

# कितने असरदार रह गए हैं इमाम बुख़ारी?

**यह पहली बार नहीं है, जब चुनाव के समय जामा मस्जिद के शाही इमाम सैय्यद अहमद बुख़ारी ने मुसलमानों से किसी ख़ास पार्टी के पक्ष में वोट करने की अपील की हो. कभी कांग्रेस, कभी भारतीय जनता पार्टी और कभी समाजवादी पार्टी को वोट देने की बात कहने वाले इमाम बुख़ारी इस बार कांग्रेस की हिमायत कर रहे हैं. क्या देश के मुसलमानों पर उनकी इस अपील का असर पड़ेगा, इसी मसले पर प्रस्तुत है चौथी दुनिया की यह ख़ास रिपोर्ट...**

अभिषेक रंजन सिंह

लोकसभा चुनाव के मद्देनज़र सियासी पार्टियों और धार्मिक गुरुओं एवं नेताओं की सक्रियता बढ़ गई है. बीते दिनों कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी ने जामा मस्जिद के शाही इमाम अहमद बुख़ारी से मुलाक़ात की. उसके बाद बुख़ारी ने सभी को चौंकाते हुए मुसलमानों से कांग्रेस के समर्थन की अपील कर दी. हालांकि बुख़ारी ने पश्चिम बंगाल में तृणमूल कांग्रेस और बिहार में लालू प्रसाद की अगुवाई वाली राष्ट्रीय जनता दल को भी वोट देने की गुज़ारिश की है.

इस बारे में इमाम बुख़ारी की दलील है कि भारतीय जनता पार्टी सत्ता में आने और नरेंद्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने से अल्पसंख्यकों ख़ासकर मुसलमानों का जीना दुश्वार हो जाएगा. लिहाज़ा भाजपा के मंसूबे को नाक़ाम करने के लिए देश में सेक्युलर मतों का विभाजन न हो. ग़ौरतलब है कि इमाम बुख़ारी की इस अपील के बाद कई मुस्लिम संगठनों ने भी अपनी-अपनी राय ज़ाहिर की. जमीअत-ए-उलेमा हिंद के प्रमुख मौलाना अरशद मदनी ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी को सत्ता से बाहर रखने के लिए हर उन पार्टियों को वोट देना चाहिए, जो भाजपा को चुनाव में हरा सके.

हालांकि इस बीच शिया धर्मगुरू कल्बे जव्वाद ने शिया मुसलमानों से कांग्रेस को वोट न देने की अपील की है. उनके मुताबिक, मुसलमानों की ख़राब हालत के लिए कोई और नहीं, बल्कि कांग्रेस ज़िम्मेदार है, क्योंकि वह मुसलमानों को अपनी रियाया समझती है.

इमाम बुख़ारी की अपील पर मचे सियासी घमासान के बाद लेखक मुसलमानों की राय जानने के लिए दिल्ली स्थित जामा मस्जिद गया और लोगों से बात की. मटिया महल स्थित इस्लामिक ग्रंथों के विक्रेता मोहम्मद जुबैर अहमद ने चौथी दुनिया को बताया कि इमाम बुख़ारी कौम के लोगों के बीच अपना यकीन खो चुके हैं. इस बार उन्होंने कांग्रेस के हक़ में वोट करने की अपील की है, उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव में समाजवादी पार्टी के पक्ष में वोट करने की अपील की थी, जबकि एक मर्तबा उन्होंने भारतीय जनता पार्टी की हिमायत करते हुए मुसलमानों से उसके हक़ में वोट करने की अपील की थी. यही वजह है कि देश के मुसलमानों को उनके ऊपर कोई एतबार नहीं रह गया है. गांव-देहात के कम पढ़े लिखे लोग बेशक उनके झांसे में आ जाएं, लेकिन पढ़ा लिखा मुसलमान किसी के कहने पर वोट नहीं करेगा. वहीं इस बारे में अमीन अहमद बताते हैं कि लोग चाहे जो कहें, लेकिन इमाम साहब की बातों पर आज भी मुसलमानों को भरोसा है. अगर उन्होंने भाजपा को सत्ता में आने से रोकने के लिए कांग्रेस के पक्ष में वोट करने की अपील की है, तो उसे मुसलमान संजीदगी से ले रहे हैं. निश्चित रूप से इसका असर देखने को मिलेगा.

इरशाद अहमद अंसारी नामक एक युवक ने बताया कि इमाम बुख़ारी का नज़रिया समझ में नहीं आता. इस चुनाव में वह कांग्रेस की तरफदारी कर रहे हैं, जबकि पिछले

चुनाव में वह किसी और पार्टी की हिमायत कर रहे थे. खुदा जाने अगले चुनाव में वह किसका समर्थन करेंगे. वहीं मोहम्मद सरफ़राज़ ने बताया कि मुसलमानों के बीच इमाम साहब की लोकप्रियता घट रही है. बेहतर यही होगा कि इमाम बुख़ारी अपनी इमामत छोड़ किसी सियासी पार्टी में शामिल हो जाएं.

चावड़ी बाज़ार स्थित जरी-जरदोज़ी के कारीगर मोहम्मद जुनैद बताते हैं कि लोकसभा चुनाव में सबसे भ्रमित मुस्लिम मतदाता ही हैं. उन्हें समझ में नहीं आता कि वह किसे वोट करे. बेशक, इमाम साहब की कौल का असर देखने को मिलेगा. उनके मुताबिक़, मुसलमानों का आधा वोट कांग्रेस को मिलेगा, जबकि आम आदमी पार्टी के हिस्से में भी कुछ वोट आएंगे.

जामा मस्जिद इलाक़े में कुतुब खाना अंजुमन तरक्की-ए-उर्दू के संचालक मोहम्मद निज़ामुद्दीन बताते हैं कि इमाम बुख़ारी का कहना बिल्कुल सही है कि मुसलमानों को कांग्रेस के पक्ष वोट करना चाहिए, ताकि फ़िरक़ापरस्त ताक़तें हुकूमत में न आ सके.

बहरहाल, जामा मस्जिद के शाही इमाम ने मुसलमानों से भले ही कांग्रेस के पक्ष में वोट करने की अपील की हो, लेकिन सच्चाई यह है कि देश के मुसलमानों के बीच अपनी साख खो चुके हैं. मिसाल के तौर पर कांग्रेस को समर्थन करने की अपील पर उनके ही भाई याहया बुख़ारी ने विरोध जताया है. दरीबा कलां निवासी जमीला खातून ने चौथी दुनिया को बताया कि इमाम बुख़ारी कौन होते हैं, हिंदुस्तान के मुसलमानों को यह कहने वाले कि किसे वोट देना चाहिए और किसे नहीं. उनके मुताबिक़, इमाम बुख़ारी जैसे लोग सिर्फ़ अपने निजी फ़ायदे के लिए ही काम करते हैं. उन्हें देश के मुसलमानों से कोई लेना-देना नही है. दिल्ली विश्वविद्यालय में पढ़ने वाली राबिया बताती हैं कि इमाम बुख़ारी जैसे लोगों को मुसलमानों के लिए शिक्षा और रोज़गार की बात करनी चाहिए न कि किसी पार्टी विशेष को वोट देने की अपील करनी चाहिए.

बहरहाल, 10 अप्रैल को दिल्ली-एनसीआर की सभी संसदीय सीटों पर मतदान हो गए, लेकिन जामा मस्जिद के शाही इमाम सैय्यद अहमद बुख़ारी की अपील का कोई ख़ास असर देखने को नहीं मिला. शाही इमाम के दफ्तर से भले ही तमाम दावे किए जा रहे हों, लेकिन उन दावों की हक़ीक़त 16 मई को सामने आ जाएगी, जब एक साथ पूरे देश के चुनाव नतीजे सामने आएंगे. ■

arsingh@chauthiduniya.com

फोटो-प्रभात पाण्डेय

## इमाम के दफ्तर में अख़बारों की कतरन

दिल्ली स्थित जामा मस्जिद का सेहन (अहाता) सालों भर पर देशी-विदेशी सैलानियों और नमाजियों से भरा रहता है. यहीं पर शाही इमाम सैय्यद अहमद बुख़ारी का दफ्तर भी है. उनसे मिलने के लिए सबसे पहले आपको यहीं से इज़ाज़त लेनी पड़ती है. लोकसभा चुनाव में मुसलमानों को कांग्रेस के पक्ष में वोट करने की शाही इमाम की अपील के बाद, इस बारे में मैं उनकी राय जानने उनके दफ्तर पहुंचा. हमेशा की तरह वहां गहमागहमी का माहौल था, लेकिन इमाम साहब नहीं थे. काफ़ी देर की मशक्कत के बाद वहां कार्यरत एक कर्मचारी ने बताया कि इमाम साहब दिल्ली में नहीं है. वैसे तो उनके दफ्तर में उर्दू, हिंदी और अंग्रेजी जबान के कई अख़बार नियमित आते हैं, लेकिन कांग्रेस के पक्ष में दिए गए उनके बयान के बाद शाही इमाम के दफ्तर में अख़बारों की कतरन सहेजने की कवायद चल रही थी. वहां मौजूद दो-तीन मुलाज़िम संजीदगी के साथ इमाम साहब और कांग्रेस से जुड़े उनके बयान और आलेखों का संग्रह कर रहे थे. इस दौरान इमाम बुख़ारी से मिलने आए लोगों को निराशा का सामना करना पड़ा, जब उन्हें पता चला कि वह शहर से बाहर हैं. इमाम बुख़ारी भले ही खुद को सक्रिय राजनीति से अलग बताते हैं, लेकिन इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता है कि उनके हालिया बयान के बाद जामा मस्जिद में मौजूद उनके दफ्तर में उस वक्त तक गहमागहमी बनी रहेगी, जब कि लोकसभा के चुनाव संपन्न नहीं हो जाते और नई दिल्ली में नई सरकार बन नहीं जाती. ■

# क्या चुनावों के बाद टूट जाएगी आम आदमी पार्टी?

**भारतीय राजनीति में सियासी पार्टियों के बनने और उसके बिखरने का इतिहास कोई नया नहीं है. सोशलिस्ट पार्टी से लेकर भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी और कांग्रेस जैसी पार्टियां भी स्वयं को टूटने से नहीं बचा पाईं. हालांकि इस फ़ेहरिस्त में ज़ल्द ही आम आदमी पार्टी का नाम भी जुड़ सकता है, क्योंकि पार्टी में अंदरूनी कलह ज़ोरों पर है. लिहाज़ा लोकसभा चुनाव के नतीज़ों के बाद आम आदमी पार्टी में बिखराव तय है. पार्टी के भीतर चल रहे घमासान का जायजा ले रहे हैं चौथी दुनिया संवाददाता *अभिषेक रंजन सिंह*...**

आम आदमी पार्टी के ज़रिए राजनीति में बदलाव की उम्मीद कर रहे लोग इन दिनों बेहद निराश हैं. इसमें कोई शक नहीं कि 16 मई को उनकी मायूसी और बढ़ने वाली है, क्योंकि इसी दिन लोकसभा के चुनाव परिणाम आने वाले हैं. ज़ाहिर है ये नतीजे आम आदमी पार्टी के ख़िलाफ़ जाएंगे. संयोग से दिल्ली में जन्मी इस पार्टी की सबसे ज़्यादा दुर्गति यहीं होने वाली है. बाकी देश के अलग-अलग राज्यों में चुनाव लड़ रही आम आदमी पार्टी की हालत क्या होने वाली है, इसका अंदाज़ा भी सहज लगाया जा सकता है.

दिल्ली में लोकसभा चुनाव से पहले मैं दो महत्वपूर्ण घटनाओं का ज़िक्र करना चाहूंगा. पिछले दिनों आम आदमी पार्टी के संस्थापक सदस्य रहे अश्विनी उपाध्याय ने प्रेस क्लब ऑफ इंडिया में एक पत्रकार सम्मेलन बुलाया था. इसमें लक्ष्मीनगर से आम आदमी पार्टी के विधायक विनोद कुमार बिन्नी, अन्ना हजारे के पूर्व ब्लॉगर रहे राजू पारूलकर के अलावा, राकेश गुप्ता और अशोक अग्रवाल भी मौजूद थे. इस मौक़े पर अश्विनी उपाध्याय ने अरविंद केजरीवाल पर आरोप लगाया कि आम आदमी पार्टी अपनी नीतियों और सिद्धांतों से भटक चुकी है. उनके मुताबिक़, आम आदमी पार्टी में आंतरिक लोकतंत्र समाप्त हो चुका है. जो समर्पित कार्यकर्ता सच कहने की हिम्मत करता है, उसे बाहर का रास्ता दिखा दिया जाता है. पार्टी को मिले चंदे में हुई धांधली का खुलासा करते हुए उपाध्याय ने कहा कि करोड़ों रुपयों का कोई हिसाब-किताब नहीं है. उन्होंने अरविंद केजरीवाल पर आरोप लगाते हुए कहा कि पार्टी की ओर से क़रीब 70 लोकसभा उम्मीदवारों के नाम पहले से तय थे. उनके मुताबिक़, इन सीटों के लिए क़रीब 10 हज़ार से ज़्यादा लोगों से साक्षात्कार लिए गए थे, लेकिन पूर्व पत्रकार आशुतोष (चांदनी चौक), जरनैल सिंह (पश्चिमी दिल्ली), राजमोहन गांधी (पूर्वी दिल्ली), योगेंद्र यादव (गुड़गांव), ख़ालिद परवेज़ (मुरादाबाद) और अंजलि दमानिया (नागपुर) समेत कई प्रत्याशियों के नाम पहले से ही तय थे. विनोद कुमार बिन्नी के अनुसार, आम आदमी पार्टी किसी व्यक्ति विशेष की पार्टी नहीं थी, लेकिन केजरीवाल की मेहरबानी से यह पार्टी अब अपने आदर्शों से भटक चुकी है. दूसरी घटना बीते 6 अप्रैल की है, जब आम आदमी सेना के सैकड़ों कार्यकर्ताओं ने जंतर-मंतर पर अरविंद केजरीवाल का पुतला फूंका. इस प्रदर्शन में वे लोग भी शामिल हुए, जिन्होंने दिल्ली विधानसभा चुनाव में आम आदमी पार्टी को वोट दिया था. इस मौक़े पर अश्विनी उपाध्याय ने अरविंद केजरीवाल पर निशाना साधते हुए कहा कि केजरीवाल नवीन जिंदल और सीआईए की दलाली कर रहे हैं. इन घटनाओं से साफ़ ज़ाहिर है कि आम आदमी पार्टी में सब कुछ ठीक नहीं चल रहा है. पिछले साल दिल्ली में हुए विधानसभा चुनाव में 28 सीटें जीतकर दूसरे स्थान पर रही आम आदमी पार्टी को राजधानी की सात लोकसभा सीटों में कितनी सीटें मिलेगी, इसका जवाब पार्टी के बड़े नेताओं के पास भी नहीं है. आख़िर ऐसी कौन सी वजह है, जिसने आम आदमी पार्टी को आज हाशिए पर खड़ा कर दिया है. दरअसल, आम आदमी पार्टी की यह हालत किसी विपक्षी पार्टियों ने नहीं बनाई, बल्कि स्वयं अरविंद केजरीवाल और उनके बड़बोले पार्टी प्रक्ताओं ने बनाई. निश्चित रूप से लोकसभा चुनाव में कांग्रेस विरोध की लहर चल रही है, शायद वैसी लहर जो आपातकाल के बाद हुए चुनावों में देखा गया था. पिछले साल दिल्ली विधानसभा चुनाव में आम आदमी पार्टी को जनता ने भरपूर समर्थन दिया. उम्मीदों से कहीं ज़्यादा सीटें उसे दिल्ली में मिली और अरविंद केजरीवाल अप्रत्याशित रूप से दिल्ली के मुख्यमंत्री बन गए. हालांकि इस बात की चर्चा करना व्यर्थ है कि केजरीवाल सरकार बनाने के लिए अपने किन बयानों से पलटे और किन आदर्शों की तिलांजलि दी. दिल्ली की आम जनता को इससे भी कोई मतलब नहीं था, क्योंकि वह केजरीवाल को एक मसीहा के रूप में देख रही थी, जो उसे महंगाई और बेरोज़गारी से निजात दिला सके, लेकिन जनता की उम्मीदें महज 49 दिनों में ही टूटकर बिखर गईं, जब केजरीवाल ने दिल्ली विधानसभा में लोकपाल क़ानून पारित न होने की वजह से अपना इस्तीफ़ा दे दिया.

अपने इस्तीफ़े को भले ही केजरीवाल या उनकी पार्टी जायज ठहरा रहे हों, लेकिन सच तो यह है कि जब भी आम आदमी पार्टी के पतन की कहानी लिखी जाएगी, उस समय ज़ल्दबाज़ी में लिया गया अरविंद का यह फ़ैसला याद रखा जाएगा. भारतीय राजनीति में वैसे तो कई पार्टियों के बनने और टूटने का इतिहास दर्ज़ है, लेकिन डेढ़ साल पहले बनी किसी पार्टी का दुखांत इस तरह होगा, ऐसी उम्मीद किसी को नहीं थी. वैसे आम आदमी पार्टी के प्रति सहानुभूति रखने वाले यह तर्क ज़रूर दे सकते हैं कि चुनाव के नतीजों से किसी पार्टी का भविष्य तय नहीं होता. बेशक, उनका तर्क अपनी जगह सही है, लेकिन आम आदमी पार्टी को तर्क की इस कसौटी पर नहीं कसा जा सकता. अरविंद केजरीवाल जिनका मानना है कि मौजूदा राजनीति जन विरोधी है. उनके मुताबिक़, राजनीति ऐसी होनी चाहिए, जिसमें जनता की प्रत्यक्ष भागीदारी हो. केजरीवाल का यह विचार उत्तम है, लेकिन अफ़सोस वह और उनकी अद्वितीय राजनीति दिल्ली के दायरे से बाहर नहीं निकल सकी.

केजरीवाल भले ही अपनी राजनीति को गांधी दर्शन पर आधारित मानते हों, लेकिन दुख की बात यह है कि वह स्वयं को गांधी, जयप्रकाश और लोहिया से भी श्रेष्ठ मानते हैं. उनकी पार्टी में कई ऐसे नेता हैं, जिसने अरविंद केजरीवाल को इस खुशफ़हमी का शिकार बना दिया है. ■

arsingh@chauthiduniya.com

फोटो-सुनील मल्होत्रा

## लोकसभा

# 1952 से अब तक...

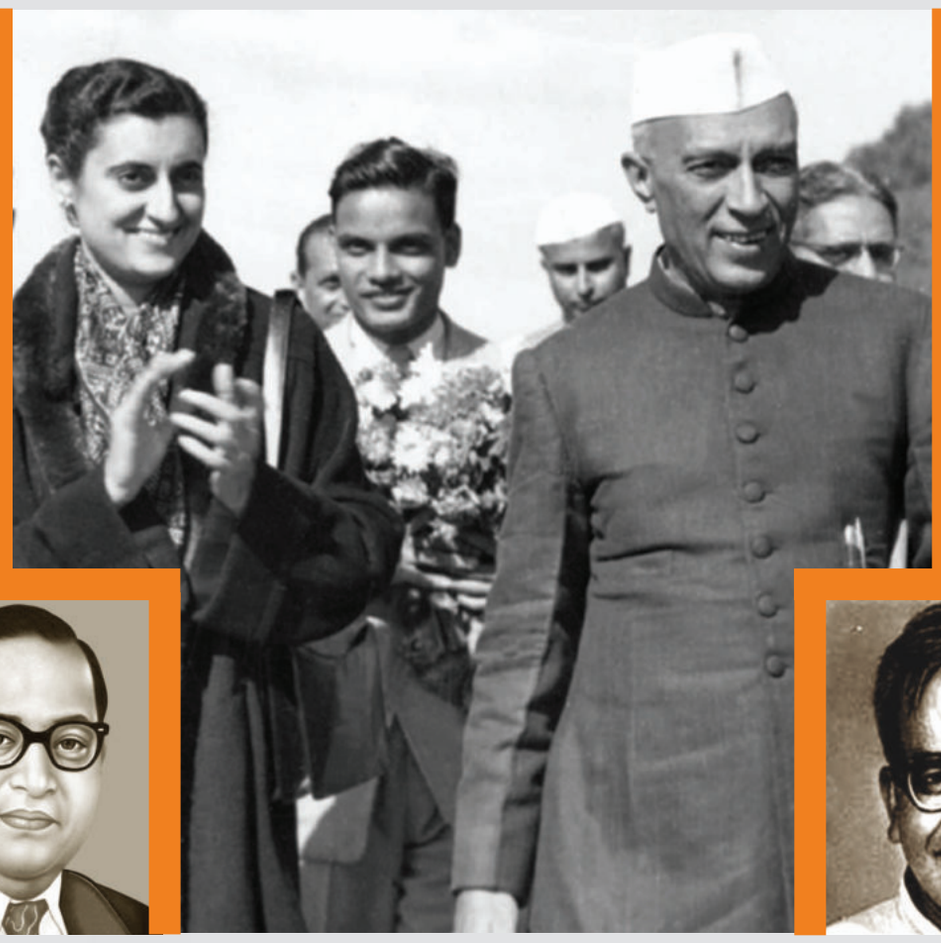

**{ 2 अप्रैल, 1962 को तीसरी लोकसभा का गठन हुआ. नेहरू जी फिर से प्रधानमंत्री बने. दिल का दौरा पड़ने से 27 मई, 1964 को उनका निधन हो गया, तब 2 सप्ताह के लिए गुलजारी लाल नंदा ने उनकी जगह ली. कांग्रेस द्वारा लाल बहादुर शास्त्री को नया नेता चुने जाने तक उन्होंने कार्यवाहक प्रधानमंत्री के रूप में काम किया. शास्त्री के देहांत के बाद कांग्रेस एक बार पुन: नेताविहीन हो गई...**

### पहली लोकसभा (1952)

देश की पहली लोकसभा का गठन वर्ष 1952 में हुआ. पहले लोकसभा चुनाव के बाद भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (कांग्रेस) 364 सीटों के साथ सत्ता में आई. पार्टी ने कुल पड़े वोटों का 45 प्रतिशत हिस्सा हासिल किया था. पंडित जवाहर लाल नेहरू देश के पहले निर्वाचित प्रधानमंत्री बने. स्वतंत्र भारत में चुनाव होने के पूर्व ही नेहरू के दो पूर्व कैबिनेट सहयोगियों ने कांग्रेस के वर्चस्व को चुनौती देने के लिए अलग राजनीतिक दलों की स्थापना कर ली थी. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने एक ओर जहां अक्टूबर, 1951 में जनसंघ की स्थापना की, वहीं दूसरी ओर दलित नेता बी आर अंबेडकर ने अनुसूचित जाति महासंघ (जिसे बाद में रिपब्लिकन पार्टी का नाम दिया गया) को पुनर्जीवित किया. अन्य दल भी उस समय सामने आए थे, जिनमें आचार्य कृपलानी की किसान मज़दूर प्रजा परिषद, राम मनोहर लोहिया एवं जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व वाली समाजवादी पार्टी और भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी शामिल हैं.

### दूसरी लोकसभा (1957)

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पहली लोकसभा यानी 1952 की अपनी सफलता की कहानी 1957 में हुए दूसरे लोकसभा चुनाव में भी दोहराने में कामयाब रही. कांग्रेस के 490 उम्मीदवारों में से 371 जीतने में कामयाब रहे. पंडित जवाहर लाल नेहरू सत्ता में वापस लौटे. कांग्रेस के सदस्य फिरोज गांधी का उदय भी इस चुनाव में देखा गया. उन्होंने उत्तर प्रदेश के रायबरेली निर्वाचन क्षेत्र से अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी नंद किशोर को 29,000 से अधिक मतों के अंतर से हराया.

### तीसरी लोकसभा (1962)

2 अप्रैल, 1962 को तीसरी लोकसभा का गठन हुआ. नेहरू जी फिर से प्रधानमंत्री बने. दिल का दौरा पड़ने से 27 मई, 1964 को उनका निधन हो गया, तब 2 सप्ताह के लिए गुलजारी लाल नंदा ने उनकी जगह ली. कांग्रेस द्वारा लाल बहादुर शास्त्री को नया नेता चुने जाने तक उन्होंने कार्यवाहक प्रधानमंत्री के रूप में काम किया. शास्त्री के देहांत के बाद कांग्रेस एक बार पुन: नेताविहीन हो गई. नेहरू की बेटी इंदिरा गांधी के प्रधानमंत्री बनने से पहले एक बार फिर नंदा को एक महीने से कम समय के लिए कार्यवाहक प्रधानमंत्री बनाया गया. मोरारजी देसाई के विरोध के बाद भी इंदिरा गांधी 24 जनवरी, 1966 को प्रधानमंत्री बनीं.

### महत्वपूर्ण जीत, महत्वपूर्ण हार

1957 के दूसरे आम चुनाव में पहली बार ऐसे बड़े नेता चुनाव लड़े और जीते, जो आगे चलकर भारतीय राजनीति के शीर्ष पर पहुंचे. इलाहाबाद से कांग्रेस के टिकट पर लाल बहादुर शास्त्री जीते. सूरत से कांग्रेस के ही टिकट पर मोरारजी देसाई जीते थे. जनसंघ के नेता अटल बिहारी वाजपेयी के संसदीय जीवन की शुरुआत इसी आम चुनाव से हुई थी. उन्होंने उत्तर प्रदेश की तीन सीटों से एक साथ चुनाव लड़ा था. वह बलरामपुर संसदीय क्षेत्र से तो जीत गए थे, लेकिन लखनऊ और मथुरा में उन्हें हार का सामना करना पड़ा था. मथुरा में तो उनकी जमानत भी जब्त हो गई थी. लखनऊ से कांग्रेस के पुलिन बिहारी बनर्जी ने उन्हें हराया था, जबकि मथुरा से निर्दलीय उम्मीदवार राजा महेंद्र प्रताप की जीत हुई थी. 1957 में वीवी गिरि को एक निर्दलीय से हार का मुंह देखना पड़ा. उत्तर प्रदेश की चंदौली लोकसभा सीट से डॉ. लोहिया को कांग्रेस के त्रिभुवन नारायण सिंह ने हराया था. चंद्रशेखर ने भी पहला चुनाव 1957 में ही पीएसपी के टिकट पर लड़ा था, तब बलिया और गाजीपुर के कुछ हिस्से मिलाकर रसड़ा संसदीय सीट थी. चंद्रशेखर ने इसी सीट से चुनाव लड़ा था और तीसरे नंबर पर रहे थे.

- चुनाव आयोग के रिकॉर्ड के मुताबिक़ जिला किन्नौर (हिमाचल प्रदेश) निवासी 97 वर्षीय श्याम सरन नेगी सबसे वरिष्ठ मतदाता हैं. नेगी 1952 के चुनाव में सब से पहले वोट डालने वालों में से एक थे.
- इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन का उपयोग पहली बार केरल के परुर विधान सभा क्षेत्र के 50 पोलिंग बूथों पर 1982 में हुआ था.
- अटल बिहारी वाजपेयी पहले राजनेता हैं जिन्होंने 6 अलग-अलग निर्वाचन क्षत्रों से चुनाव जीता है. बलरामपुर - 1957, 1967, ग्वालियर- 1971, नई दिल्ली-1977, 1980, विदिशा-1991, गांधीनगर-1996, लखनऊ-1991, 1996, 1998.
- चार राज्यों, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, गुजरात और दिल्ली, से लोक सभा चुनाव जीतने वाले अटल बिहारी वाजपई पहले राजनेता हैं.
- 7 अप्रैल से शरू होकर 16 मई तक चलने वाले और 9 चरणो में संपन्न होने वाले ये लोक सभा चुनाव भारत में अब तक सब से लम्बी अवधि तक चलने वाले आम चुनाव हैं.
- भारतीय मतदाता आम चुनाव (लोक सभा) 2014 में पहली बार नोटा (इन में से कोई नहीं) विकल्प इस्तेमाल करेंगे.

### चौथी लोकसभा (1967)

1967 में पहली बार कांग्रेस ने निचले सदन में क़रीब 60 सीटें खो दीं, उसे केवल 283 सीटों पर जीत हासिल हुई. कांग्रेस को एक बड़ा झटका सहना पड़ा, क्योंकि बिहार, केरल, उड़ीसा, मद्रास, पंजाब एवं पश्चिम बंगाल में ग़ैर-कांग्रेस सरकारें बनीं. इंदिरा गांधी को 13 मार्च को प्रधानमंत्री के रूप में शपथ दिलाई गई. असंतुष्ट आवाज़ें शांत रखने के लिए उन्होंने मोरारजी देसाई को भारत का उप-प्रधानमंत्री एवं वित्त मंत्री नियुक्त किया.

### पांचवीं लोकसभा (1971)

1971 में इंदिरा गांधी ने ग़रीबी हटाओ के चुनावी नारे के साथ 352 सीटों पर जीत दर्ज की. भारत-पाकिस्तान युद्ध में आई बड़ी आर्थिक लागत, दुनिया में तेल की क़ीमतों में वृद्धि और औद्योगिक उत्पादन में गिरावट ने आर्थिक कठिनाइयां बढ़ा दी थीं. 12 जून, 1975 को इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने चुनावी भ्रष्टाचार के आधार पर इंदिरा गांधी के 1971 के चुनाव को अवैध ठहरा दिया. इस्तीफ़े की बजाय इंदिरा गांधी ने देश में आपातकाल की घोषणा की और पूरे विपक्ष को जेल में डाल दिया.

### छठवीं लोकसभा (1977)

कांग्रेस सरकार द्वारा आपातकाल की घोषणा 1977 के चुनाव में मुख्य मुद्दा थी. 23 जनवरी को इंदिरा गांधी ने मार्च में चुनाव कराने की घोषणा की और सभी राजनीतिक कैदियों को रिहा कर दिया. चार विपक्षी दलों-कांग्रेस (ओ), जनसंघ, भारतीय लोकदल और समाजवादी पार्टी ने जनता पार्टी के रूप में मिलकर चुनाव लड़ने का फ़ैसला किया. कांग्रेस को स्वतंत्र भारत में पहली बार चुनाव में हार का सामना करना पड़ा और जनता पार्टी के नेता मोरारजी देसाई ने 298 सीटें जीतीं. देसाई 24 मार्च को भारत के पहले ग़ैर-कांग्रेसी प्रधानमंत्री बने. लगभग 200 सीटों पर

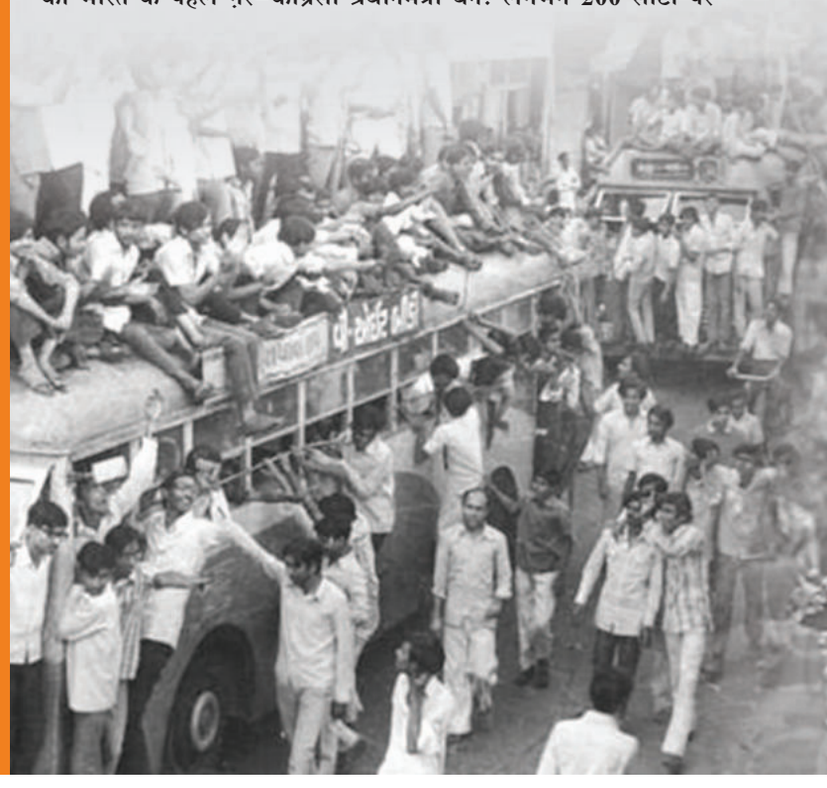

कांग्रेस की हार हुई. इंदिरा गांधी और उनके बेटे संजय गांधी भी चुनाव हार गए.

## सातवीं लोकसभा (1980)

चरण सिंह और जगजीवन राम प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई से खुश नहीं थे. जनता पार्टी 1979 में विभाजित हो गई. अटल बिहारी वाजपेयी और लालकृष्ण आडवाणी ने पार्टी छोड़ दी और बीजेएस ने सरकार से समर्थन वापस ले लिया. देसाई ने संसद में विश्वास मत खोने के बाद इस्तीफ़ा दे दिया. चरण सिंह ने प्रधानमंत्री के रूप में जून 1979 में शपथ ली. कांग्रेस ने समर्थन का वादा किया, लेकिन बाद में पीछे हट गई. जनवरी 1980 में चुनाव की घोषणा हुई. कांग्रेस ने लोकसभा में 351 सीटें जीतीं और जनता पार्टी या बचे हुए गठबंधन को 32 सीटें मिलीं.

## आठवीं लोकसभा (1984-89)

31 अक्टूबर, 1984 को प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की हत्या के बाद राजीव गांधी ने अंतरिम प्रधानमंत्री के रूप में शपथ ली. नवंबर 1984 में चुनाव की घोषणा कर दी गई. कांग्रेस ने भारी बहुमत से जीत हासिल की. उसने 409 लोकसभा सीटें और कुल मतों का 50 फ़ीसद अपने नाम किया. तेलुगुदेशम पार्टी 30 सीटों के साथ संसद में दूसरी सबसे बड़ी पार्टी बन गई. यह भारतीय संसद के इतिहास के उन दुर्लभ रिकॉर्डों में से एक है, जिसमें कोई क्षेत्रीय पार्टी मुख्य विपक्षी दल के रूप में उभरी.

## नौवीं लोकसभा (1989)

9वीं लोकसभा का चुनाव भारतीय चुनावी राजनीति में कई मायनों में ऐतिहासिक घटना रहा. इस चुनाव ने राजनेताओं के वोट मांगने का तरीका बदल लिया. उस वक्त जाति और धर्म के आधार पर वोट मांगना केंद्र बिंदु बन गया था. विश्वनाथ प्रताप सिंह राजीव गांधी के सबसे बड़े आलोचक थे. उन्हें शीघ्र ही मंत्रिमंडल से बर्खास्त कर दिया गया. उन्होंने अरुण नेहरू और आरिफ मोहम्मद खान के साथ जनमोर्चा का गठन किया. 11 अक्टूबर, 1988 को जनमोर्चा, जनता पार्टी, लोकदल और कांग्रेस (एस) के विलय से जनता दल की स्थापना हुई. द्रमुक, तेदेपा और अगप सहित कई क्षेत्रीय दल जनता दल से मिल गए और नेशनल फ्रंट की स्थापना की गई. 525 सीटों के लिए यह चुनाव 22 नवंबर एवं 26 नवंबर, 1989 को 2 चरणों में संपन्न हुआ. नेशनल फ्रंट के लिए लोकसभा में यह आसान बहुमत हासिल हुआ, राष्ट्रीय मोर्चे के सबसे बड़े घटक जनता दल ने 143 सीटें जीतीं और उसने वाममोर्चे और भारतीय जनता पार्टी के बाहरी समर्थन से सरकार बनाई. विश्वनाथ प्रताप सिंह भारत के 10वें प्रधानमंत्री बने और देवीलाल उप-प्रधानमंत्री. उन्होंने 2 दिसंबर, 1989 से 10 नवंबर, 1990 तक कार्यभार संभाला. लालकृष्ण आडवाणी द्वारा राम जन्मभूमि-बाबरी मस्जिद मुद्दे पर रथयात्रा शुरू करने और मुख्यमंत्री लालू यादव द्वारा बिहार में आडवाणी को गिरफ्तार किए जाने के बाद भाजपा ने वीपी सिंह सरकार से समर्थन वापस ले लिया. सिंह ने विश्वास मत हारने के बाद इस्तीफ़ा दे दिया. चंद्रशेखर 64 सांसदों के साथ जनता दल से अलग हो गए और उन्होंने समाजवादी जनता पार्टी बनाई. उन्हें बाहर से कांग्रेस का समर्थन मिला और वह भारत के 11वें प्रधानमंत्री बने. आख़िरकार उन्होंने भी 6 मार्च, 1991 को इस्तीफ़ा दे दिया, जब कांग्रेस ने आरोप लगाया कि सरकार राजीव गांधी की जासूसी करा रही है.

## दसवीं लोकसभा (1991)

10वीं लोकसभा का चुनाव मंडल आयोग की सिफारिशें लागू करने और राम जन्मभूमि-बाबरी मस्जिद विवाद के चलते मंडल-मंदिर चुनाव भी कहा जाता है. मतदान के पहले दौर के एक दिन बाद यानी 20 मई, 1991 को तमिल ईलम लिबरेशन टाइगर्स द्वारा श्रीपेरुंबुदूर (तमिलनाडु) में चुनाव प्रचार के दौरान पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की हत्या कर दी गई. इस चुनाव में महज 53 प्रतिशत मतदान हुआ. एक त्रिशंकु संसद बनी, जिसमें 232 सीटों के साथ कांग्रेस सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरी और 120 सीटों के साथ भाजपा दूसरे स्थान पर रही. जनता दल सिर्फ़ 59 सीटों के साथ तीसरे स्थान पर रहा. 21 जून को कांग्रेस के पीवी नरसिम्हाराव ने प्रधानमंत्री के रूप में शपथ ली.

## ग्यारहवीं लोकसभा (1996)

11वीं लोकसभा के लिए हुए चुनाव परिणामों से एक बार फिर त्रिशंकु संसद बनी और 2 वर्ष तक राजनीतिक अस्थिरता रही. इस दौरान देश के 3 प्रधानमंत्री बने. भाजपा को 161 सीटें और कांग्रेस को 140 सीटें मिलीं. अटल बिहारी वाजपेयी ने 16 मई को प्रधानमंत्री के रूप में पदभार संभाला, लेकिन 13 दिनों के बाद इस्तीफ़ा दे दिया. जनता दल के नेता देवेगौड़ा ने एक जून को संयुक्त मोर्चा गठबंधन सरकार बनाई, जो 18 महीने चली. इसके बाद देवेगौड़ा के विदेश मंत्री इंद्र कुमार गुजराल ने अप्रैल 1997 में प्रधानमंत्री के रूप में पदभार संभाला.

## बारहवीं लोकसभा (1998)

इस चुनाव ने भाजपा के नेतृत्व वाले गठबंधन को 265 सीटों का कार्यकारी बहुमत प्रदान किया. इस संदर्भ में 15 मार्च को राष्ट्रपति के आर नारायणन ने अटल बिहारी वाजपेयी को अगली सरकार बनाने के लिए आमंत्रित किया. 19 मार्च को वाजपेयी ने दूसरी बार प्रधानमंत्री के रूप में शपथ ली.

## तेरहवीं लोकसभा (1999)

17 अप्रैल, 1999 को वाजपेयी लोकसभा में विश्वास मत हार गए, फलस्वरूप उनकी गठबंधन सरकार ने इस्तीफ़ा दे दिया. पिछले चुनाव 1996 और 1998 में हुए थे, इसलिए 1999 के चुनाव 40 महीने में तीसरी बार हो रहे थे. 6 अक्टूबर को आए परिणामों में राजग को 298 सीटें मिलीं और कांग्रेस एवं उसके सहयोगियों को 136 सीटों पर विजय प्राप्त हुई. वाजपेयी ने 13 अक्टूबर को तीसरी बार देश के प्रधानमंत्री के रूप में शपथ ली.

## चौदहवीं लोकसभा (2004)

20 अप्रैल से 10 मई 2004 के बीच 4 चरणों में आम चुनाव हुए. कांग्रेस अपने सहयोगियों की मदद से 335 सदस्यों (बसपा, सपा, एमडीएमके और वाममोर्चा के बाहरी समर्थन सहित) का बहुमत प्राप्त करने में सफल रही. चुनाव के बाद हुए इस गठबंधन को संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (यूपीए) कहा गया. पूर्व वित्त मंत्री डॉ. मनमोहन सिंह देश के प्रधानमंत्री बने.

## पंद्रहवीं लोकसभा (2009)

मई 2009 में 15वीं लोकसभा के चुनाव परिणाम घोषित हुए और कांग्रेस के नेतृत्व वाले संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (यूपीए) ने लोकसभा का नेतृत्व करने का जनादेश हासिल किया. प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह को दोबारा देश का नेतृत्व करने का अवसर मिला. ■

*– चौथी दुनिया टीम*

## चुनावी कहानी, आंकड़ों की जुबानी

- 2009 के आम चुनाव में सुरक्षाकर्मी: 12 लाख
- रूस की सेना से ज़्यादा सुरक्षाकर्मी चुनाव में तैनात
- रूसी सेना में शामिल कुल सैनिकों की संख्या: 8.45 लाख
- 2009 में चुनाव आयोग के इस्तेमाल में लाई गई ट्रेनों की संख्या: 119
- 2009 में चुनाव आयोग के इस्तेमाल में लाए गए हेलिकॉप्टरों की संख्या: 55
- सर्वाधिक वोटरों वाला लोकसभा क्षेत्र: मलकाजगिरी (आंध्र प्रदेश), 29.53 लाख वोटर
- सबसे कम वोटरों वाला लोकसभा क्षेत्र: लक्षद्वीप, 47,972 वोटर
- भारतीय चुनाव आयोग से मान्यता प्रात राष्ट्रीय पार्टियों की संख्या: 06
- भारतीय चुनाव आयोग से मान्यता प्राप्त कुल प्रांतीय पार्टियों की संख्या: 45
- भारतीय चुनाव आयोग में पंजीकृत राजनीतिक पार्टियों की कुल संख्या: 702
- 1977 के चुनाव में सबसे कम महिला प्रत्याशी, 19 की जीत.
- 1952 में चुनाव का प्रति मतदाता खर्च: 0.60 पैसे
- 2004 में चुनाव का प्रति मतदाता खर्च: 17 रुपये
- 2009 में चुनाव का प्रति मतदाता खर्च: 12 रुपये

## राजीव, राजमोहन और मेनका

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के पौत्र 78 वर्षीय राजमोहन गांधी पूर्वी दिल्ली से आम आदमी पार्टी के टिकट पर चुनाव लड़ रहे हैं. इससे पहले पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी के खिलाफ राजमोहन गांधी जनता दल के टिकट पर 1989 में अमेठी से चुनाव लड़ चुके हैं, लेकिन राजमोहन गांधी को 1989 के लोकसभा चुनाव में राजीव गांधी से करारी हार मिली थी. उस चुनाव में राजीव गांधी को 2,71,407 और राजमोहन गांधी को 69,269 मत प्राप्त हुए थे. अमेठी लोकसभा सीट से नेहरू-गांधी परिवार की ही बहु मेनका गांधी ने राजीव गांधी के खिलाफ निर्दलीय चुनाव लड़ा था और वह हार गईं थीं. ■

## नेहरू बनाम लोहिया

फूलपुर संसदीय सीट हमेशा से चर्चा में रही है. यहां 1962 में आजादी की लड़ाई लड़ने वाले दो दोस्तों बीच कड़ी टक्कर हुई थी. वह दो दोस्त कोई और नहीं बल्कि जवाहर लाल नेहरू और डॉ. राम मनोहर लोहिया थे. लोहिया ने ही गैर-कांग्रेस वाद का सिद्धांत दिया और कांग्रेस की हर नीति का विरोध किया. लोहिया ने इसी कांग्रेस विरोध के चलते 1962 में जवाहर लाल नेहरू के खिलाफ इलाहाबाद के फूलपुर लोकसभा चुनाव लड़ा था, लेकिन उनको उस चुनाव में हार का सामना करना पड़ा. इसी कारण डॉ. लोहिया ने भारतीय जनसंघ का सहयोग लेने में भी संकोच नहीं किया. इस रणनीति के कारण 1967 के आम चुनाव के बाद उत्तर और पूर्वी भारत के कई राज्यों से कांग्रेस को सत्ता गंवानी पड़ी और डॉ. लोहिया ने राजनीति में सफलता हासिल की.

## इंदिरा बनाम राजनारायण

1971 में रायबरेली से इंदिरा गांधी के खिलाफ लोकबंधु राजनारायण ने चुनाव लड़ा था. इंदिरा गांधी जीत गईं लेकिन राजनारयण ने उन पर यह आरोप लगाया था कि चुनाव के दौरान सरकारी मशीनरी का दुरुपयोग किया गया. इंदिरा के खिलाफ इलाहाबाद उच्च न्यायालय में याचिका दायर की. इस मामले की सुनवाई करते हुए इलाहाबाद उच्च न्यायालय के जज जगमोहन सिन्हा ने 12 जून 1975 को इंदिरा गांधी के चुनाव को अवैध ठहरा दिया और उन्हें 6 साल तक पद से वंचित कर दिया. उसके बाद इंदिरा गांधी ने सुप्रीम कोर्ट से इस आदेश पर स्टे ले लिया. बाद में इंदिरा गांधी ने 25 जून 1975 को पूरे देश में इमरजेंसी लगा दी, जो 21 मार्च 1977 तक लागू रही और उस दौरान विपक्षी पार्टियों के नेताओं को जेल में डाल दिया गया. इमरजेंसी के बाद 1977 में हुए लोकसभा चुनाव में लोकबंधु राजनारायण ने इंदिरा गांधी के खिलाफ जनता पार्टी की ओर से चुनाव लड़ा और इंदिरा गांधी हार गईं. ■

पाटलिपुत्र से जदयू के रंजन यादव के ख़िलाफ़ रामकृपाल यादव हैं. मधेपुरा में शरद यादव के ख़िलाफ़ पप्पू यादव अखाड़े में हैं. जहानाबाद में जदयू के अनिल शर्मा के ख़िलाफ़ भाजपा गठबंधन के अरुण सिंह मैदान में हैं. दोनों भूमिहार जाति से हैं.

## नीतीश की सोशल इंजीनियरिंग की धार कुंद

# विरोधियों ने लोहे को लोहे से काटा

**नीतीश कुमार अभी तक जो सोशल इंजीनियरिंग कर रहे थे, उसमें यह ध्यान रख रहे थे कि ज़्यादातर सीटों पर उस जाति के उम्मीदवार उतारे जाएं, जिससे दूसरे दलों के उम्मीदवार आने की संभावना कम हो. इससे उन्हें सीधा लाभ यह मिल रहा था कि उस जाति के वोटों का ध्रुवीकरण जदयू के पक्ष में हो रहा था...**

बिहार

सरोज सिंह

सभी जानते हैं कि नीतीश कुमार सोशल इंजीनियरिंग के माहिर खिलाड़ी हैं. पिछले कई चुनावों में उन्होंने अपने इस हुनर का बखूबी इस्तेमाल करके अपने राजनीतिक विरोधियों को चारों खाने चित किया है, लेकिन लगता है, इस बार के चुनाव में नीतीश के विरोधियों ने उनकी सोशल इंजीनियरिंग की ताकत कम करने के लिए अपने सारे घोड़े खोल दिए. यह उन्हीं घोड़ों की चाल का नतीजा है कि बिहार की ज़्यादातर सीटों पर जदयू उम्मीदवार घिरे हुए नज़र आ रहे हैं. जो जातीय ताना-बाना जदयू के लिए वोटों का इंतजाम करता था, आज जदयू उम्मीदवार उसी जातीय ताने-बाने में उलझ कर रह गए हैं. उन्हें यह समझ में नहीं आ रहा है कि विरोधियों का जातीय चकव्यूह तोड़कर दिल्ली के लिए रास्ता कैसे साफ़ किया जाए.

सभी दलों ने जो टिकट बांटे हैं, अगर उनकी लिस्ट ग़ौर से देखी जाएं, तो यह समझना आसान हो जाएगा कि कैसे नीतीश कुमार की सोशल इंजीनियरिंग की धार दूसरे दल के नेताओं ने इस बार कुंद कर दी है. सासाराम सुरक्षित सीट से जदयू ने महादलित के पी रमैया को चुनाव मैदान में उतारा, तो कांग्रेस-राजद गठबंधन ने महादलित मीरा कुमार को सामने कर दिया. भाजपा ने यहां से दलित छेदी पासवान को मौक़ा दिया. साफ़ है कि महादलित वोटों पर जदयू का अपना दावा है. ऐसे में दो महादलित उम्मीदवार होने से यहां इस मत का बंटवारा होना तय है. इसी तरह काराकाट से जदयू ने कुशवाहा जाति के महाबली सिंह को उतारा है, तो भाजपा गठबंधन से उपेंद्र कुशवाहा मैदान में हैं यानी कुशवाहा वोटों में विभाजन तय है. नवादा से जदयू और राजद, दोनों के उम्मीदवार यादव जाति के हैं. जमुई से जदयू और राजद, दोनों के उम्मीदवार महादलित हैं.

दरअसल, नीतीश कुमार अभी तक जो सोशल इंजीनियरिंग कर रहे थे, उसमें यह ध्यान रख रहे थे कि ज़्यादातर सीटों पर उस जाति के उम्मीदवार उतारे जाएं, जिससे दूसरे दलों के उम्मीदवार आने की संभावना कम हो. इससे उन्हें सीधा लाभ यह मिल रहा था कि उस जाति के वोटों का ध्रुवीकरण जदयू के पक्ष में हो रहा था और इसके अलावा, गठबंधन के आधार वोटों का सीधा लाभ भी जदयू उम्मीदवार को मिल रहा था, लेकिन इस बार विरोधियों ने नीतीश कुमार की चालों को अच्छी तरह समझा और यथासंभव कोशिश की है कि एकल जाति का फ़ायदा नीतीश कुमार न उठा पाएं. जैसे कि नालंदा में ही नीतीश कुमार के कुर्मी उम्मीदवार कौशलेंद्र कुमार के मुकाबले में राजद गठबंधन से कुर्मी जाति के आशीष रंजन सिन्हा को उतारा गया है. मुंगेर से जदयू के भूमिहार उम्मीदवार ललन सिंह के ख़िलाफ़ लोजपा की उसी जाति की उम्मीदवार वीणा सिंह चुनाव मैदान में हैं.

पाटलिपुत्र से जदयू के रंजन यादव के ख़िलाफ़ रामकृपाल यादव हैं. मधेपुरा में शरद यादव के ख़िलाफ़ पप्पू यादव अखाड़े में हैं. जहानाबाद में जदयू के अनिल शर्मा के ख़िलाफ़ भाजपा गठबंधन के अरुण सिंह मैदान में हैं. दोनों भूमिहार जाति से हैं. इसी तरह सुपौल से जब जदयू ने अति पिछड़ा उम्मीदवार उतारा, तो भाजपा ने भी अति पिछड़े कामेश्वर चौपाल को उतार दिया. आरा में जदयू की मौजूदा सांसद मीना सिंह के ख़िलाफ़ राजपूत जाति के ही राजकुमार सिंह को भाजपा ने उतारा है. मधुबनी में जदयू के गुलाम गौस के ख़िलाफ़ राजद के अब्दुल बारी सिद्दीकी मुकाबले में हैं. इसी तरह खगड़िया में जदयू के दिनेश चंद्र यादव के मुकाबले राजद ने कृष्णा यादव को मैदान में उतारा है. दूसरे दलों की इसी चाल ने नीतीश कुमार की सोशल इंजीनियरिंग की धार कुंद कर दी है.

बिहार की ज़्यादातर सीटों पर कमोबेश यही हाल है. एक ही जाति के दो उम्मीदवार होने से वोटों का बंटवारा हो रहा है और जदयू को जो स्वाभाविक लाभ मिलता था, उससे वह वंचित हो रहा है. यही हाल जदयू के आधार वोटों का है. अब तक यह माना जा रहा है कि महादलित और अति पिछड़ा वर्ग जदयू के साथ है, लेकिन अगर टिकट बंटवारे में इन जातियों के उम्मीदवारों की संख्या पर ग़ौर किया जाए, तो यह अनुमान लगाना आसान हो जाएगा कि कैसे दूसरे दलों ने नीतीश कुमार को इस बार कोई साफ़ संदेश देने से रोकने का काम किया है. जैसे कि जदयू ने पांच महादलितों को अपना उम्मीदवार बनाया, तो राजद गठबंधन ने पांच महादलितों को टिकट दिया, वहीं भाजपा गठबंधन ने भी दो महादलित उम्मीदवार उतारे. इसी तरह अति पिछड़ों को टिकट देने में सभी दलों ने दरियादिली दिखाई है. जदयू ने जहां तीन अति पिछड़ों को उम्मीदवार बनाया है, तो भाजपा गठबंधन ने उसे पीछे छोड़ते हुए पांच अति पिछड़ों को टिकट थमा दिए. उधर राजद गठबंधन ने भी तीन अति पिछड़ों को चुनाव मैदान में उतारा है.

कहने का मतलब यह है कि नीतीश कुमार अब तक जिन महादलितों एवं अति पिछड़ों की बात करते थे, उन्हें उन्हीं की भाषा में भाजपा और राजद ने करारा जवाब दिया है. भाजपा नेता राकेश सिंह कहते हैं, बहुत पुरानी कहावत है कि लोहा ही लोहे को काटता है. नीतीश कुमार अब तक जिस सोशल इंजीनियरिंग की बात करते आ रहे थे, हमने उन्हें उन्हीं के स्टाइल में जवाब दे दिया है. अब लोगों को तय करना है कि उनका सच्चा हितैषी कौन है. राकेश कहते हैं कि जदयू ने अब तक केवल इन जातियों के वोट लेने का काम किया है, लेकिन इनके विकास को लेकर नीतीश कुमार कभी संजीदा नहीं रहे. उन्होंने इनका केवल वोट बैंक की तरह इस्तेमाल किया. अब इन जातियों ने भी सच जान लिया है और इस चुनाव में नीतीश इनके वोट के लिए तरस जाएंगे.■

feedback@chauthiduniya.com

## जाति बची, सारे मुद्दे गायब

जातीय राजनीति और चुनाव बिहार की सच्चाई रही है और आज भी यह सूबा इस सच्चाई से पार नहीं पा सका है. चुनाव प्रचार जोरों पर है, लेकिन विभिन्न लोकसभा क्षेत्रों में चौक- चौराहों पर जातीय गुणा-भाग की कहानी आसानी से सुनी जा सकती है. फलां जाति के वोट फलां पार्टी को, तो फलां जाति के वोट फलां पार्टी को. बस इसी जोड़-घटाव से गांव की चौपालें गुलजार हैं. न स्थानीय मुद्दों की चर्चा है और न राष्ट्रीय समस्याओं की. हां, एक बात जो हर लोकसभा क्षेत्र में आम है, वह है नमो-नमो. तमाम जातीय गणित के बीच नरेंद्र मोदी चर्चा में हैं और इसे न केवल भाजपा, बल्कि उसके विरोधी दल वाले भी मान रहे हैं.

आख़िर समस्याओं की बारी चुनावी चर्चा में क्यों नहीं आती? इस सवाल के जवाब में विधान पार्षद नवल यादव कहते हैं कि जाति एक सच्चाई है, उससे कौन इंकार कर सकता है? हम जिस जातीय व्यवस्था में जीते हैं, उसे चुनाव के वक्त कैसे छोड़ सकते हैं? यादव कहते हैं कि लोगों को जाति से आगे निकल कर जमात की ओर भी देखना चाहिए और देश के सामने जो समस्याएं हैं, उन्हें देखकर भी अपने वोट का इस्तेमाल करना चाहिए. लोजपा के प्रदेश अध्यक्ष पशुपति पारस कहते हैं कि बिहार में तो वोट और बेटी अपनी ही जाति में देने का रिवाज चलता आ रहा है, लेकिन लोजपा हमेशा जमात की बात करती है. पारस कहते हैं कि चुनावी राजनीति में जाति एक अहम भूमिका निभाती है, इसलिए चुनावी मौसम में जातीय राग कुछ ज़्यादा ही सुनाई पड़ता है, लेकिन लोजपा सभी जातियों एवं धर्मों का बराबर सम्मान करती है.■

उत्तराखंड

# कांग्रेस-भाजपा में कांटे का मुक़ाबला

राजकुमार शर्मा

देवभूमि उत्तराखंड की सभी पांच संसदीय सीटों पर कांग्रेस और भाजपा के बीच घमासान होना तय है. राज्य में चुनाव मैदान में उतरने वाले विभिन्न क्षेत्रीय दल वोटकटवा की हैसियत में नज़र आ रहे हैं. पिछली बार भाजपा की अंतर्कलह और राहुल गांधी के असर के चलते सभी पांच सीटों पर कांग्रेस ने कब्जा कर लिया था. उसके ठीक बाद हुए विधानसभा चुनाव में भी जनता ने भाजपा से अपना पल्ला झाड़ लिया. राज्य में कांग्रेस की सरकार बनी और कांग्रेस हाईकमान ने एक उद्योगपति घराने के दबाव में आकर अपने चुने गए विधायकों की भावना को नकार कर सांसद विजय बहुगुणा को राज्य की कमान सौंप दी.

राज्य में आई भीषण दैवीय आपदा में बहुगुणा सरकार ने जिस तरह उपेक्षात्मक रवैया अपनाया, उसके चलते जनता को खासी दिक्कतों का सामना करना पड़ा. सेना के जवानों ने आपदा में फंसी जनता का हाथ मजबूती से थामा. राज्य सरकार किसी भी प्रकार की मदद के मामले में फिसड्डी साबित हुई. देश-विदेश से अरबों रुपये की आर्थिक मदद मिली, लेकिन उसे भी जनता तक पहुंचाने में बहुगुणा सरकार असफल साबित हुई. लोगों का आरोप है कि मंत्रियों, नेताओं एवं अफसरों ने सहायता राशि की बंदरबांट कर ली. सहायता राशि प्रभावित जनता तक न पहुंचने का मामला जब कांग्रेस हाईकमान के समक्ष उठा, तो विजय बहुगुणा को हटाकर केंद्रीय मंत्री हरीश रावत को राज्य का मुख्यमंत्री बना दिया गया. चुनाव के पहले ही बहुगुणा की विदाई का जो निर्णय कांग्रेस ने लिया, वही आज उसके लिए आत्मघाती साबित हो रहा है. सतपाल महाराज ने इस कलह की गूंज में ही टिहरी सीट पर अपनी करारी हार का अनुमान लगाते हुए राजनाथ सिंह के माध्यम से भाजपा का दामन थाम लिया. नतीजा, कांग्रेस का पूरा दुर्ग ही दहल उठा.

भारतीय जनता पार्टी ने नरेंद्र मोदी को प्रधानमंत्री बनाने के लिए राज्य की पांचों सीटें जीतने के लक्ष्य के साथ अपने तीन पूर्व मुख्यमंत्रियों को उनकी उम्र और छवि का ख्याल किए बिना मैदान में उतार दिया है. पैड़ी से जनरल भुवन चंद्र खंडूरी, नैनीताल से भगत सिंह कोश्यारी एवं हरिद्वार से रमेश पोखरियाल निशंक को प्रत्याशी बनाया गया है. जनरल खंडूरी एवं कोश्यारी जहां अपनी बेदाग छवि के चलते जनता में हाथों हाथ लिए गए, वही निशंक को लोग शंका की नज़र से देख रहे हैं. कांग्रेस पर भ्रष्टाचार की कालिख उड़ेलने वाली भाजपा को महाकुंभ-2010 में निशंक सरकार के घोटाले के सवाल पर बगलें झांकने के सिवाय कुछ सूझ नहीं रहा है.

टिहरी सीट पर रानी राज्यलक्ष्मी को हरा पाना साकेत के वश की बात नहीं रह गई है, क्योंकि उनके पिता की बदनामी उन्हें कहीं का नहीं छोड़ रही है. गढ़वाल में सतपाल महाराज के रणछोड़ दास बनने के बाद जनरल की टक्कर का कोई प्रत्याशी कांग्रेसी खेमे में नहीं बचा था, बाद में हाईकमान की पहल पर नेता प्रतिपक्ष डॉ. हरक सिंह रावत मैदान में उतरे. गढ़वाल सीट का इतिहास काफी रोचक है. इसी सीट पर 1980 में कांग्रेस उम्मीदवार हेमवती नंदन बहुगुणा ने रिकॉर्ड 1,25,440 मतों की शानदार जीत हासिल की थी. इसी क्षेत्र से जनरल खंडूरी ने 1998, 1999 एवं 2004 में लगातार चुनाव जीतते हुए हैट्रिक कायम की थी.

देवभूमि की जनता की अपनी अलबेली पहचान है. कांग्रेस जहां अपने नेताओं की आपसी कलह से तंग है, वहीं भाजपा के नेता भी एकजुट नहीं दिखते. विकल्प की तलाश में जनता क्या फ़ैसला लेगी, यह कहना अभी मुश्किल है, लेकिन इतना सच है कि मुख्य मुकाबले में होने के बावजूद कांग्रेस की राह आसान नहीं है. यदि कांग्रेस के नेताओं ने समय रहते आपसी कलह का परित्याग न किया, तो पार्टी का हश्र वही हो सकता है, जो पिछले लोकसभा एवं विधानसभा चुनाव में भाजपा का हुआ था.■

feedback@chauthiduniya.com

एक जमाने में एक–दूसरे के पूरक रहे सूरज मंडल ने सबसे पहले शिबू सोरेन का साथ छोड़ा. अलग राज्य बनने के पूर्व जब झारखंड में जैक का गठन हुआ था, तो उसके अध्यक्ष शिबू सोरेन बने और सूरज मंडल उपाध्यक्ष बनाए गए. इसके अलावा, बिहार के लालू राज में दोनों ही नेता मुख्यमंत्री लालू प्रसाद के खास लोगों में शामिल थे.

## छत्तीसगढ़

# कांग्रेस और भाजपा में कांटे की जंग

रुपेश कुमार

क़रीब एक महीने तक बार–बार टिकट बदलने और लंबे ड्रामे के बाद आख़िरकार कांग्रेस ने अपना रायपुर का प्रत्याशी सत्य नारायण शर्मा को ही बनाया. इसी के साथ छत्तीसगढ़ में पूरी 11 सीटों पर कांग्रेस और भाजपा के उम्मीदवार फाइनल हो गए. अब सवाल है कि कौन कितनी सीटें जीतेगा. पिछले दो लोकसभा चुनाव से भाजपा यहां की 11 में से 10 सीटें जीतती आई है. मुख्यमंत्री रमन सिंह का दावा है कि इस बार सभी 11 सीटें जीतेंगे, लेकिन विधानसभा चुनाव में मात्र 0.73 प्रतिशत वोट से सत्ता बचाने वाले रमन सिंह को मालूम है कि 10 सीटें बचाना भी आसान नहीं है. दूसरी तरफ़ कांग्रेस के नेता दावा करते हैं कि कम से कम छह सीटें उनकी हैं. जानकारों के मुताबिक, भाजपा के लिए लोकल एंटी इनकम्बेंसी से बचकर फिर से 10 सीटें जीतना आसान नहीं है, वहीं गुटों में बिखरी कांग्रेस का भाजपा से ज़्यादा सीटें जीतना हकीकत से दूर दिखता है.

भाजपा के दावे का आधार विधानसभा चुनाव में तीसरी बार मिली कामयाबी है. विधानसभा चुनाव में रमन सिंह ने पूरी कमान अपने हाथों में ले ली थी. चुनाव में जीत की हैट्रिक लगाकर रमन ने 11 अशोक रोड तक यह संदेश दे दिया कि विधानसभा में मिली जीत उनकी अपनी छवि का नतीजा है. अब छत्तीसगढ़ में रमन पार्टी से बड़े हो चुके हैं. भाजपा के फ़ैसलों में इसका साफ़ असर दिखता है. पार्टी में वह अपने तमाम विरोधियों को किनारे कर चुके हैं. विधानसभा चुनाव में ही उन्होंने करुणा शुक्ला को टिकट और प्रचार में जगह न

**भाजपा के दावे का आधार विधानसभा चुनाव में तीसरी बार मिली कामयाबी है. विधानसभा चुनाव में रमन सिंह ने पूरी कमान अपने हाथों में ले ली थी. चुनाव में जीत की हैट्रिक लगाकर रमन ने 11 अशोक रोड तक यह संदेश दे दिया कि विधानसभा में मिली जीत उनकी अपनी छवि का नतीजा है. अब छत्तीसगढ़ में रमन पार्टी से बड़े हो चुके हैं. भाजपा के फ़ैसलों में इसका साफ़ असर दिखता है. पार्टी में वह अपने तमाम विरोधियों को किनारे कर चुके हैं.**

देकर बाहर का रास्ता दिखा दिया. नंद कुमार साय अलग– थलग पड़े हैं. चुनाव के बाद उन्होंने नई सरकार में बृजमोहन के सभी अहम मंत्रालय छीनकर अपने चहेते राजेश मूणत को थमा दिए हैं. भाजपा में सबसे चतुर खिलाड़ी समझे जाने वाले बृजमोहन अभी किनारे लगा दिए गए हैं. बृजमोहन प्रबंधन कौशल के लिए जाने जाते हैं. विधानसभा चुनाव में उनके पास महासमुंद ज़िले का प्रभार था, जहां उन्होंने एक भी सीट कांग्रेस को जीतने नहीं दी, पर बृजमोहन की कामयाबी रमन की हैट्रिक के आगे फीकी पड़ गई.

रमेश बैस और सरोज पांडेय का राजनीतिक भविष्य लोकसभा चुनाव में जीत पर निर्भर करेगा. पार्टी में रमन सिंह की किस कदर तूती बोल रही है, इसका अंदाज़ा राजनांदगांव की सीट है, जहां से उन्होंने सवा लाख से ज़्यादा वोटों से जीतने वाले मधुसूदन यादव का टिकट काटकर अपने बेटे अभिषेक सिंह को दिलवा दिया. रमन को खुद पर पूरा भरोसा है. पार्टी में कोई नेता बचा नहीं है, जो अंदरखाने रमन के लिए चुनौती बन सके. इसलिए भाजपा यह चुनाव एकजुटता के साथ बिना किसी घात–प्रतिघात के लड़ने जा रही है. बेहतर प्रबंधन और अनुशासन भाजपा के पक्ष में है. वह यह चुनाव मोदी के नाम और रमन के काम के सहारे लड़ रही है. जो बात भाजपा नेताओं के ख़िलाफ़ दिखती है, वह है प्रत्याशी. भाजपा ने 2 सांसदों के टिकट काटे हैं. दो सांसदों का निधन होने की वजह से पार्टी को नए प्रत्याशी उतारने पड़े हैं. बाकी 6 मौजूदा सांसद ही हैं. भाजपाई सांसदों के खाते में ऐसी कोई उपलब्धि नहीं है, जिसे वे जनता के बीच बता सकें. ज़्यादातर सांसद ऐसे हैं, जो चुनाव में ही दिखते हैं. संसद में भी कोई

छत्तीसगढ़िया सांसद अपनी पहचान नहीं बना पाया. अभिषेक को छोड़कर जिन लोगों को मौक़ा मिला है, उनमें कोई नामचीन नहीं है. सबको मोदी और रमन का ही सहारा है. ऐसे हालात में भाजपा अपना पुराना प्रदर्शन दोहरा पाएगी, इसकी संभावना कम ही दिखती है.

कांग्रेस के लिहाज़ से देखें, तो छत्तीसगढ़ उसके उन राज्यों की सूची में है, जहां कांग्रेस बढ़त हासिल करेगी. इसकी सबसे बड़ी वजह यह है कि पिछले दो चुनावों में कांग्रेस 11 में से सिर्फ़ एक सीट ही जीत सकी. लिहाज़ा उसके पास खोने के लिए कुछ नहीं है. दूसरी बड़ी वजह यह है कि कांग्रेस चार महीने पहले हुए विधानसभा चुनाव में केवल छत्तीसगढ़ में ही टक्कर दे पाई थी. दो–ध्रुवीय राजनीति के केंद्र छत्तीसगढ़ में कांग्रेस महज़ पौन फ़ीसद वोटों और 5 सीटों के अंतर से सत्ता में आते–आते रह गई. विधानसभा चुनाव में कांग्रेस ने 5 लोकसभा सीटों पर बढ़त हासिल की थी. एक और बड़ी वजह है कि छत्तीसगढ़ में स्थानीय जनप्रतिनिधियों के ख़िलाफ़ खूब आक्रोश था. जनता ने दोनों पार्टियों के 50 से ज़्यादा विधायकों को सड़क पर ला खड़ा किया था. अगर यही ट्रेंड लोकसभा में सांसदों के ख़िलाफ़ रहा, तो कांग्रेस की बल्ले–बल्ले हो सकती है.

भाजपा ने रमेश बैस और एक हद तक विष्णुदेव साय को छोड़कर प्रदेश स्तर पर पहचान रखने वाले किसी नेता को नहीं उतारा है, जबकि कांग्रेस ने अपने सभी बड़े नेताओं को टिकट थमा दिए हैं, जैसे कोरबा से केंद्रीय मंत्री चरणदास महंत, महासमुंद से पूर्व मुख्यमंत्री अजीत जोगी, बिलासपुर से करुणा शुक्ला एवं रायपुर से पूर्व प्रदेश अध्यक्ष सत्य नारायण शर्मा. लेकिन, इन्हीं दिग्गजों की आपसी टकराहट कांग्रेस की सबसे बड़ी कमजोरी है. प्रदेश अध्यक्ष भूपेश बघेल पिछले दस सालों से जोगी की ब्लैक लिस्ट में हैं. पार्टी में भूपेश बघेल जोगी के सबसे बड़े विरोधी माने जाते रहे हैं. माना जाता है कि जोगी के अधूरे संन्यास की वजह भूपेश बघेल को प्रदेश अध्यक्ष बनाया जाना था. रायपुर सीट से पहली बार सत्य नारायण शर्मा का टिकट कटा, तो शर्मा समर्थकों ने भूपेश को इसका ज़िम्मेदार ठहराते हुए कांग्रेस मुख्यालय में कुर्सियां तोड़ी थीं. हालांकि बाद में टिकट सत्य नारायण शर्मा को मिला. रायगढ़, जांजगीर–चाम्पा बिलासपुर और राजनांदगांव में टिकट वितरण से उपजा विरोध थमा नहीं है.

कई कांग्रेस नेताओं ने भाजपा का दामन थाम लिया है. इस हालत में कांग्रेस छत्तीसगढ़ में कितनी सीटें निकाल पाएगी, यह बड़ा रोचक सवाल है. इस चुनावी रण में आम आदमी पार्टी भी है, छत्तीसगढ़ स्वाभिमान मंच भी है, लेकिन जानकार उन्हें मुख्य लड़ाई का हिस्सा नहीं मानते. बस्तर से सोनी सोरी ज़रूर अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही हैं, लेकिन अभी उनके बारे में आकलन करना मुश्किल है. जिस राज्य में आज भी जनता नेता नहीं, बल्कि फूल छाप और हाथ पहचानती है, वहां मोदी और केजरीवाल इफेक्ट के असरदार रहने की संभावना कम है. शहरी इलाकों में इसका कुछ असर हो सकता है, लेकिन वह निर्णायक होगा, इसकी संभावना कम है.■

feedback@chauthiduniya.com

## झारखंड

# अपनों के बीच बेगाने हुए शिबू

मंगलानंद मिश्र

सूबे में दिशोम गुरु के नाम से विख्यात झारखंड आंदोलन के प्रणेता शिबू सोरेन अपनों के बीच ही बेगाने हो गए हैं. अपने मूर्धन्य सहयोगियों से अलग होकर चुनाव मैदान में उतरे शिबू सोरेन को पूरा भरोसा है कि क्षेत्र की जनता उनके साथ अन्याय नहीं होने देगी. जिस राज्य के गठन को लेकर वह अपना खून–पसीना बहाते आए हैं, वहां की जनता उनके साथ नहीं होगी, ऐसा सोरेन सोचते भी नहीं होंगे. उम्र के जिस पड़ाव पर शिबू सोरेन अपने क्षेत्र की सेवा का जज्बा लिए चुनाव मैदान में उतरे हैं, उससे यह साफ़ है कि शिबू सोरेन अपनी राजनीतिक जमीन ताउम्र खोना नहीं चाहते. हाल के दिनों में झामुमो के मजबूत स्तंभों में से एक हेमलाल मुर्मू के पार्टी छोड़ने के बाद अब साइमन मरांडी के बगावती तेवर ने शिबू को अपनों से बिल्कुल दूर कर दिया है. 2014 के लोकसभा चुनाव के पूर्व टिकट को लेकर विवाद में हेमलाल मुर्मू ने पार्टी छोड़ दी थी. फिलहाल वह राजमहल सीट से भाजपा के टिकट पर झामुमो प्रत्याशी विजय हासंदा को चुनौती दे रहे हैं. कुछ वर्ष पूर्व संथाल में शिबू सोरेन के नज़दीकी माने जाने वाले स्टीफन मरांडी ने भी टिकट के मसले पर मतभेद के बाद झामुमो त्याग दिया था.

अब राजमहल सीट से अपने पुत्र को टिकट न मिलने से साइमन मरांडी भी खफा बताए जा

**शिबू सोरेन अपने क्षेत्र की सेवा का जज्बा लिए चुनाव मैदान में उतरे हैं, उससे यह साफ़ है कि शिबू सोरेन अपनी राजनीतिक जमीन ताउम्र खोना नहीं चाहते. हाल के दिनों में झामुमो के मजबूत स्तंभों में से एक हेमलाल मुर्मू के पार्टी छोड़ने के बाद अब साइमन मरांडी के बगावती तेवर ने शिबू को अपनों से बिल्कुल दूर कर दिया है. 2014 के लोकसभा चुनाव के पूर्व टिकट को लेकर विवाद में हेमलाल मुर्मू ने पार्टी छोड़ दी थी. फिलहाल वह राजमहल सीट से भाजपा के टिकट पर झामुमो प्रत्याशी विजय हासंदा को चुनौती दे रहे हैं.**

रहे हैं. नाराज़ साइमन ने चुनाव प्रचार से स्वयं को अलग कर लिया है और घर पर बैठ गए हैं. उनका कहना है कि यदि झामुमो प्रत्याशी हार जाते हैं, तो उसकी ज़िम्मेवारी मेरे मत्थे मढ़ी जा सकती है और यदि जीत गए, तो उसका श्रेय भी मुझे नहीं मिलने वाला. ऐसी संभावना व्यक्त की जा रही है कि लोकसभा चुनाव के बाद साइमन अपना राजनीतिक रिश्ता किसी और दल से जोड़ सकते हैं. यह कोई अकेला उदाहरण नहीं है. इससे पूर्व भी संथाल में झामुमो को कई सदमों का सामना करना पड़ा है. झामुमो प्रमुख एवं राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री शिबू सोरेन संथाल परगना में एक से बढ़कर एक झटका खाने के बाद अब अकेले दम पर अपना गढ़ बचाने में जुटे नज़र आ रहे हैं. संथाल परगना दशकों तक झामुमो का गढ़ बना रहा, लेकिन अब यह गढ़ कमजोर होता दिख रहा है, क्योंकि किसी समय शिबू सोरेन के सहयोगी रहे लोग एक के बाद एक उनका साथ छोड़ते जा रहे हैं. ऐसी स्थिति में अपना गढ़ बचाए रखना उनके लिए चुनौती बन गया है.

एक जमाने में एक–दूसरे के पूरक रहे सूरज मंडल ने सबसे पहले शिबू सोरेन का साथ छोड़ा. अलग राज्य बनने के पूर्व जब झारखंड में जैक का गठन हुआ था, तो उसके अध्यक्ष शिबू सोरेन बने और सूरज मंडल उपाध्यक्ष बनाए गए. इसके अलावा, बिहार के लालू राज में दोनों ही नेता मुख्यमंत्री लालू प्रसाद के खास लोगों में शामिल थे. बाद में शिबू सोरेन के पुत्र दुर्गा सोरेन से न पटने के कारण सूरज मंडल ने न केवल पार्टी छोड़ी, बल्कि अपनी अलग पार्टी बना ली थी. झारखंड मुक्ति मोर्चा के नेताओं और रणनीतिकारों की रणनीति ऐसी बन रही है कि कोई भी तीर सही निशाने पर नहीं लग पा रहा है. अब शिबू सोरेन और उनके मुख्यमंत्री पुत्र हेमंत सोरेन के लिए यह सीट प्रतिष्ठा का सवाल बन गई है. पूरे संथाल में झारखंड मुक्ति मोर्चा आधार वाली पार्टी मानी जाती है. आने वाले दिनों में देखना यह है कि झामुमो की प्रतिष्ठा बच पाती है या नहीं? ■

feedback@chauthiduniya.com

www.chauthiduniya.com
चौथी दुनिया





कमल मोरारका

# आप इस देश को कैसे चलाएंगे?

भाजपा मुद्रास्फीति नियंत्रित करने के लिए क्या करेगी? मुद्रास्फीति बहुत है, भाजपा अपने हर विज्ञापन में इसकी बात कर रही है, इसे कम करने का वादा कर रही है. अब सवाल यह है कि आप इसके लिए करेंगे क्या? क्या मांग में वृद्धि के कारण मुद्रास्फीति है या आपूर्ति कम होना या फिर जमाखोरी इसकी बड़ी वजह है? मुद्रास्फीति एक ऐसा मुद्दा है, जिसका समाधान निकालने की ज़रूरत है. भाजपा को तुरंत पांच अर्थशास्त्रियों के एक पैनल की घोषणा करनी चाहिए, जो अपना दिमाग लगाकर एक खाका दें और बताएं कि कैसे वे मुद्रास्फीति नियंत्रित करना चाहते हैं.

चुनाव अभियान जोरों पर है. अधिकांश निर्वाचन क्षेत्रों में चुनाव हो चुके हैं और हम अपना वोट डाल चुके हैं. अगर लोगों की बात और विभिन्न मीडिया द्वारा की जा रही भविष्यवाणी को सच मान लिया जाए, तो भारतीय जनता पार्टी या उसके नेतृत्व में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन दो, तीन या चार सहयोगियों के साथ एक गठबंधन सरकार बना सकता है. ठीक है, हम पिछले 20 वर्षों से गठबंधन सरकारें देख रहे हैं. एक और सही. चिंताजनक मुद्दा इस सबसे अलग है. आप भ्रष्टाचार, क़ानून-व्यवस्था या कांग्रेस की विफलता की बात कर रहे हैं, ठीक है. शायद एक नई सरकार तुरंत शासन को पटरी पर ला सके, ताकि चीजें सही जगह पर आ जाएं.

लेकिन, कई ऐसे मुद्दे हैं, जो इससे बड़े हैं और सरकार के हाथ में नहीं हैं. सबसे पहले मुद्रास्फीति की बात. मुद्रास्फीति के लिए कांग्रेस की आलोचना ठीक है, लेकिन किसी को भी यह जानने की कोशिश करनी चाहिए कि मुद्रास्फीति के कारण क्या हैं? भाजपा मुद्रास्फीति नियंत्रित करने के लिए क्या करेगी? मुद्रास्फीति बहुत है, भाजपा अपने हर विज्ञापन में इसकी बात कर रही है, इसे कम करने का वादा कर रही है. अब सवाल यह है कि आप इसके लिए करेंगे क्या? क्या मांग में वृद्धि के कारण मुद्रास्फीति है या आपूर्ति कम होना या फिर जमाखोरी इसकी बड़ी वजह है? क्या कारण है? इसकी एक बड़ी वजह है जमाखोरी और ज़्यादा से ज़्यादा ऐसे ही लोग भाजपा का समर्थन करते हैं. तब तो भाजपा कुछ भी करने में सक्षम नहीं होगी. मुद्रास्फीति एक ऐसा मुद्दा है, जिसका समाधान निकालने की ज़रूरत है. भाजपा को तुरंत पांच अर्थशास्त्रियों के एक पैनल की घोषणा करनी चाहिए, जो अपना दिमाग लगाकर एक खाका दें और बताएं कि कैसे वे मुद्रास्फीति नियंत्रित करना चाहते हैं.

इसी तरह सुरक्षा की चिंता और विदेश नीति का सवाल है. भाजपा के घोषणापत्र में, जो बहुत देर से आया, यह नहीं बताया गया है कि वह कैसे इन मुद्दों पर कुछ अलग करेगी. आज़ादी के बाद से, देश में सरकार के बदलाव से भी विदेश नीति कभी नहीं बदली. मोरारजी सरकार में भी विदेश नीति में परिवर्तन नहीं किया गया. देवेगौड़ा और गुजराल सरकार आई, तो भी विदेश नीति में परिवर्तन नहीं किया गया. मामूली परिवर्तन हुए, लेकिन बुनियादी परिवर्तन नहीं हुए. यहां भाजपा कहती है कि पाकिस्तान के साथ हमारे संबंध खराब हैं. कांग्रेस की आलोचना करते हुए वह कहती है कि हम अमेरिका के आगे नहीं झुकेंगे, लेकिन यह नहीं बता रही है कि आख़िर वह इस सबके लिए करेगी क्या? मुझे लगता है कि विकल्प सीमित हैं. अब यह उसे पता है या नहीं, मुझे नहीं मालूम. अमेरिका भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार है. आप इस संबंध में क्या करने जा रहे हैं? क्या आप उसके साथ व्यापार बंद करेंगे या कम कर देंगे?

चीन हमारे यहां अपने माल की डंपिंग कर रहा है. आपकी विदेशी मुद्रा चीन जा रही है. नरेंद्र मोदी चीन के फैन हैं. तो आप क्या करने जा रहे हैं? हम साल दर साल चालू खाता घाटा देख रहे हैं. उधर आप बोल रहे हैं कि एक डॉलर पचास या चालीस रुपये तक आ जाएगा. क्या आप विदेशी मुद्रा चीन को लीक करने की अनुमति देंगे? क्या खुदरा और अन्य जगहों पर अमेरिका से विदेशी निवेश होगा? खुदरा क्षेत्र में एफडीआई का बेशक वे सार्वजनिक रूप से खंडन करते हैं, लेकिन एफडीआई के मुक्त प्रवाह को स्वीकारने की बात भी कर रहे हैं. तो, हमारी अर्थव्यवस्था में अधिक से अधिक अमेरिकी पैसा आएगा और अनावश्यक आयात से अधिक से अधिक नुकसान. मैं नहीं जानता कि लोग कैसे इन चीजों को देखते-समझते हैं. हम सात अरब डॉलर का आयात कर रहे हैं. क़रीब 48 बिलियन डॉलर का हम सिर्फ़ सेल फोन जैसे इलेक्ट्रॉनिक सामान का आयात कर रहे हैं. क्या हम भारत में सेल फोन नहीं बना सकते? हम डॉलर में भुगतान करते हैं. सेल फोन के लिए हमें चीन की ज़रूरत है. कोई भी इसका समाधान नहीं देता.

कांग्रेस दस सालों से सत्ता में रहते हुए इसी नीति पर चलती रही, लेकिन अगर भाजपा सत्ता में आने की बात कर रही है, तो उसे जनता को आश्वस्त करना चाहिए कि वह कैसे कांग्रेस से अलग इन मुद्दों पर काम करेगी. नरेंद्र मोदी को पहली बात यह कहनी चाहिए कि वह चीन से अनावश्यक आयात रोकने जा रहे हैं, लेकिन ऐसा नहीं है. नरेंद्र मोदी एक साल में तीन बार चीन की यात्रा करना पसंद करते हैं, उन्हें चीन से प्यार है. इसी तरह हमारे पड़ोसियों के साथ हमारी नीति क्या होने वाली है? धमकी और अंध-राष्ट्रीयता तो ठीक है, लेकिन पाकिस्तान एक परमाणु शक्ति संपन्न राष्ट्र है और भारत भी एक परमाणु शक्ति संपन्न देश है. तो, युद्ध विकल्प की संभावना बिल्कुल भी नहीं है. यह बात पाकिस्तान बहुत अच्छी तरह से जानता है और हम भी. लेकिन, जम्मू में कुछ भाषणों में, बहुत आश्चर्य की बात है, नरेंद्र मोदी ने कहा कि पाकिस्तान हमारे लिए एक ख़तरा है. कैसे? यहां तक कि पाकिस्तान को नहीं लगता कि वह हमारे लिए एक ख़तरा है. भारत में भी कोई नहीं सोचता कि पाकिस्तान हमारे लिए ख़तरा है.



मोदी ने ए के एंटनी, एके-47, एके-49 जैसी बातें कहीं. केजरीवाल को इतना और ऐसा महत्व दिया, मानों वह राष्ट्रीय सुरक्षा के मुद्दे से जुड़े हों. मैं नहीं जानता कि कैसे? केजरीवाल अंतरराष्ट्रीय मुद्दों के बारे में बात नहीं कर रहे हैं. उन्होंने दिल्ली में एक चुनाव जीता. वह भ्रष्टाचार न होने की बात कर रहे हैं, पुलिस ठीक से व्यवहार करे इसकी बात कर रहे हैं. इससे हर कोई सहमत हो सकता है. मैं यह कह रहा हूं कि अगर भाजपा सत्ता में आती है, तो हम किधर जाएंगे?

हम साल दर साल चालू खाता घाटा देख रहे हैं. उधर आप बोल रहे हैं कि एक डॉलर पचास या चालीस रुपये तक आ जाएगा. क्या आप विदेशी मुद्रा चीन को लीक करने की अनुमति देंगे? क्या खुदरा और अन्य जगहों पर अमेरिका से विदेशी निवेश होगा? हम सात अरब डॉलर का आयात कर रहे हैं. क़रीब 48 बिलियन डॉलर का हम सिर्फ़ सेल फोन जैसे इलेक्ट्रॉनिक सामान का आयात कर रहे हैं. क्या हम भारत में सेल फोन नहीं बना सकते? हम डॉलर में भुगतान करते हैं. सेल फोन के लिए हमें चीन की ज़रूरत है. कोई भी इसका समाधान नहीं देता.

आरएसएस बिल्कुल अपनी शाखाओं में वृद्धि करेगा, अगर यही लक्ष्य है, तो ऐसा होगा. उनकी 57 हज़ार शाखाओं की संख्या घटकर 40 हज़ार तक आ गई है, इसे फिर से बढ़ाया जाएगा. मोरारजी भाई के जनता शासन में ऐसा हुआ था. देश का क्या होगा? देश एक बहुत महत्वपूर्ण मोड़ की ओर अग्रसर है. देश में बड़ी आबादी युवाओं की है, क्या उन्हें काम मिलेगा? चुनाव के उद्देश्य से यह कहना कि वृद्धि 4 फ़ीसद, 5 फ़ीसद तक नीचे आ गई है, सही है, लेकिन जो लोग विश्व अर्थव्यवस्था को जानते हैं, उनके मुताबिक यह बहुत अच्छी वृद्धि दर है. चिदंबरम मुद्रास्फीति और दस सालों के शासन की वजह से मुसीबत में रहे, लेकिन मुझे लगता है कि उन्होंने एक वित्त मंत्री के रूप में बहुत अच्छी तरह से काम किया. मैं नहीं जानता कि श्री मोदी के वित्त मंत्री इससे बेहतर क्या कर सकते हैं?

विश्व अर्थव्यवस्था यूरो जोन में, अमेरिका में मुसीबत में है. भारत इसकी तुलना में ज़्यादा बेहतर स्थिति में है. असल समस्या कुछ और है, जिसे नरेंद्र मोदी सामने नहीं ला रहे हैं और उसका समाधान नहीं बता रहे हैं. वह है, बैंकों का बढ़ता हुआ एनपीए (बैड लोन, जो वापस नहीं होता). निर्माण उद्योग और बिजली उद्योग बैंकों से मोटा ऋण ले लेते हैं, वे अपनी परियोजनाओं को पूरा नहीं करते और इस तरह न ब्याज चुकाते हैं और न ही लोन. इनमें से ज़्यादातर भाजपा के साथ हैं. ये भाजपा का साथ देते हैं. यही लोग हैं, जिन्होंने सबसे पहले भाजपा को अपना समर्थन देने की बात कही थी. इसका अर्थ है, ये कहेंगे कि हम आपका समर्थन करते हैं और हम ऋण वापस नहीं करेंगे. मतलब यह कि एक दिन उनका ऋण ख़त्म कर दिया जाएगा. असल समस्या काफी अलग है और इस समस्या का जितना सामना श्री चिदंबरम ने किया, उतना ही सामना श्री मोदी के वित्त मंत्री को भी करना होगा. मेरे हिसाब से, इन मुद्दों पर बात करने और इनका समाधान निकालने का वक्त आ गया है. 16 मई को हम सब परिणाम से वाकिफ हो जाएंगे, लेकिन मुझे लगता है कि एक आदमी, जो गंभीरता से प्रधानमंत्री बनने की दौड़ में है और इस देश को चलाना चाहता है, उसे इस देश को चलाने के तौर-तरीके का एक ब्लूप्रिंट देश की जनता के समक्ष रखना चाहिए और यह बताना चाहिए कि उसे आख़िर क्यों इस देश की जनता का जनादेश मिलना चाहिए.■

feedback@chauthiduniya.com

## पाठकों की दुनिया

### सबके निशाने पर मोदी

राजनीतिक परिदृश्य को देखा जाए, तो हर तरफ़ मोदी की चर्चा सुनाई देती है. एनडीए में शामिल पार्टियों में उत्साह देखते ही बनता है, लेकिन क्या नरेंद्र मोदी के पक्ष में चल रही यह हवा वोटों में परिवर्तित हो पाएगी? यदि ऐसा हुआ, तो नरेंद्र मोदी की अगुवाई में चुनाव लड़ रही भाजपा को पिछली बार से अधिक सीटें मिल सकती हैं. नरेंद्र मोदी विरोधी पार्टियों के निशाने पर हैं और मोदी के ख़िलाफ़ अभद्र भाषा का प्रयोग कर रहे हैं. ख़ैर, 16 मई को मतगणना के बाद सबको पता चल पाएगा कि कौन बाजी मारता है, मोदी या कोई और.

-अक्षय यादव, *वाराणसी, उत्तर प्रदेश.*

### आधार कार्ड के बहाने धोखा

मनीष कुमार का आलेख-आधार कार्ड एक विशिष्ट घोटाला (7-13 अप्रैल) बताता है कि आधार कार्ड के बहाने किस प्रकार हमारी तमाम जानकारियां सार्वजनिक की जा रही हैं. आधार कार्ड के जन्मदाता नंदन नीलेकणी ने सरकार के साथ मिलकर देश के लोगों के साथ धोखा किया है. सुप्रीम कोर्ट ने भी संज्ञान लेते हुए आधार कार्ड की अनिवार्यता ख़त्म कर दी है और सरकार से कहा कि लोगों की जानकारियां किसी भी हालत में साझा नहीं की जानी चाहिए. नंदन नीलेकणी इस बार कांग्रेस के टिकट पर लोकसभा चुनाव भी लड़ रहे हैं. इस घोटाले की उच्चस्तरीय जांच होनी चाहिए.

-कुलदीप मौर्य, *झांसी, उत्तर प्रदेश.*

### झूठ का पुलिंदा

आलेख-वादे हैं वादों का क्या (7-13 अप्रैल) पढ़ा. शशि शेखर ने सच कहा कि चुनाव के पहले सभी राजनीतिक पार्टियां अपना घोषणापत्र जारी तो करती हैं, लेकिन उस पर अमल नहीं करतीं. कांग्रेस ने भी यही किया. उसने 2004 के आम चुनाव से पहले जो वादे जनता से किए थे, उन्हें पूरा नहीं किया. कांग्रेस की अगुवाई वाली केंद्र सरकार ने पिछले 10 सालों में केवल घोटालों का रिकॉर्ड बनाया है. जनता को अब वादा नहीं, काम चाहिए. जो काम करेगा, वहीं चुनाव भी जीतेगा.

नेहा सिंह, *ग्वालियर, मध्य प्रदेश.*

### तीसरा मोर्चा एक दिखावा

आलेख-तीसरे मोर्चे की सरकार की संभावना बहुत कम (7-13 अप्रैल) में ए यू आसिफ ने सही कहा है कि तीसरे मोर्चे में जो पार्टियां शामिल हैं, उनकी स्थिति अपने-अपने राज्यों में ही खराब है. वाममोर्चा की स्थिति पश्चिम बंगाल, केरल एवं पूर्वोतर में अच्छी नहीं है, जदयू की हालत बिहार में अच्छी नहीं है, समाजवादी पार्टी भी उत्तर प्रदेश में अब पहले जैसी स्थिति में नहीं है. सबसे बड़ी बात यह है कि तीसरे मोर्चे में पीएम पद के कई दावेदार हैं. तीसरा मोर्चा अगर चुनाव में कोई कामयाबी हासिल करता है, तब भी उसकी सरकार बनना मुश्किल नज़र आता है.

-दीपक कुमार, *कानपुर, उत्तर प्रदेश.*

### विदेशी ताकतों से सावधानी ज़रूरी

डॉ. कमर तबरेज के विचार और चिंता देश-प्रदेश की सरकारों के लिए एक खुली चेतावनी है. वास्तव में बाहरी ताकतों के हस्तक्षेप पर रोक लगाकर ही भारतीय लोकतंत्र को सुरक्षित रखा जा सकता है. डॉ. तबरेज बधाई के पात्र हैं. वह सही कहते हैं कि जब सत्ताधारी राजनीतिक दल एवं उनके कद्दावर नेता ही महज मुस्लिम वोटों के लालच में बाहरी ताकतों की गोद में जा बैठे हों, तब इस देश को धार्मिक कट्टरता, अंधविश्वास और सांप्रदायिकता से कैसे बचाया जा सकता है? तरुण गोगोई एवं मुलायम सिंह का आचरण निश्चित रूप से निंदनीय है, जो विदेशी साजिशों के हिस्से बनते दिखाई दे रहे हैं. जब देश में मुसलमान गोलबंद होते हैं, जेहाद का नारा देते हैं, किसी राजनीतिक दल को हराने का फतवा जारी करते हैं, शरीयत को संविधान के ऊपर और देश की सार्वभौम पहचान को नकारते हुए इस्लाम को सर्वोपरि बताते हैं, तो उनके इस बर्ताव का गलत असर अन्य धर्मावलंबियों पर पड़ना लाजिमी हो जाता है. और, जब ग़ैर-मुसलमान लामबंद होकर खड़े होते हैं, तब कहा जाता है कि ये सांप्रदायिक हैं, इनसे देश की गंगा-जमुनी तहजीब को ख़तरा है, ये देश तोड़ने वाले हैं, इनसे लोकतंत्र को ख़तरा है.

-राजेंद्र शुक्ल, *कानपुर, उत्तर प्रदेश.*

### नेताओं के घटिया बोल

देश में राजनीति की दिशा जिस तरफ़ जा रही है, वह बेहद चिंतनीय है. किसी भी राजनीतिक पार्टी का नेता हो, वह विरोधी पार्टी के नेताओं पर वार करते समय एक बार भी नहीं सोचता कि वह आख़िर बोल क्या रहा है. सपा प्रमुख मुलायम सिंह यादव, आजम खान, कांग्रेस के बेनी प्रसाद वर्मा, बसपा नेता एवं मुरादाबाद से लोकसभा उम्मीदवार हाजी याकूब के बोल तो सारी मर्यादाएं तोड़ रहे हैं. इसी चक्कर में भाजपा के उत्तर प्रदेश प्रभारी पर मुकदमा हुआ और कांग्रेस के एक नेता जेल जा चुके हैं. चुनाव आते ही नेताओं के गंदे बोल शुरू हो जाते हैं. राजनीति में एक-दूसरे का विरोध तो होता है, लेकिन यह तरीका तो सरासर गलत है.

-अजीत सिंह, *बलिया, उत्तर प्रदेश.*

**पाठक पूरा नाम, पता व फोन नंबर के साथ अपने स्वतंत्र विचार व प्रतिक्रियाएं इस पते पर भेजें :**
**चौथी दुनिया, एफ.2, सेक्टर-11, नोएडा (उत्तर प्रदेश) पिन-201301**
ई-मेल पता : feedback@chauthiduniya.com





संतोष भारतीय

# जब तोप मुक़ाबिल हो



## जीतने वालों से देश की अपेक्षा

कांग्रेस ने क्यों हथियार डाले, इसके कई कारण हो सकते हैं. पहला कारण है कि जब सोनिया गांधी ने यह तय किया कि राहुल गांधी कांग्रेस के भावी नेता होंगे, तब सोनिया गांधी की टीम ने काम करना बंद कर दिया और राहुल गांधी की टीम ने काम कैसे करें, यही सोचने में अपना सारा समय बर्बाद कर दिया. वे काम कर ही नहीं पाए. सत्ता हस्तांतरण की भी एक प्रक्रिया होती है, पर यह मानना कि राहुल गांधी में इतनी भी समझ नहीं है कि मिली हुई ताकत का इस्तेमाल कैसे करें, इस पर विश्वास नहीं होता. राहुल गांधी और सोनिया गांधी के पास सारे विकल्प खुले थे.

दस अप्रैल को दिल्ली और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के चुनाव हुए. 6 सीटों पर बिहार में भी वोट पड़े. कुल मिलाकर लगभग 91 सीटों पर वोट पड़े. मतदान का प्रतिशत शानदार रहा. इसकी जड़ में चुनाव आयोग का प्रचार, उसकी कोशिश कि ज़्यादा से ज़्यादा लोग वोट डालें, तो थी ही और पिछले कुछ चुनावों से नौजवान मतदाताओं में वोट डालने का ज़्यादा उत्साह दिखाई दे रहा है. 18 से 24 साल के युवा अचानक चुनाव को सर्वाधिक महत्वपूर्ण मानने लगे हैं. पहले चुनावों में कार्यकर्ता हुआ करते थे. उसके बाद पिछले 10-15 सालों में कार्यकर्ता की जगह दैनिक खर्चों पर काम करने वाले नौजवान चुनावों में इस्तेमाल होने लगे, पर दिल्ली विधानसभा के पिछले चुनाव के बाद सारे देश में नए सिरे से नौजवान कार्यकर्ता पार्टियों को मिलने लगे. लोकसभा के इस चुनाव में तो नौजवान कार्यकर्ताओं ने भी अपने-अपने दलों में, चुनाव में हिस्सा लिया. मतदाताओं की युवा हिस्सेदारी ने बढ़-चढ़कर अपनी भूमिका अदा की.

अब यह नौजवानों का वोट, जो कि बड़ी संख्या में दे रहे हैं, जिसने मतदान का प्रतिशत 65 से 70 और 70 से 73 कर दिया, यह किसके पक्ष में जाएगा, अभी नहीं कहा जा सकता, लेकिन यह प्रतिशत नरेंद्र मोदी की प्रचार टीम अपने पक्ष में आया हुआ बता रही है. 11 अप्रैल की सुबह लगभग सभी महत्वपूर्ण पत्रकारों के पास यह जानकारी पहुंचाई जा चुकी थी कि दिल्ली एवं पश्चिमी उत्तर प्रदेश की सभी लोकसभा सीटें भारतीय जनता पार्टी निर्विवाद रूप से जीत रही है और सभी लोगों ने नरेंद्र मोदी के पक्ष में मतदान किया है. हो सकता है कि ऐसा हुआ हो, लेकिन महत्वपूर्ण यह नहीं है कि ऐसा हुआ हो, क्योंकि जो हुआ, वह तो 16 मई को ईवीएम में कैद आंकड़े सामने आने के बाद पता चलेगा. महत्वपूर्ण यह है कि 10 तारीख की शाम 6 बजे मतदान समाप्त हुआ और 11 तारीख की सुबह 9 बजे तक विभिन्न स्रोतों से सारे पत्रकारों, महत्वपूर्ण राजनेताओं और राय बनाने वालों के पास यह जानकारी किसी न किसी तरह पहुंचाई जा चुकी थी कि यह दौर नरेंद्र मोदी का है और तीसरे दौर की सीटें नरेंद्र मोदी के पक्ष में 95 प्रतिशत से ज़्यादा जा रही हैं.

यही सफलता है. नरेंद्र मोदी ने 10 हज़ार करोड़ रुपये प्रचार में खर्च किए या नहीं खर्च किए, यह बहस का विषय है, लेकिन नरेंद्र मोदी ने अगर 10 हज़ार करोड़ रुपये खर्च किए, तो वे दिमाग के साथ खर्च हुए. जबकि दूसरी तरफ़ अगर हज़ार करोड़ रुपये भी खर्च हुए, तो बेवकूफी से खर्च हुए, क्योंकि कांग्रेस के पक्ष में कोई प्रचार हुआ दिखाई ही नहीं दिया. कांग्रेस ने पिछले 10 साल में अच्छे काम किए, हालांकि उनके नतीजे अच्छे नहीं दिखाई दिए. एक सूचना के अधिकार को छोड़ दें, तो बाकी सारे क़ानून भ्रष्टाचार के पक्ष में मदद करते दिखाई दिए, लेकिन कांग्रेस ने चुनावी युद्ध को बिना लड़े ही छोड़ दिया और चुनाव के बीच में अपने सिपहसालारों को यह कहने दिया कि कांग्रेस तो धारणा के स्तर पर चुनाव हार गई है. जयराम रमेश, पी चिदंबरम और ए के एंटनी ऐसे लोगों में प्रमुख हैं, जिन्होंने कांग्रेस की संभावनाओं को समाप्त करने का उद्घोष किया और कांग्रेस ने उन्हें कोई सजा नहीं दी. ये तीनों लोग कांग्रेस की विभिन्न कमेटियों के सदस्य हैं और अभी भी पी चिदंबरम एवं ए के एंटनी सोनिया गांधी की और जयराम रमेश राहुल गांधी की नाक के बाल बने हुए हैं. ऐसे लगता है कि जैसे कांग्रेस के भीतर न राजनीतिक सोच बची है और न युद्ध लड़ने की जिजीविषा. कांग्रेस ने जिस जापानी कंपनी को प्रचार अभियान का ठेका सौंपा, ऐसा लगता है कि उसमें से 50 प्रतिशत धनराशि कमीशन के तौर पर वापस ले ली गई. यह मैं इसलिए कह रहा हूं कि इस कंपनी ने जिन भारतीय सहयोगियों को अपने साथ रखा, उन्हें यह समझ में ही नहीं आया कि इलेक्शन कैंपेन कैसे आर्गेनाइज करते हैं. शायद दूसरा कारण यह भी रहा हो कि राहुल गांधी ने किसी आदमी को यह ज़िम्मा नहीं सौंपा कि कैंपेन की बुनियादी शक्ल क्या हो. वह सिर्फ़ और सिर्फ़ नरेंद्र मोदी की बातों का भौंड़ा जवाब देने की कोशिश करते दिखाई दिए.

कांग्रेस ने क्यों हथियार डाले, इसके कई कारण हो सकते हैं. पहला कारण है कि जब सोनिया गांधी ने यह तय किया कि राहुल गांधी कांग्रेस के भावी नेता होंगे, तब सोनिया गांधी की टीम ने काम करना बंद कर दिया और राहुल गांधी की टीम ने काम कैसे करें, यही सोचने में अपना सारा समय बर्बाद कर दिया. वे काम कर ही नहीं पाए. सत्ता हस्तांतरण की भी एक प्रक्रिया होती है, पर यह मानना कि राहुल गांधी में इतनी भी समझ नहीं है कि मिली हुई ताकत का इस्तेमाल कैसे करें, इस पर विश्वास नहीं होता. राहुल गांधी और सोनिया गांधी के पास सारे विकल्प खुले थे. पार्टी के लोगों में उत्साह भरने का विकल्प था, पार्टी को मजबूत करने का विकल्प था, अपने प्रमुख लोगों को चुनाव में लगाने का विकल्प था जो चुनाव अभियान संयोजित करते, उन्हें राज्यसभा का वादा देकर पार्टी के काम में लगाने का विकल्प था, लेकिन कहीं कोई हलचल होती दिखाई नहीं दी.

दूसरी तरफ़ नरेंद्र मोदी पिछले तीन साल से चुनाव लड़ रहे हैं. तीन साल का मतलब, जबसे उन्होंने गुजरात टूरिज्म का ब्रांड अंबेसडर अमिताभ बच्चन को बनाया, जिन्होंने गुजरात-गुजरात-गुजरात-गुजरात और फिर नरेंद्र मोदी का गुजरात जैसे क्रमश: प्रचार अभियान की तीव्रता बढ़ाई. नरेंद्र मोदी ने अपने प्रथम श्रेणी के आईएएस अफसरों को पूरे चुनाव की देखरेख के लिए नियुक्त किया. नरेंद्र मोदी ने कहीं भी अपने राजनीतिक कार्यकर्ताओं पर भरोसा नहीं किया. सिर्फ़ एक अपवाद अमित शाह हैं, जिन्हें उन्होंने महीनों पहले उत्तर प्रदेश में भेज दिया था, क्योंकि वह जानते थे कि उत्तर प्रदेश में जिस तरह की गुटबंदी है और जिस तरह से पार्टी के भीतर अंतर्विरोध हैं, उसका मुकाबला वह उत्तर प्रदेश के ही किसी नेता के जरिये नहीं कर सकते, इसलिए उन्होंने अपने सबसे विश्वासपात्र अमित शाह को भेजा. नरेंद्र मोदी की रणनीति खासी सफल रही. कम से कम नरेंद्र मोदी का प्रचार अभियान कहीं पर भी कमजोरी से नहीं चला और उसने सारे देश में भारतीय जनता पार्टी को पार्टी के तौर पर इरिलेवेंट (अप्रासंगिक) कर दिया.

पार्टी का कोई भी बड़ा नेता देश में चुनाव प्रचार नहीं कर रहा है. सारे लोग अपने-अपने चुनाव क्षेत्र में घुसे हुए हैं. सिर्फ़ एक शख्स सारे देश में प्रचार कर रहा है और कह रहा है कि तुम मुझे वोट दो, मैं तुम्हें बदलाव दूंगा, सुशासन दूंगा, स्वराज दूंगा और वह शख्स नरेंद्र मोदी हैं. नरेंद्र मोदी ने पैसा खर्च करने में भी कोताही नहीं बरती. उन्होंने उन सारे वर्गों, जो हिंदू समाज के साथ नहीं आते हैं, को अपने साथ खड़ा करने के लिए साम, दाम, दंड, भेद की नीति अपनाई और सफलतापूर्वक मुसलमानों में भी यह संदेश भेज दिया कि अगर वे नरेंद्र मोदी के साथ रहेंगे, तो ज़्यादा सुखी रहेंगे और कांग्रेस के साथ रहेंगे, तो दु:खी रहेंगे. मुसलमानों में भी कन्फ्यूजन बढ़ा है, लेकिन यह कन्फ्यूजन कांग्रेस को कोई फ़ायदा नहीं दे रहा है, बल्कि अलग-अलग जगहों पर अलग-अलग फ़ायदे दे रहा है. उत्तर प्रदेश में यह समाजवादी पार्टी की मदद कर रहा है और बिहार में अब यह लालू यादव एवं नीतीश कुमार के साथ जाएगा. कांग्रेस के साथ कम से कम इन दो प्रदेशों में ऐसा होता नहीं दिख रहा है.

अत: कांग्रेस ने जहां बिना लड़े चुनावी युद्ध की कमान छोड़ दी है, वहीं अब यह जनता के विवेक पर है कि वह वादों की असलियत पहचान कर नरेंद्र मोदी के साथ खड़ी होती है या वादों को ईमानदारी से न बोलने वाली कांग्रेस के साथ या फिर क्षेत्रीय दलों के साथ जाती है. चाहे जो जीते, लेकिन देश जीतेगा, यह मानना चाहिए और जो जीते, उसे देश के लिए काम करना चाहिए. इतनी छोटी सी अपेक्षा तो हमें जीतने वालों से करनी ही चाहिए.■

editor@chauthiduniya.com



मेघनाद देसाई

# आरोपों का खेल

नई कहानी यह है कि मनमोहन सिंह की उदासीनता को नरेंद्र मोदी भुना रहे हैं. वह पार्टी के लिए एक परेशानी की तरह हैं, जो देश भर में फैल गए हैं. वहीं मोदी को भाजपा का मजबूत पक्ष माना जा रहा है. मोदी क्या करेंगे, यह कोई बहुत महत्वपूर्ण पक्ष नहीं है, लेकिन उनका वक्ता होना और सक्रिय होना, उन्हें मनमोहन सिंह के शांत रहने वाले तरीके से आगे ले जाता है. यहां पर कोई भी यह सवाल पूछ सकता है कि क्या मनमोहन सिंह को उनकी चुप्पी के लिए लगातार उनके कांग्रेसी साथियों द्वारा नहीं धकेला गया?

लीवरपूल फुटबॉल क्लब के मशहूर मैनेजर रहे बिल सैंकली से एक बार यह पूछा गया कि जब विरोधी टीम के खिलाड़ी अत्यधिक फॉउल करते हैं, तो ऐसे में अपने खिलाड़ियों के लिए उनकी सलाह क्या होती है? इसके जवाब में सैंकली ने कहा, मैं उन्हें सलाह देता हूं कि अपने ऊपर फॉउल होने से पहले ही तुम अपने विपक्षी खिलाड़ियों पर हमले शुरू कर दो. कांग्रेस का हालिया मूड कुछ ऐसा ही लगता है. यह स्पष्ट होने के बावजूद कि सभी इस बात की घोषणा कर रहे हैं कि पार्टी चुनाव में हार जाएगी, कांग्रेस ने आरोप लगाने शुरू कर दिए हैं कि आख़िर वह चुनाव क्यों हार रही है? सोनिया गांधी और राहुल पर कांग्रेस की हार के आरोप नहीं लग सकते हैं. ये सारे आरोप मनमोहन सिंह पर लग रहे हैं, जबकि पार्टी में कुछ भी अच्छा होता है, तो उसका श्रेय राहुल और सोनिया को मिलता है.

नई कहानी यह है कि मनमोहन सिंह की उदासीनता को नरेंद्र मोदी भुना रहे हैं. वह पार्टी के लिए एक परेशानी की तरह हैं, जो देश भर में फैल गए हैं. वहीं मोदी को भाजपा का मजबूत पक्ष माना जा रहा है. मोदी क्या करेंगे, यह कोई बहुत महत्वपूर्ण पक्ष नहीं है, लेकिन उनका वक्ता होना और सक्रिय होना, उन्हें मनमोहन सिंह के शांत रहने वाले तरीके से आगे ले जाता है. यहां पर कोई भी यह सवाल पूछ सकता है कि क्या मनमोहन सिंह को उनकी चुप्पी के लिए लगातार उनके कांग्रेसी साथियों द्वारा नहीं धकेला गया? उन्हें इसी कारण चुना ही गया था, क्योंकि वह एक शांत व्यक्तित्व के मालिक होने के साथ-साथ परिवार विशेष से कोई भी श्रेय छीनने के इच्छुक भी नहीं थे. उन्हें प्रधानमंत्री बनाया ही इसलिए गया था, क्योंकि वह उदासीन थे. 2004 की परिस्थितियों के मुताबिक पार्टी के लिए वह सबसे ज़्यादा मुफीद व्यक्ति थे. पार्टी में अच्छे वक्ताओं और नेताओं की की कमी नहीं थी, जिन्हें चुना जा सकता है. प्रणब मुखर्जी और अर्जुन सिंह, दोनों ही नेता उस वक्त मौजूद थे. अगर उस समय की पसंद वर्तमान समय की परेशानी बन गई है, तो इसका मुख्य कारण परिवार है. परिवार ने ही उनका नाम प्रस्तावित किया था और परिवार ही उन्हें दु:खद रूप से इतिहास के कूड़ेदान में डाल रहा है.

यही बताता है कि मोदी की सफलता का राज क्या है? वर्तमान समय के अनुसार कांग्रेस और दूसरी पार्टियों को छोड़कर इस बात की सहमति कईयों में है कि मोदी एक चमत्कारिक कार्यकर्ता हैं. चूंकि सिर्फ़ मनमोहन सिंह को मुद्रास्फीति और आर्थिक विकास घटने के लिए आरोपित किया जाता है, इसलिए मोदी से यह आशा है कि वह तेजी से आर्थिक विकास करेंगे और मुद्रास्फीति में कमी लाएंगे. लेकिन, हम वास्तविकता में नहीं जानते कि आख़िर मोदी करेंगे क्या? हम सिर्फ़ इतना जानते हैं कि वह निर्णायक व्यक्ति हैं और अपने निर्णयों को लागू कराना जानते हैं. इसके बावजूद क्या यह माना जा सकता है कि राज्य स्तर का अनुभव राष्ट्र स्तर पर भी प्रासंगिक साबित होगा. अगर ऐसी बात है, तो हमें उनके विजन और योजनाओं के बारे में विस्तार में जानना होगा, जिसकी हर आदमी उनसे अपेक्षा कर रहा है. आगामी 17 मई को जब भाजपा नीत एनडीए सरकार बनाने की स्थिति में होगा, तो उसे सत्ता की सच्चाई का पता चलेगा. यहां सिर्फ़ तर्कों से काम नहीं चलेगा.

पी चिदंबरम ने लोकसभा में जो पेश किया था, वह चुनावी बजट था. जो बात हम पहले से जानते हैं, वह यह है कि 2013-14 के घाटे का परिणाम 4.6 प्रतिशत से ज़्यादा है. आने वाले वर्ष विस्मयकारी होंगे, क्योंकि अनियोजित खर्च ज़्यादा है और आय भी कम है. हम इस बात का निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि 2014-15 का बजट घाटा अप्रत्याशित रूप से कम होगा.



आर्थिक स्थिति खराब है. पी चिदंबरम ने लोकसभा में जो पेश किया था, वह चुनावी बजट था. जो बात हम पहले से जानते हैं, वह यह है कि 2013-14 के घाटे का परिणाम 4.6 प्रतिशत से ज़्यादा है. आने वाले वर्ष विस्मयकारी होंगे, क्योंकि अनियोजित खर्च ज़्यादा है और आय भी कम है. हम इस बात का निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि 2014-15 का बजट घाटा अप्रत्याशित रूप से कम होगा. हालांकि, अभी हम यह नहीं जानते हैं कि आगामी वित्त मंत्री कौन होगा? कुछ नामों की चर्चा तो है, जैसे अरुण जेटली और मनोहर पार्रिकर. चाहे जो भी वित्त मंत्री बने, लेकिन अभी बजट से पहले उसके पास आर्थिक विकास के कम ही रास्ते होंगे. जो भी वित्त मंत्री बने, उसके लिए यह सबसे बढ़िया सलाह है कि वह सर्वप्रथम आरोप लगाना शुरू कर दे. उसकी रणनीति यह होनी चाहिए कि सार्वजनिक वित्त पर वह ख़तरे की घंटी बजा दे. पूरी दुनिया को बताए कि यह सब पिछली सरकार की कारस्तानियां हैं. ऐसा करने से लोगों की उससे उम्मीदें कम हो जाएंगी. वास्तविकता में यही तरीका अपनाना चाहिए.

अगर हम पिछले दो सालों पर गंभीरता से निगाह दौड़ाएं, तो देखेंगे कि ख़तरे की घंटियां बजाई जा रही हैं. घाटे को नियंत्रित करने के लिए नए वित्त मंत्री को कुछ आरोप लेने पड़ेंगे. अनियोजित खर्चे कम करने होंगे, जैसे मनरेगा. तेल एवं उर्वरकों पर छूट भी कम करनी चाहिए. सुस्त बजट बनाने के दिन लद गए. ज़रूरत इस बात की है कि जल्दी की जाए. इससे पहले कि मुक्के पड़ने शुरू हो जाएं, कमर कसकर तैयार हो जाइए. ■

feedback@chauthiduniya.com

फर्रुख़ाबाद में कांग्रेस नेता एवं विदेश मंत्री सलमान ख़ुर्शीद के मुक़ाबले के लिए भाजपा ने कल्याण के क़रीबी मुकेश राजपूत पर दांव लगाया है. मुकेश राजपूत को टिकट देने का विरोध भी हुआ था, इसलिए कल्याण को यहां अपनी साख बचानी होगी.

## ब्रज की 12 सीटों पर मुकाबला 24 को

# सपा, हेमा, अमर और जयंत की किस्मत दांव पर

**आगरा की सीट पर इस बार मुकाबला भारतीय जनता पार्टी के वर्तमान सांसद रामशंकर कठेरिया, बसपा के श्रीनारायण सिंह, कांग्रेस के उपेंद्र जाटव, सपा के महाराज सिंह और आप के रवींद्र के बीच है. आगरा की सीट पर भाजपा का खासा प्रभाव है, तो बसपा का वोट बैंक भी यहां कम नहीं है. फिरोजाबाद में सपा के थिंक टैंक प्रो. रामगोपाल के पुत्र अक्षय यादव मैदान में हैं, जिनसे मुकाबले के लिए भाजपा ने बसपा के कद्दावर नेता एवं राज्यसभा सदस्य एसपी सिंह बघेल को पार्टी में शामिल कर मैदान में उतारा है. बघेल सपा और बसपा होते हुए भाजपा में आए हैं और सपा-बसपा से सांसद रह चुके हैं. बसपा और सपा की काट क्या है, यह बघेल अच्छी तरह जानते हैं. कांग्रेस ने उद्योगपति अतुल चतुर्वेदी और बसपा ने ठाकुर ब्रजराज सिंह के पुत्र डॉ. विश्वदीप सिंह को मैदान में उतारा है, जिनकी नज़र ठाकुर वोट बैंक पर है.**

संजय सक्सेना

उत्तर प्रदेश में तीसरे चरण की सियासी जंग की पटकथा ब्रजभूमि में लिखी जाएगी. तीसरे चरण में 24 अप्रैल को 12 सीटों पर मतदान होगा. राजनीतिक धुरंधरों, उनकी बहू-बेटी, एक सिने-तारिका के अलावा कभी समाजवादी पार्टी के लिए अमर कथा लिखने वाले एक नेता जी की भी अग्निपरीक्षा होगी. भविष्य के गर्भ में क्या छिपा है, यह तो कोई नहीं जानता, लेकिन 2009 के लोकसभा चुनाव में यहां सपा ने 12 में से चार, कांग्रेस ने तीन, राष्ट्रीय लोकदल ने दो और भाजपा-बसपा ने एक-एक सीट पर फतह हासिल की थी. 24 अप्रैल को आगरा (सुरक्षित), फतेहपुर सीकरी, फ़िरोज़ाबाद, मैनपुरी, हाथरस(सुरक्षित), एटा, हरदोई (सुरक्षित), फर्रुख़ाबाद, इटावा(सुरक्षित), कन्नौज और अकबरपुर में मतदान होगा. फ़िरोज़ाबाद एवं हाथरस ऐसे संसदीय क्षेत्र हैं, जिनके मौजूदा सांसद इस बार मैदान बदल कर ताल ठोंक रहे हैं. फ़िरोज़ाबाद के सांसद एवं गुजरे जमाने के फिल्म स्टार राज बब्बर इस बार गाज़ियाबाद और हाथरस की मौज़ूदा रालोद सांसद सारिका सिंह बघेल सपा के टिकट पर आगरा से चुनाव लड़ रहे हैं. वहीं एटा के सांसद एवं पूर्व मुख्यमंत्री कल्याण सिंह ने अपनी जगह बेटे को चुनाव मैदान में उतारा है. इन 12 सीटों पर अपनी किस्मत आजमाने वाले प्रमुख चेहरों में सपा प्रमुख मुलायम सिंह यादव मैनपुरी, उनकी बहू एवं मुख्यमंत्री अखिलेश यादव की पत्नी डिंपल यादव कन्नौज, सपा महासचिव एवं मुलायम के चचेरे भाई रामगोपाल यादव के पुत्र अक्षय यादव फ़िरोज़ाबाद से, अमर सिंह रालोद के टिकट पर फतेहपुर सीकरी, प्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री हेमामालिनी भाजपा के टिकट पर मथुरा, अजित सिंह के पुत्र जयंत चौधरी, कांग्रेस के दिग्गज नेता सलमान खुर्शीद फर्रुखाबाद, बसपा के वरिष्ठ नेता स्वामी प्रसाद मौर्य की बेटी संघमित्रा मौर्य मैनपुरी आदि शामिल हैं. यहां आम आदमी पार्टी ने पूर्व नौकरशाह बाबा हरदेव को सपा प्रमुख को चुनौती देने के लिए उतारा है. फतेहपुर सीकरी में बसपा नेता रामवीर उपाध्याय की पत्नी एवं मौजूदा सांसद सीमा उपाध्याय की टक्कर रालोद के अमर सिंह से बताई जा रही है. सपा प्रमुख मुलायम सिंह के प्रधानमंत्री बनने का सपना कितनी दूर तक जा सकता है, यह मैनपुरी और उसके आसपास की 12 सीटों के संकेत से काफी कुछ तय हो जाएगा.

ब्रज क्षेत्र की सियासी गणित काफ़ी उलझी हुई है. जाट बाहुल्य इस इलाके में राष्ट्रीय लोकदल भी एक फैक्टर की तरह मौजूद है. आम आदमी पार्टी को लोग तरजीह तो दे रहे हैं, लेकिन वोटकटुआ से अधिक नहीं. वैसे उसने यहां कई अच्छे उम्मीदवार उतारे हैं. समीकरणों को समझना आसान न होगा. पिछले दो सालों में सियासी चक्रवात रुख बदल रहे हैं. मथुरा सीट से पिछली बार भाजपा के गठबंधन से जीते रालोद नेता एवं चौधरी अजित सिंह के पुत्र जयंत चौधरी के रास्ते में इस बार भाजपा ने ही सिल्वर स्क्रीन की बाधा खड़ी कर दी है. जयंत के समर्थक हेमा का विरोध बाहरी बताते हुए कर रहे हैं, लेकिन रालोद की चुनौती कम नहीं हो रही है. जयंत को मोदी की हवा और हेमा के कद ने परेशान कर रखा है. मथुरा में क्या होगा, यह चौक-चौराहों और पान की दुकानों पर चर्चा का विषय बना हुआ है. कांग्रेस गठबंधन के साथ मैदान में उतरी रालोद ने कांग्रेस सरकार द्वारा दिए गए जाट आरक्षण को मुद्दा बनाया था, लेकिन सुप्रीम कोर्ट के एक आदेश ने उसकी हवा निकाल दी. बसपा के योगेश द्विवेदी, सपा के चंदन सिंह और आप के अनुज मथुरा की लड़ाई अपने हिसाब से रोचक बनाए हुए हैं.

देश भर के लोग आगरा के फतेहपुर सीकरी में इबादत करने आते हैं. यहां शेख सलीम चिश्ती की विश्व प्रसिद्ध दरगाह पर मत्था टेकने वालों का हुजूम लगा रहता है. रालोद नेता अमर सिंह ने भी यहां आकर मत्था टेककर जीत की दुआ ज़रूर मांगी होगी. अमर सिंह यहां से बसपा की मौजूदा सांसद सीमा उपाध्याय को परास्त करके मायावती और सपा की रानी पक्षालिका सिंह को हराकर मुलायम से अपना हिसाब बराबर करना चाहते हैं. अमर सिंह भले ही रालोद के टिकट से मैदान मे हों, लेकिन आज भी उनकी पहचान यही है कि कभी उनके इशारे पर सपा सरकार चलती थी. इस बार अमर सिंह के सारथी बने हैं रालोद के अजित सिंह, जिनके गुणगान करते वह थक नहीं रहे हैं. रालोद के जाट वोट बैंक की अच्छी मौजूदगी और ठाकुर बाहुल्य क्षेत्र होने के कारण अमर सिंह को अपनी राह में कोई रुकावट नहीं नज़र आ रही है. सपा ने भदावर राजघराने की रानी एवं प्रदेश के मंत्री अरिदमन सिंह की पत्नी पक्षालिका सिंह को उतार कर मुक़ाबला रोचक बना दिया. बसपा प्रत्याशी एवं वर्तमान सांसद सीमा उपाध्याय का अपना गणित है. वह अपने हिसाब से जाति का गुणा-भाग कर रही हैं. रालोद प्रत्याशी के लिए जाट वोट बैंक की मुश्किल खड़ी की है भाजपा के चौधरी बाबूलाल ने और मोदी लहर उनके रास्ते की सबसे बड़ी बाधा है.

आगरा की सीट पर इस बार मुकाबला भारतीय जनता पार्टी के वर्तमान सांसद रामशंकर कठेरिया, बसपा के श्रीनारायण सिंह, कांग्रेस के उपेंद्र जाटव, सपा के महाराज सिंह और आप के रवींद्र के बीच है. आगरा की सीट पर भाजपा का खासा प्रभाव है, तो बसपा का वोट बैंक भी यहां कम नहीं है. फ़िरोज़ाबाद में सपा के थिंक टैंक प्रो. रामगोपाल के पुत्र अक्षय यादव मैदान में हैं, जिनसे मुकाबले के लिए भाजपा ने बसपा के कद्दावर नेता एवं राज्यसभा सदस्य एसपी सिंह बघेल को पार्टी में शामिल कर मैदान में उतारा है. बघेल सपा और बसपा होते हुए भाजपा में आए हैं और सपा-बसपा से सांसद रह चुके हैं. बसपा और सपा की काट क्या है, यह बघेल अच्छी तरह जानते हैं. कांग्रेस ने उद्योगपति अतुल चतुर्वेदी और बसपा ने ठाकुर ब्रजराज सिंह के पुत्र डॉ. विश्वदीप सिंह को मैदान में उतारा है, जिनकी नज़र ठाकुर वोट बैंक पर है.

एटा से भाजपा ने पूर्व मुख्यमंत्री कल्याण सिंह के उत्तराधिकारी के रूप में उनके पुत्र राजवीर सिंह को मैदान में उतारा है, लेकिन साख कल्याण सिंह की दांव पर लगी है. यहां राजवीर की राह रोकने के लिए सपा ने पूर्व सांसद देवेंद्र सिंह यादव और बसपा ने नूर मोहम्मद को उतारा है. यह कुर्मी बाहुल्य इलाका कल्याण सिंह का गढ़ माना जाता है. यहां कांग्रेस का कोई नामलेवा नहीं है और गठबंधन में पार्टी ने यह सीट अपने सहयोगी दल के लिए छोड़ दी है. यहां का सारा ताना-बाना कल्याण के इर्द-गिर्द घूम रहा है. कल्याण को इस क्षेत्र से ज़्यादा से ज़्यादा सीटें भाजपा के लिए जीतकर यह साबित करना होगा कि वह मुलायम का चक्रव्यूह तोड़ने में सक्षम हैं. फर्रुखाबाद में कांग्रेस नेता एवं विदेश मंत्री सलमान खुर्शीद के मुकाबले के लिए भाजपा ने कल्याण के क़रीबी मुकेश राजपूत पर दांव लगाया है. मुकेश को टिकट देने का विरोध भी हुआ था, इसलिए कल्याण को यहां अपनी साख बचानी होगी. मुकेश और राजवीर पिछला विधानसभा चुनाव हार चुके हैं, जिससे भाजपाई जीत को लेकर आशंकित नज़र आते हैं. यहां से बसपा के जयवीर सिंह भी मैदान में हैं. सपा ने भाजपा की राह रोकने के लिए अपनी पहली प्रदेश सरकार में राज्यमंत्री रहे नरेंद्र सिंह यादव के बेटे को टिकट दिया था, लेकिन बाद में एटा ज़िले की अलीगंज सीट से सपा विधायक रामेश्वर यादव को टिकट थमा दिया गया. देश में चल रही कांग्रेस विरोधी लहर से सलमान के माथे पर बल पड़े हैं, वहीं बसपा राजनीतिक गणित बैठाने में लगी है.

हाथरस में बसपा से मनोज सोनी, भाजपा से राजेश दिवाकर, सपा से रामजीलाल सुमन, रालोद से निरंजन सिंह धनगर मैदान में हैं. हाथरस की मौजूदा सांसद सारिका आगरा से सपा के टिकट पर चुनाव लड़ रही हैं. मैनपुरी में अब कोई चमत्कार न हुआ, तो मुलायम की जीत पक्की है. मुलामय को चुनौती देने के लिए भाजपा ने एसएस चौहान को उतारा है, लेकिन उनके नाम पर पार्टी बंटी हुई नज़र आ रही है. बसपा ने स्वामी प्रसाद मौर्य की पुत्री डॉ. संघमित्रा मौर्य के जरिये मुलायम को चुनौती दी है, लेकिन संघमित्रा के लिए राह आसन नहीं है. आप ने रालोद के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष हरदेव सिंह को मैदान में उतारा है. इटावा सुरक्षित सीट सपा प्रमुख मुलायम सिंह यादव एवं मुख्यमंत्री अखिलेश यादव के लिए नाक का सवाल है. यहां सपा से वर्तमान सांसद प्रेमदास कठेरिया ही प्रत्याशी हैं, जिनसे जनता नाराज़ चल रही है, लेकिन मुलायम और अखिलेश अपना वास्ता देकर मतदाताओं से सपा के पक्ष में वोट करने की अपील कर रहे हैं. भाजपा ने यहां अशोक दोहरे को प्रत्याशी बनाया है, जो हाल में बसपा छोड़कर आए हैं. पार्टी की हरसंभव कोशिश है कि सुखदा मिश्रा के बाद वह मुलायम के गढ़ में एक बार फिर कमल खिलाए, लेकिन मुलायम के धोबी पाट दांव से भाजपाई सहमे हुए हैं. कन्नौज में विकास ख़ूब हुआ है. यहां से मुख्यमंत्री अखिलेश यादव की पत्नी डिंपल यादव मैदान में हैं. उनकी जीत में शायद ही कोई प्रत्याशी बाधा बन पाएगा. हरदोई में सपा ने मौजूदा सांसद ऊषा वर्मा को मैदान में उतारा है. इस बार भाजपा और बसपा दोनों उनका खेल बिगाड़ने में लगे हैं. अकबरपुर सीट इस बार त्रिकोणीय मुक़ाबले में दिख रही है. कांग्रेस के मौजूदा सांसद राजाराम पाल को कांग्रेस विरोधी लहर के चलते भाजपा के देवेंद्र सिंह भोले और सपा-बसपा प्रत्याशियों से पार पाना आसान नहीं लग रहा है.■

**अमर सिंह यहां से बसपा की मौजूदा सांसद सीमा उपाध्याय को परास्त करके मायावती और सपा की रानी पक्षालिका सिंह को हराकर मुलायम से अपना हिसाब बराबर करना चाहते हैं. अमर सिंह भले ही रालोद के टिकट से मैदान मे हों, लेकिन आज भी उनकी पहचान यही है कि कभी उनके इशारे पर सपा सरकार चलती थी. इस बार अमर सिंह के सारथी बने हैं रालोद के अजित सिंह, जिनके गुणगान करते वह थक नहीं रहे हैं.**

feedback@chauthiduniya.com

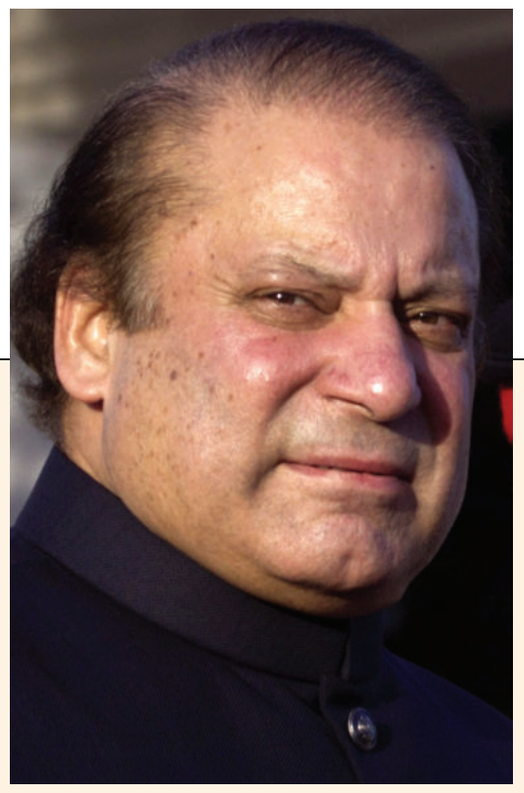

नवाज शरीफ पाकिस्तान के प्रधानमंत्री हैं. उन्होंने भारत के साथ संबंधों को बेहतर बनाने की दिशा में कई बयान भी दिए. भारत की बात करें, तो पिछले 10 वर्षों से यहां कांग्रेस पार्टी की अगुवाई वाली संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन की सरकार है. अगली सरकार के चुनाव के लिए मतदान का दौर शुरू हो चुका है और 16 मई को यह साफ़ हो जाएगा कि देश की सत्ता किसके पास जाने वाली है.

# आम चुनाव
# मोदी और पाकिस्तान

**चुनावी सभाओं के दौरान नरेंद्र मोदी ने भी कई बार पाकिस्तान के ख़िलाफ़ कड़े स्वरों का इस्तेमाल किया. लेकिन, यह ग़ौर करने वाली बात है कि दोनों देशों के चुनावों में मतदाताओं को रिझाने के लिए एक-दूसरे के ख़िलाफ़ इस तरह के सख्त क़दम उठाने की बात कही जाती रही है. इससे यह मतलब कतई नहीं निकाला जाना चाहिए कि मोदी अगर प्रधानमंत्री बनते हैं, तो पाकिस्तान के प्रति उनका रवैया एक दुश्मन मुल्क के रूप में रहेगा.**

चंदन कुमार

वर्ष 1947 भारतीय इतिहास के पन्नों में अगर स्वर्णाक्षरों से अंकित है, तो इसी इतिहास का एक स्याह पन्ना भी इस पर दर्ज है. भारत की आज़ादी के साथ-साथ यह वर्ष बंटवारे का दर्द भी लेकर आया था. भारत और पाकिस्तान दो पड़ोसी देश अस्तित्व में आए थे. लेकिन, अपने जन्म के साथ ही इन दोनों पड़ोसी देशों का आपसी रिश्ता कभी भी सामान्य नहीं रहा. आलम यह है कि अभी तक दोनों देशों के बीच तीन लड़ाइयां हो चुकी हैं और छद्म जंग तो अक्सर चलती रहती है. कश्मीर मुद्दे से लेकर शुरू हुआ यह विवाद आज आतंकवाद तक पहुंच चुका है. दोनों के रिश्ते इस क़दर ख़राब हैं कि 66 वर्षों से बातचीत होने के बाद भी अभी तक कोई समाधान नहीं निकल पाया है. पिछले कुछ वर्षों में संबंधों को पटरी पर लाने की भरपूर कोशिश की गई, लेकिन हर बार कोई ऐसी घटना घट जाती, जिससे वार्ता स्थगित करनी पड़ती. कई बार आतंकी घटनाओं की वजह से वार्ता स्थगित करनी पड़ी. बाद में इस बात की आलोचना भी होने लगी कि यदि पाकिस्तान अपनी हरकतों से बाज नहीं आ रहा, तो फिर उसके साथ वार्ता क्यों की जाए?

साल 2003 में इसी संदर्भ में देश के पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने कहा था कि हम अपने दोस्त तो बदल सकते हैं, लेकिन पड़ोसी नहीं. यह सच भी है. हालांकि, अब मसला इससे भी आगे निकल चुका है. उसके बाद से पाकिस्तान कई प्रधानमंत्रियों को देख चुका है. पाकिस्तान में पहली बार किसी चुनी हुई सरकार ने अपना 5 साल का कार्यकाल पूरा किया. फिलहाल नवाज शरीफ पाकिस्तान के प्रधानमंत्री हैं. उन्होंने भारत के साथ संबंधों को बेहतर बनाने की

**भारत-पाकिस्तान के आपसी संबंधों को विस्तार से देखने की कोशिश करें, तो जनवरी 2013 में अमेरिकी थिंक टैंक ने दोनों देशों के 30 विशेषज्ञों की बैठक दुबई में बुलाई थी. इस बैठक का मकसद था, आपस में विचारों को साझा करना, आपसी मुद्दों एवं चुनौतियों को जानना, किन मुद्दों पर सहमति हो सकती है उनकी पहचान करना और यह भी कि नीति, रणनीति एवं शोध आदि के लिए क्या-क्या क़दम उठाए जा सकते हैं. यह बैठक दोनों देशों के साथ संबंधों को लेकर फिर वार्ता शुरू करने की दिशा में काफ़ी अहम मानी जा रही थी.**

दिशा में कई बयान भी दिए. भारत की बात करें, तो पिछले 10 वर्षों से यहां कांग्रेस पार्टी की अगुवाई वाली संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन की सरकार है. अगली सरकार के चुनाव के लिए मतदान का दौर शुरू हो चुका है और 16 मई को यह साफ़ हो जाएगा कि देश की सत्ता किसके पास जाने वाली है. अगर हालिया रुझानों और मीडिया रिपोर्टों को देखें, तो देश में भाजपा के नरेंद्र मोदी की लहर बताई जा रही है.

इसी संदर्भ में पाकिस्तान का हालिया बयान आया कि भारत में आम चुनाव के बाद बनने वाली नई सरकार के साथ मिलकर काम करने के लिए वह तैयार है. पाकिस्तान के विदेश मंत्रालय की प्रवक्ता तसनीम असलम की तरफ़ से कहा गया कि भारत की जनता नए नेता का चुनाव करेगी. नई दिल्ली में किसी की भी सरकार बने, पाकिस्तान को उससे किसी तरह की समस्या नहीं है. पाकिस्तान की तरफ़ से यह बयान काफ़ी महत्व रखता है, क्योंकि पिछले दिनों वहां के मीडिया और राजनीतिक विश्लेषकों में इस बात की चर्चा थी कि अगर भाजपा के प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार नरेंद्र मोदी प्रधानमंत्री बनते हैं, तो पाकिस्तान के साथ संबंधों में खटास का दौर शुरू हो सकता है. हालांकि, भारत की तरफ़ से ऐसा कुछ नहीं कहा गया. पाकिस्तानी मीडिया में यह बात संभवत: नरेंद्र मोदी की छवि को देखते हुए कही गई. चुनावी सभाओं के दौरान नरेंद्र मोदी ने भी कई बार पाकिस्तान के ख़िलाफ़ कड़े स्वरों का इस्तेमाल किया. लेकिन, यह ग़ौर करने वाली बात है कि दोनों देशों के चुनावों में मतदाताओं को रिझाने के लिए एक-दूसरे के ख़िलाफ़ इस तरह के सख्त क़दम उठाने की बात कही जाती रही है. इससे यह मतलब कतई नहीं निकाला जाना चाहिए कि मोदी अगर प्रधानमंत्री बनते हैं, तो पाकिस्तान के प्रति उनका रवैया एक दुश्मन मुल्क के रूप में रहेगा.

भारत-पाकिस्तान के आपसी संबंधों को विस्तार से देखने की कोशिश करें, तो जनवरी 2013 में अमेरिकी थिंक टैंक ने दोनों देशों के 30 विशेषज्ञों की बैठक दुबई में बुलाई थी. इस बैठक का मकसद था, आपस में विचारों को साझा करना, आपसी मुद्दों एवं चुनौतियों को जानना, किन मुद्दों पर सहमति हो सकती है उनकी पहचान करना और यह भी कि नीति, रणनीति एवं शोध आदि के लिए क्या-क्या क़दम उठाए जा सकते हैं. यह बैठक दोनों देशों के साथ संबंधों को लेकर फिर वार्ता शुरू करने की दिशा में काफ़ी अहम मानी जा रही थी. इसी बैठक के पांच महीने बाद मई में जब नवाज शरीफ प्रधानमंत्री बने, तो उन्होंने भी बयान दिया था कि वह भारत के साथ मिलकर काम करना चाहते हैं. उन्होंने कहा कि वह भारत के साथ द्विपक्षीय संबंधों को सुदृढ़ करना चाहते हैं और भारत के साथ-साथ पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था में सुधार लाना चाहते हैं. नवाज शरीफ ने कहा कि भारत के साथ संबंधों को बेहतर बनाने के लिए वह रिश्तों की उस डोर को पकड़ेंगे, जिसे 1999 में हमने छोड़ दिया था.

ग़ौरतलब है कि पाकिस्तान में किसी भी नागरिक सरकार ने भारत के प्रति स्वतंत्र नीति बनाने की ठोस पहल नहीं की. उसमें सेना का हस्तक्षेप हमेशा से रहा है. आख़िरी बार 1999 में नवाज शरीफ ने दिल्ली से लाहौर के लिए बस चलाने की अनुमति के जरिये एक शुरुआत करने की कोशिश की थी. ऐसा लगा था कि दोनों देशों के संबंधों में एक नए युग की शुरुआत हो रही है, लेकिन चंद महीने के भीतर ही जनरल परवेज मुशर्रफ की अगुवाई में पाक सेना ने उसका गला घोंट दिया. करगिल की घटना हुई. अब एक बार फिर शरीफ ने भारत के साथ संबंधों को सुदृढ़ करने की पहल की है. हालांकि, पाक की तरफ़ से इस तरह के बयान कई बार दिए जा चुके हैं. भारत का कहना था कि पाकिस्तान को वार्ता करने से पहले आतंकवाद जैसे मुद्दों पर ठोस कार्रवाई करके एक भरोसा पैदा करने की आवश्यकता है. बहरहाल, अगर पाकिस्तान की तरफ़ से यह बयान आता है कि आम चुनाव के बाद भारत में किसी भी पार्टी की सरकार बने, नरेंद्र मोदी प्रधानमंत्री बनें या कोई और, वह साथ काम करने को तैयार है, तो इसे सकारात्मक क़दम ही माना जाना चाहिए.■

feedback@chauthiduniya.com

# अमेरिका में भारत की मौजूदगी
# चीन की चिंता बढ़ी

**सोवियत संघ और गुटनिरपेक्षता से बदल कर भारत का झुकाव अमेरिका की ओर बढ़ने लगा. आज स्थिति यह है कि भारत-अमेरिका के बीच व्यापार रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच कर 63.7 अरब डॉलर से भी अधिक का हो गया है. भारत के साथ अमेरिका के संबंधों में प्रगाढ़ता से पड़ोसी देश चीन में बेचैनी का आलम देखा जा रहा है.**

पिछले कुछ वर्षों में अमेरिका में भारत ने अपनी जोरदार उपस्थिति दर्ज की है, चाहे वह सॉफ्टवेयर दिग्गज माइक्रोसॉफ्ट कंपनी द्वारा भारतीय मूल के सत्या नडेला को सीईओ पद पर नियुक्त करना हो या फिर पिछले साल ओबामा प्रशासन द्वारा भारतीय मूल के दर्जन भर से अधिक लोगों की व्हाइट हाउस में नियुक्ति का मामला. इन सभी घटनाक्रमों ने भारत के पड़ोसी देश चीन की चिंता बढ़ा दी है. वर्ष 1991 में सोवियत संघ के विघटन ने अंतरराष्ट्रीय परिदृश्य में एक नई राजनीति को जन्म दिया. यह वही दौर था, जब भारत में आर्थिक उदारीकरण के बीज पड़ने शुरू हो गए थे. भारतीय अर्थव्यवस्था की हालत बद से बदतर होती जा रही थी. 1991 के पहले यानी

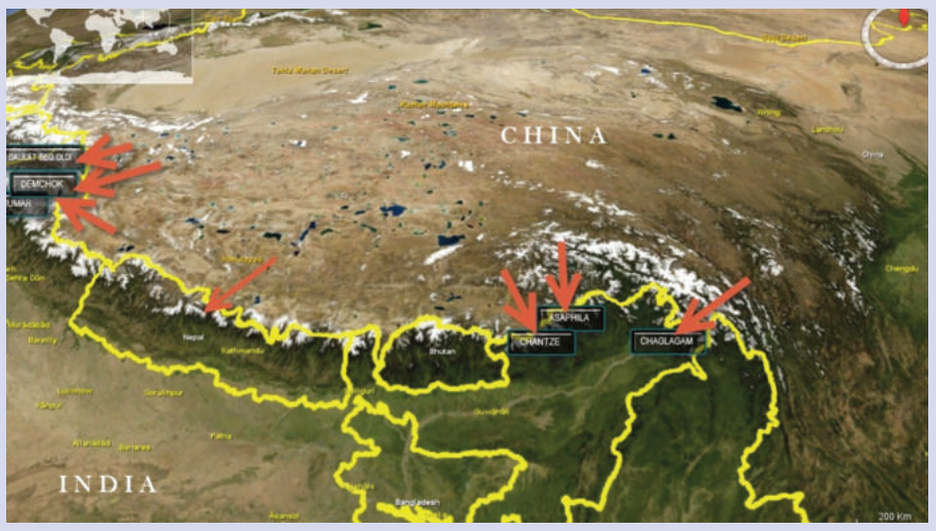


शीतयुद्ध काल में दुनिया के तमाम मुल्क मुख्य तौर पर दो धड़ों में बंटे थे. एक गुट सोवियत संघ की अगुवाई वाला कम्युनिस्ट देशों का था, तो दूसरी ओर पूंजीवाद का झंडाबरदार अमेरिका नेतृत्व की भूमिका में था. हालांकि, एक और खेमा था, जो किसी भी गुट में नहीं था. यह कहलाया गुटनिरपेक्ष देशों का समूह. भारत, मिस्र, श्रीलंका एवं इंडोनेशिया जैसे देश इसके सदस्य थे.

1991 में सोवियत संघ के विघटन के बाद अंतरराष्ट्रीय राजनीति काफी तेजी से बदली. सोवियत संघ का अस्तित्व ख़त्म हो गया और उससे 15 नए देशों का जन्म हुआ. इसके बाद अमेरिका दुनिया का एकमात्र सुपर पावर रह गया. चूंकि अन्य देशों की अर्थव्यवस्था भी चरमराने लगी थी, ऐसे में गुटनिरपेक्ष समूह के सदस्यों का भी रुझान अमेरिका की ओर बढ़ने लगा. यहीं पहली बार भारत ने अपनी अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने के लिए आर्थिक सुधारों का सहारा लिया और अपने बाज़ार दुनिया के लिए खोल दिए. सोवियत संघ और गुटनिरपेक्षता से बदल कर उसका झुकाव अमेरिका की ओर बढ़ने लगा. आज स्थिति यह है कि भारत-अमेरिका के बीच व्यापार रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच कर 63.7 अरब डॉलर से भी अधिक का हो गया है. भारत के साथ अमेरिका के संबंधों में प्रगाढ़ता से पड़ोसी देश चीन में बेचैनी का आलम देखा जा रहा है.

दरअसल, पिछले कुछ वर्षों में तेजी से सामरिक और आर्थिक स्तर चीन के उभार को देखते हुए यह हवा बनने लगी थी कि चीन के रूप में एक नए सुपर पावर का अस्तित्व दुनिया में आ रहा है. चीन ने भी इस दिशा में क़दम उठाने शुरू कर दिए. शी जिनपिंग के राष्ट्रपति बनने के बाद चीन ने आर्थिक तौर पर अमेरिका से रिश्ते बेहतर करने की पहल भी की है. डॉलर और चीनी मुद्रा युआन को लेकर दोनों देशों के बीच काफी टकराहट देखने को मिली थी, लेकिन उन तमाम विवादों से आगे बढ़ते हुए चीन ने अमेरिका के साथ दोस्ती का हाथ बढ़ाया. चीन ने अमेरिका में निवेश किया और लगातार वहां पैर पसार रहा है. लेकिन, हाल में अमेरिका में भारत के बढ़ते प्रभाव को देखते हुए चीन की पेशानी पर बल आने शुरू हो गए हैं. अमेरिकी कंपनियों में भारतीय मूल के प्रमुखों की बढ़ती संख्या चीन की बेचैनी का सबब बनती जा रही है. हाल में सॉफ्टवेयर कंपनी माइक्रोसॉफ्ट ने सीईओ पद पर सत्या नडेला को नियुक्त किया. नडेला के अलावा पेप्सीको की इंद्रा नूई, ड्यूश बैंक के अंशु जैन और मास्टर कार्ड इंक के अजय बंगा पहले से ही पश्चिमी देशों में अपनी सफलता का झंडा बुलंद कर चुके हैं.

हालिया रिपोर्ट, चीन क्यों नहीं दे पा रहा विश्वस्तरीय सीईओ-में कहा गया है कि चीन के मुकाबले भारतीय पश्चिमी देशों में आने के लिए अधिक इच्छुक हैं. वहीं, चीनी लोगों को घरेलू स्तर पर रोज़गार के तमाम अवसर उपलब्ध हैं. नतीजतन, चीनी नागरिक अपना मुल्क को छोड़ना अच्छा नहीं समझते. इसी रिपोर्ट में कहा गया है कि चीन में प्रबंधन स्तर पर लोगों को लगभग एक लाख 31 हज़ार डॉलर तक सालाना मिलते हैं. भारत की तुलना में यह चार गुना अधिक है. भारत में यही वेतन औसतन 35 हज़ार डॉलर के क़रीब है. चीनी नागरिकों के देश न छोड़ने की एक वजह यह भी है कि पिछले कुछ वर्षों में वहां का जीवन स्तर बेहतर हुआ है. वहां हर तरफ़ अवसर हैं. चीन खुद शीर्ष स्तर पर योग्य अधिकारियों की कमी से जूझ रहा है. ऐसे में चीनी नागरिकों का बाहर जाना बेहद अव्यवहारिक लगता है. चीन के बनिस्बत भारत में स्थिति विपरीत है. पिछले कुछ वर्षों में भारत की आर्थिक विकास दर काफी प्रभावित हुई है. अगर अमेरिकी अर्थव्यवस्था की बात करें, तो वह भी पटरी से उतरी हुई थी, लेकिन अचानक अमेरिकी अर्थव्यवस्था के दुरुस्त होने के बाद भारत के साथ उसके संबंधों में एक नई ऊंचाई देखने को मिली है. यह बात भी चीन को चुभ रही है. अमेरिका में भारत के प्रभाव पर चीन की चिंता की एकमात्र वजह यही नहीं है. दरअसल, साल 2013 में राष्ट्रपति बराक ओबामा ने 12 से अधिक भारतीय मूल के अमेरिकी लोगों को व्हाइट हाउस में अहम पदों पर नियुक्त किया. अगर जानकारों की मानें, तो ओबामा प्रशासन में काम करने वाले भारतीय मूल के अमेरिकी नागरिकों की संख्या 50 से भी अधिक है. ये सभी किसी देश के लिए अमेरिका की नीतियों को बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं. इसके अलावा राजनयिक बॉबी जिंदल एवं डिस्ट्रिक एटॉर्नी कमला हैरिस जैसी महत्वपूर्ण शख्सियतें अमेरिका में भारत की उपस्थिति को मजबूती से पेश कर रही हैं. ऐसे में चीन की चिंता लाजिमी है और चीन भी अपनी इस चिंता को बखूबी जानता-समझता है. ■

चंदन कुमार

feedback@chauthiduniya.com

साई

> साई की दृष्टि मात्र से ही हमारे कर्म–बंधन दूर हो जाते हैं और हमें आनंद की प्राप्ति हो जाती है. गंगा में स्नान करने से समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं, लेकिन गंगा भी संतों के आगमन की सदैव उत्सुकतापूर्वक राह देखा करती हैं.

रूपकुंड:

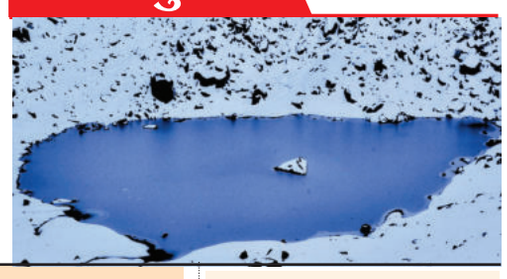

# भक्तों के पालनहार

चौथी दुनिया ब्यूरो

**साई बाबा सभी प्राणियों से समान प्रेम करते थे. उनकी दृष्टि में शत्रु, मित्र, राजा एवं भिक्षुक सब एक समान थे. भक्तों के लिए उन्होंने अपने दिव्य चमत्कार का प्रयोग किया और सदैव उनकी सहायता के लिए तत्पर रहे. उनकी इच्छा के बिना कोई भक्त उनके पास पहुंच भी नहीं सकता था. यदि उनके शुभ कर्म उदित नहीं हुए हैं, तो उन्हें बाबा की स्मृति भी कभी नहीं आई और न उनकी लीलाएं उनके कानों तक पहुंच सकीं. तब फिर बाबा के दर्शनों का विचार भी उन्हें कैसे आ सकता था. बहुत सारे लोगों को साई बाबा के दर्शन की अभिलाषा थी, लेकिन उन्हें बाबा के महासमाधि लेने तक दर्शन का कोई मौक़ा प्राप्त न हो सका.**

में साई बाबा का सदा प्रेमपूर्वक स्मरण करना चाहिए. साई बाबा सदैव अपने भक्तों के कल्याण के लिए तत्पर तथा आत्मलीन रहते थे. उनका स्मरण करने से जीवन और मृत्यु की पहेली सुलझ जाती है. ईश्वर के अवतार का ध्येय साधुजनों का परित्राण और दुष्टों का संहार करना है, लेकिन संतों का कार्य तो सर्वथा भिन्न है. संतों के लिए साधु और दुष्ट प्राय:एक समान हैं. संतों को प्रथम चिंता दुष्टों की होती है और वे उन्हें सही पथ पर लाने के लिए प्रयास करते रहते हैं. साई भक्तों के कष्ट दूर करते हैं और वह अंधकार का नाश करने के लिए सूर्य के समान हैं. साई बाबा अपने भक्तों के कल्याण के लिए अवतरित हुए थे. वह ज्ञान ज्योति के स्वरूप थे और उनकी दिव्यप्रभा अपूर्व थी. साई बाबा सभी प्राणियों से समान प्रेम करते थे. उनकी दृष्टि में शत्रु, मित्र, राजा एवं भिक्षुक सब एक समान थे. भक्तों के लिए उन्होंने अपने दिव्य चमत्कार का प्रयोग किया और सदैव उनकी सहायता के लिए तत्पर रहे. उनकी इच्छा के बिना कोई भक्त उनके पास पहुंच भी नहीं सकता था. यदि उनके शुभ कर्म उदित नहीं हुए हैं, तो उन्हें बाबा की स्मृति भी कभी नहीं आई और न उनकी लीलाएं उनके कानों तक पहुंच सकीं. तब फिर बाबा के दर्शनों का विचार भी उन्हें कैसे आ सकता था. बहुत सारे लोगों को साई बाबा के दर्शन की अभिलाषा थी, लेकिन उन्हें बाबा के महासमाधि लेने तक दर्शन का कोई मौक़ा प्राप्त न हो सका. बाबा के दर्शन से वंचित रहने वाले भक्त यदि उनकी लीलाओं का श्रवण करें, तो दर्शन की अभिलाषा पूर्ण हो जाती है. साई बाबा की लीला अपरंपार थी. वह जिसे चाहते थे, वही उनके पास अधिक दिनों तक ठहर सकता था. अगर किसी की इच्छा होती भी थी, तो उसे बाबा किसी न किसी बहाने वहां से वापस भेज देते थे. साई बाबा धन्य हैं. उनके दर्शन मात्र से भक्तों की अज्ञानता दूर हो जाती है और वह संसार के उस ज्ञान को प्राप्त कर लेता है, जिससे वह वंचित रहता है. उनका क्षण मात्र भी अवलोकन करने से भक्तों के पूर्व जन्मों के समस्त पापों का नाश हो जाता है और उसे सुखों की प्राप्ति होती है.

साई की दृष्टि मात्र से ही हमारे कर्म–बंधन दूर हो जाते हैं और हमें आनंद की प्राप्ति हो जाती है. गंगा में स्नान करने से समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं, लेकिन गंगा भी संतों के आगमन की सदैव उत्सुकतापूर्वक राह देखा करती है. शिरडी में भी साई बाबा अपने भक्तों की राह देखते हैं कि वे उनके दर्शनों के लिए कब आते हैं. शिरडी के साई बाबा के दर्शन से भक्तों की सभी मनोकामनाएं पूर्ण हो जाती हैं. ■

feedback@chauthiduniya.com

### साई के ग्यारह वचन

1–जो शिरडी आएगा, आपद दूर भगाएगा.

2–चढ़े समाधि की सीढ़ी पर, पैर तले दु:ख की पीढ़ी पर.

3–त्याग शरीर चला जाऊंगा, भक्त हेतु दौड़ा आऊंगा.

4–मन में रखना दृढ़ विश्वास, करे समाधि पूरी आस.

5–मुझे सदा जीवित ही जानो, अनुभव करो सत्य पहचानो.

6–मेरी शरण आ खाली जाए, हो कोई तो मुझे बताए.

7–जैसा भाव रहा जिस मन का, वैसा रूप हुआ मेरे मन का.

8–भार तुम्हारा मुझ पर होगा, वचन न मेरा झूठा होगा.

9–आ सहायता लो भरपूर, जो मांगा वही नहीं है दूर.

10–मुझमें लीन वचन मन काया, उसका ऋण न कभी चुकाया.

11–धन्य-धन्य वह भक्त अनन्य, मेरी शरण तज जिसे न अन्य.

### साई भक्तों!

आप भी चौथी दुनिया को साई से जुड़ा लेख या संस्मरण भेज सकते हैं. मसलन, साई से आप कब और कैसे जुड़े. साई की कृपा आपको कब से मिलनी शुरू हुई. आप साई को क्यों पूजते हैं. कैसे बने आप साई भक्त. साई बाबा का जीवन और चरित्र आपको किस तरह से प्रेरित करता है. साई बाबा के बारे में अनेक किंवदंतियां हैं, क्या आपके पास भी कुछ कहने के लिए है? अगर हां, तो केवल 500 शब्दों में अपनी बात कहने की कोशिश करें और नीचे दिए गए पते पर भेजें.

चौथी दुनिया
एफ–2, सेक्टर–11, नोएडा (गौतमबुद्ध नगर), उत्तर प्रदेश, पिन–201301
ई–मेल feedback@ chauthiduniya.com

सप्तम ज्योतिर्लिंग नागेश्वर

# शिव की महिमा अपरंपार

धर्मेंद्र सिंह

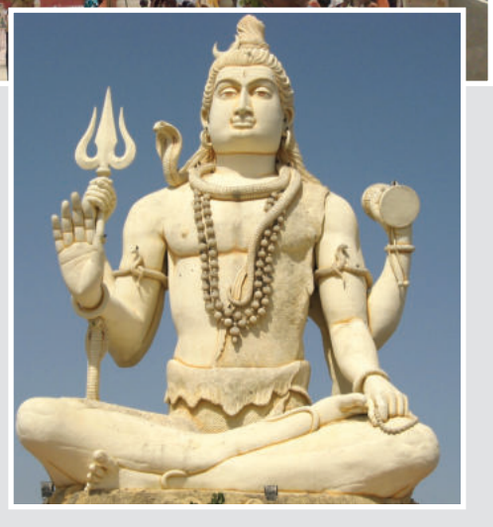

नागेश्वर ज्योतिर्लिंग एक विश्वविख्यात प्रसिद्ध मंदिर है. यहां भगवान शिव का सातवां ज्योतिर्लिंग स्थापित है. यह मंदिर गुजरात राज्य में द्वारकापुरी से 17 किमी की दूरी पर स्थित है. हिंदू धर्म के अनुसार, नागेश्वर को नागों का ईश्वर कहा जाता है. रुद्र संहिता में नागेश्वर को दारुकावने नागेशं कहा गया है. पुराणों में इस ज्योतिर्लिंग के दर्शन की महिमा का बखान है. मान्यता है कि जो भी श्रद्धापूर्वक इसकी उत्पत्ति और माहात्म्य की कथा सुनेगा, उसे उसके सारे पापों से मुक्ति मिल जाएगी और अंत में समस्त सुखों का भोग करते हुए उसे भगवान शिव की कृपा से मोक्ष की प्राप्ति हो जाएगी.

नागेश्वर ज्योतिर्लिंग की उत्पत्ति के बारे में मान्यता है कि सुप्रिय नामक एक बड़ा ही धर्मात्मा और शिव का अनन्य भक्त था. वह निरंतर शिव की आराधना, पूजन और ध्यान में लीन रहता था. अपने सारे कार्य वह भगवान शिव का नाम लेकर करता था. मन, वचन, धर्म, कर्म से वह पूर्णत: शिव में लीन रहता था. उसकी इस शिव भक्ति को देखकर एक दारुक नामक राक्षस उससे बहुत द्वेष रखता था. राक्षस को भगवान शिव की यह पूजा किसी प्रकार से अच्छी नहीं लगती थी. वह निरंतर इस प्रयत्न में लगा रहता था कि सुप्रिय की पूजा–अर्चना में किसी भी तरह विघ्न पहुंचाया जाए. एक बार सुप्रिय नौका पर सवार होकर कहीं जा रहा था, तभी उस दुष्ट राक्षस दारुक ने अवसर का लाभ उठाते हुए नौका पर आक्रमण कर दिया. उसने नौका पर सवार सभी यात्रियों को पकड़ कर अपनी राजधानी में ले जाकर कैद कर लिया. सुप्रिय कारागार में भी अपने नियम के अनुसार भगवान शिव की पूजा–अर्चना करने लगा और अन्य बंदी यात्रियों को भी वह शिवभक्ति की प्रेरणा देने लगा. दारुक ने जब अपने सेवकों से सुप्रिय के विषय में यह समाचार सुना, तब वह अत्यंत क्रुद्ध होकर कारागार में आ पहुंचा. सुप्रिय भगवान शिव के चरणों में दोनों आंखें बंद किए हुए ध्यान लगाए बैठा था. उस राक्षस ने उसकी मुद्रा देखकर अत्यंत क्रोधित होकर तेज आवाज में उससे कहा, अरे दुष्ट वैश्य, तू आंखें बंद कर इस समय यहां कौन से उपद्रव और षड्यंत्र करने की बातें सोच रहा है? उसके इतना क्रोध करने के बाद भी धर्मात्मा शिवभक्त सुप्रिय की समाधि भंग नहीं हुई. अब तो वह राक्षस क्रोध से एकदम पागल हो उठा. उसने तत्काल अपने अनुचरों को सुप्रिय एवं अन्य सभी बंदियों को मार डालने का आदेश दे दिया. सुप्रिय उसके इस आदेश से तनिक भी विचलित और भयभीत नहीं हुआ. वह एकाग्र मन से अपनी और अन्य बंदियों की मुक्ति के लिए भगवान शिव से प्रार्थना करने लगा. उसे यह पूर्ण विश्वास था कि उसके आराध्य भगवान शिव इस विपत्ति से उसे अवश्य ही छुटकारा दिलाएंगे. उसकी प्रार्थना सुनकर भगवान भोले नाथ उसी क्षण उस कारागार में एक ऊंचे स्थान पर एक चमकते हुए सिंहासन पर ज्योतिर्लिंग के रूप में प्रकट हो गए. उन्होंने सुप्रिय को दर्शन देने के साथ–साथ उसे अपना अस्त्र भी दिया, जिससे वह राक्षस दारुक और उसकी सेना का वध करके शिवधाम चला गया. भगवान शिव के आदेश से ही इस ज्योतिर्लिंग का नाम नागेश्वर पड़ा.

**कैसे जाएं:–** अगर आप नागेश्वर जाना चाहते हैं, तो सड़क, रेल, हवाई मार्ग से जा सकते हैं. नागेश्वर जाने के लिए अहमदाबाद और जामनगर से सीधे बसें मिलती हैं. रेल मार्ग से जाने के लिए आप देश के किसी प्रमुख स्टेशन से ट्रेन द्वारा द्वारका जाएं. वहां से टैक्सी, बस अथवा ऑटो से नागेश्वर मंदिर जा सकते हैं. हवाई मार्ग से जाने के लिए देश के किसी भी प्रमुख हवाई अड्डे से जामनगर जाएं, जहां से नागेश्वर केवल 137 किमी दूर है. जामनगर से आप बस, रेल अथवा टैक्सी द्वारा नागेश्वर जा सकते हैं. ■

feedback@chauthiduniya.com

रूपकुंड

## एक रहस्यमयी झील

विनीता यशस्वी

रूपकुंड उत्तराखंड के चमोली ज़िले में स्थित एक झील है, जिसकी समुद्र तल से ऊंचाई 5029 मीटर है. रूपकुंड उच्च हिमालयी क्षेत्र में हिमालय की त्रिशूल और नंदाघुंटी पर्वत शृंखलाओं की गोद में बसा है. रूपकुंड विश्वविख्यात पर्यटन स्थल होने के साथ ही उत्तराखंडवासियों के लिए एक पवित्र धार्मिक स्थल भी है, जहां हर वर्ष सितंबर माह में नंदा देवी यात्रा का आयोजन होता है और प्रत्येक बारह वर्षों में नंदा राजजात यात्रा का आयोजन किया जाता है. यह झील साल के ज़्यादातर महीनों में जमी ही रहती है. रूपकुंड अपने चारों ओर बिखरे हुए मानव कंकालों के लिए भी प्रसिद्ध है, जो इस झील को रहस्यमयी बनाते हैं. 1960 में वैज्ञानिकों द्वारा इन कंकालों की कराए गए कार्बन डेटिंग से पता चलता है कि ये मानव कंकाल 12वीं सदी से 15वीं सदी के हैं. यहां मानव शरीर, कपड़े, जूते, बर्तन आदि कई तरह के अवशेष मिलते हैं. इन कंकालों की लंबाई 10 फीट तक नापी गई है. हालांकि मानव कंकालों की संख्या निश्चित नहीं है, फिर भी एक अनुमान के अनुसार यह लगभग 500 के आसपास है, जो अचानक हुई ओलावृष्टि के शिकार हो गए थे.

इन कंकालों के विषय में कुछ लोक कथाएं भी प्रचलित हैं. उनमें से एक लोककथा के अनुसार, ये अवशेष कन्नौज के राजा यशोधवल, उनकी पत्नी, बच्चों, परिवार के अन्य सदस्यों एवं उनके साथ आए दूसरे यात्रियों के हैं. कहा जाता है कि उन्होंने यहां आने पर राजजात के नियमों एवं मर्यादा का पालन नहीं किया, जिसके चलते उन्हें देवी के गुस्से का शिकार होना पड़ा था. दूसरी लोककथा के अनुसार, ये अवशेष कन्नौज के राजा जसधवल के हैं, जो यहां नंदा राजजात के दौरान आया था और साथ में नर्तकियों को भी लाया था. जब नर्तकियों ने नृत्य शुरू किया, तो देवी ने उन्हें पत्थर बना दिया, जिस कारण इस जगह को पाथर नचनियां कहा जाता है. राजजात में राजा की पत्नी को प्रसव भी हुआ, जिस कारण देवी नाराज़ हो गईं और दंड स्वरूप उन्होंने एक बर्फीले तूफान द्वारा राजा की पूरी सेना नष्ट कर दी, वही अवशेष यहां पड़े हैं. आज भी वैज्ञानिक इस अनसुलझे रहस्य से पर्दा उठाने की कोशिश में लगे हुए हैं. रूपकुंड जाने वाला रास्ता बेहद खूबसूरत है, जिसे रास्ते में पड़ने वाले बड़े–बड़े बुग्याल और भी खूबसूरत बना देते हैं. जुलाई से सितंबर के बीच यहां ब्रह्म–कमल के फूल भी दिखाई देते हैं. इसके अलावा, यह क्षेत्र कई किस्म की जड़ी–बूटियों के लिए भी प्रसिद्ध है. ■

feedback@chauthiduniya.com

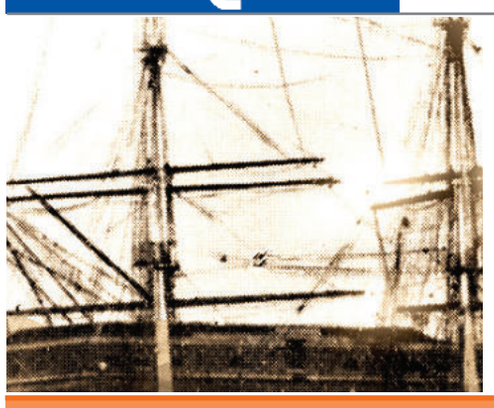

सुजारिया देवी 1903 में क्लाउडिया नामक जहाज पर सवार हुई थीं और सफ़र के दौरान ही उन्होंने एक बच्चे को जन्म दिया और उसका नाम रखा था लाल बहादुर. तीन महीने की यात्रा के बाद यह जहाज़ डेमेरारा, गयाना में किनारे लगा था. गयत्रा के मन में यह सवाल था कि क्या सुजारिया घर से भागी हुई लड़की थीं, विधवा थीं, वेश्या थीं या सिर्फ़ एक दुस्साहसी बागी? इसका कोई स्पष्ट जवाब उन्हें बिहार आकर भी नहीं मिल सका.

# जड़ों की खोज का अनूठा प्रयास

शफीक आलम

अपनी जड़ों की खोज में निकली एक नौजवान गुयानीज़–अमेरिकी महिला पत्रकार गायत्रा बहादुर की साधारण और व्यक्तिगत भारत यात्रा एक महायात्रा बन गई. न सिर्फ़ उस पत्रकार और उसके अपने परिवार की जड़ों की खोज, बल्कि उन हज़ारों महिलाओं की, जो हालात से तंग आकर या किसी और सामाजिक मजबूरी की वजह से एक कभी न ख़त्म होने वाली यात्रा पर निकली थीं. कुली वुमन: दी ओडेसी ऑफ़ इंडेंचर, उसी यात्रा का वृतांत है.

इस यात्रा का कारण वह रिक्ति थी, जो 1830 के दशक में उस समय पैदा हुई थी, जब ब्रिटेन एवं अन्य यूरोपीय देशों ने गुलामी प्रथा के अंत की घोषणा की थी और ब्रिटिश कालोनियों के अश्वेत अफ्रीकी गुलामों ने इस नई आज़ादी का लाभ उठाते हुए ब्रिटिश साम्राज्य के उपनिवेशों में फैले प्लांटेशन, खास तौर पर गन्ने के खेतों, में काम करने से साफ़ इंकार कर दिया था. उनकी मांग थी, बेहतर मज़दूरी और उनके साथ बेहतर मानवीय बर्ताव. उनकी यह मांग तो पूरी नहीं हुई, अलबत्ता उनकी रिक्ति पूरी करने और इस समस्या से निपटने का एक सरल, कारगर एवं उपनिवेशवादी उपाय अनुबंध मज़दूर या गिरमिटिया मज़दूरी (इंडेंचर लेबर) के रूप में ढूंढ लिया गया. गिरमिटिया मज़दूरी गुलामी प्रथा का एक नया और कुख्यात रूप था. इसका सिलसिला 1834 में प्रारंभ हुआ था, जो गांधी जी के हस्तक्षेप से 1917 में समाप्त हुआ था. भारत की विशाल जनसंख्या, मुख्य रूप से बिहार एवं पूर्वी उत्तर प्रदेश के किसान, अंग्रेजों की नई दमनकारी नीतियों के कारण भुखमरी का शिकार थी. इसलिए मज़दूरों की भर्ती के काम में लगे एजेंटों, जिन्हें अहरकटिया भी कहा जाता था, द्वारा उन्हें एक निहायत ही मुश्किल यात्रा के लिए एक बेहतर ज़िंदगी का झांसा देकर तैयार कर लेना कोई मुश्किल काम नहीं था. उदाहरण के लिए अनेक लोग ऐसे थे, जो सूरीनाम को श्रीराम समझ कर वहां जाने के लिए तैयार हो गए थे. इसका ज़िक्र सूरीनाम के एक लोकप्रिय गीत में भी है, श्रीराम का नाम सुनके बाबा चले कलकत्ता.

गायत्रा को इस अनोखी खोज का ख्याल कैसे आया? गुयाना या दूसरे अन्य कैरेबियाई उपनिवेशों में जो नस्ली अनुक्रमांक था, उसमें भारतीयों का स्थान अंग्रेजों, स्कॉट एवं अफ्रीकन के बाद सबसे नीचे था. दूसरी वजह यह थी कि दूसरे नए स्वतंत्र उपनिवेशों की तरह स्वतंत्रता के साथ गुयाना में भी बड़े पैमाने पर भारतीय विरोधी नस्ली हिंसा हुई थी. नतीजतन, भारतीय मूल के वे लोग, जो अमेरिका या कनाडा जा सकते थे, वहां चले गए. लेखिका का परिवार भी 1980 के दशक में न्यूयॉर्क में जाकर बस गया. लेकिन, नस्ली भेदभाव से उनका पीछा न्यूयॉर्क में भी नहीं छूटा. गायत्रा खुद लिखती हैं, मैं एक अल्पसंख्यक की तरह एक ऐसे शहर में पली–बढ़ी, जो नस्लवाद के शिकार अल्पसंख्यकों के लिए बसा था, जिनकी चमड़ी के काले रंग के बावजूद खुद को उनके साथ खड़ा पाती थी. अब ऐसे में मैं खुद को अपनी मातृभूमि को नस्लवाद से पूर्ण इतिहास में कहां देखती? इस पहचान के सवाल के लिए मुझे कहीं और देखना था, इसलिए मैंने सामूहिक (पॉलिटिकल) की बजाय व्यक्तिगत को चुना.

पत्रकार गायत्रा की इस व्यक्तिगत खोज का आगाज़ गंगा नदी के उत्तर में स्थित बिहार के एक पिछड़े इलाक़े से हुआ. यह वह इलाका था, जिसे प्रसिद्ध त्रिनिदादी–ब्रिटिश लेखक वी एस नायपॉल के छोटे भाई शिवा नायपॉल ने अंधकार में डूबे हुए क्षेत्र का दिल कहा था. धरती के इस भाग

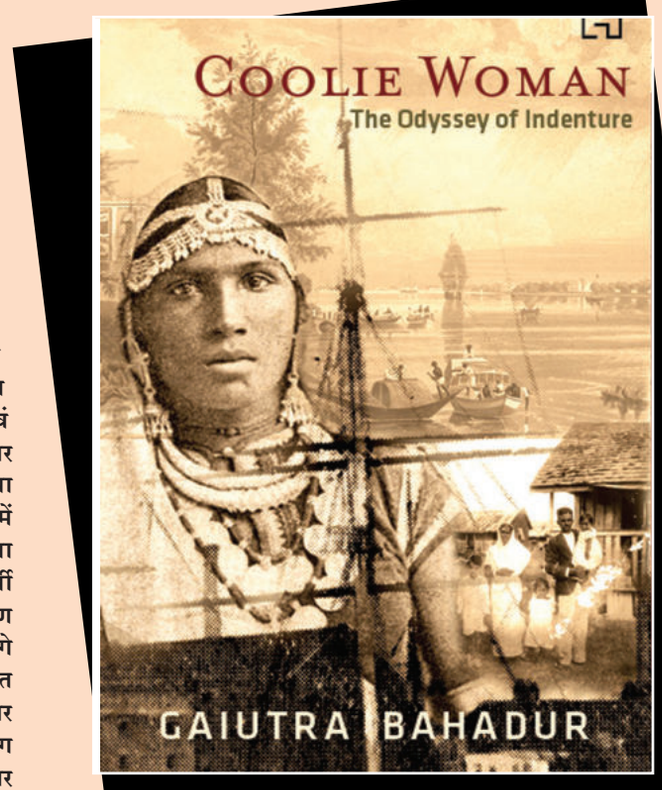


**समीक्ष्य पुस्तक :** कुली वीमेन
**लेखिका :** गायत्रा बहादुर
**भाषा:** अंग्रेजी, पृष्ठ: 312
**प्रकाशक :** हैचेट इंडिया
**मूल्य :** 599 रुपये
**ई–बुक :** 293 रुपये

का पिछड़ापन गायत्रा पर उसी वक़्त ज़ाहिर हो गया, जब वह गंगा के किनारे सड़क पर आईं. सड़क इतनी खस्ता हालत में थी कि उनकी कार लड़खड़ाती, बल खाती, संभलती, किसी तरह आगे बढ़ने की कोशिश कर रही थी. यद्यपि सड़क के दोनों तरफ़ लगे सरसों के फूल एक खूबसूरत नज़ारा पेश कर रहे थे, लेकिन अपनी लंबाई से दो गुनी ऊंची घास का बोझ ढोते बच्चे, सड़क के किनारे फल–सब्ज़ियां बेचती औरतें और बदहाल सड़क इस ख़ूबसूरत मंज़र पर धब्बा लगा रहे थे. गायत्रा बहादुर अपनी खोज के सिलसिले में एक सुराग (लीड) का पीछा करने और अपने खानदान की भारत से गयाना और गयाना से अमेरिका की यात्रा की गुत्थी सुलझाने निकली थीं. वह सुराग था, उनकी परदादी सुजारिया देवी का इमीग्रेशन पास, जिसे गायत्रा के पिता ने संभाल कर रखा था.

बहरहाल, यही इमीग्रेशन पास था, जो उल्लेखनीय रूप से उस अनोखे ख़ज़ाने की खोज का कारण बना, जो अब तक लंदन और गयाना के पुरातत्व विभाग की फाइलों में धूल खा रहा था और बिहार के एक छोटे से गांव में कहीं गुम था. गायत्रा के पास इस इमीग्रेशन पास के अलावा कुछ भी नहीं था. इस पास में सुजारिया के बारे में जो जानकारी दर्ज थी, वह चौंकाने वाली थी. इमिग्रेंट नंबर: 96153, नाम: शिवजरी देवी, उम्र: 27 साल, गांव: बुड़हुपुर, थाना: मांझी, ज़िला: सारण, क़द: पांच फीट साढ़े चार इंच, जाति: ब्राह्मण. सोने पर सुहागा यह कि 4 महीने की गर्भवती और पति के बिना एक अनजान और ख़तरनाक यात्रा पर निकली थीं. गायत्रा के पास 100 साल से ज़्यादा के फासले को पाटने या कुछ कम करने के लिए बस यही एक हथियार था और भरोसा था, बिहार और दिल्ली में मौजूद कुछ विशेषज्ञों या तथाकथित विशेषज्ञों का, जिनमें से कुछ ने कैरेबियाई देशों के चंद बड़े लोगों के तार भारत में उनके रिश्तेदारों से सफलतापूर्वक जोड़े थे.

सुजारिया देवी 1903 में क्लाउडिया नामक जहाज पर सवार हुई थीं और सफ़र के दौरान ही उन्होंने एक बच्चे को जन्म दिया और उसका नाम रखा था लाल बहादुर. तीन महीने की यात्रा के बाद यह जहाज़ डेमेरारा, गयाना में किनारे लगा था. गयत्रा के मन में यह सवाल था कि क्या सुजारिया घर से भागी हुई लड़की थीं, विधवा थीं, वेश्या थीं या सिर्फ़ एक दुस्साहसी बागी? इसका कोई स्पष्ट जवाब उन्हें बिहार आकर भी नहीं मिल सका. लेकिन, इस अद्भुत कहानी की खोज के दौरान जो तथ्य सामने आए, उनसे गिरमिटिया मज़दूरी के इतिहास के अंधकार में डूबे हुए एक प्रमुख पहलू पर रोशनी पड़ती है. सुजारिया देवी की कहानी कोई अनोखी कहानी नहीं मालूम होती, बल्कि यह एक आम कहानी प्रतीत होती है. यह कहानी ज़िंदगी के तहदार पहलुओं से न सिर्फ़ पर्दा उठाती है, बल्कि इतिहास को एक नए दृष्टिकोण से देखने की एक कामयाब कोशिश भी करती है.

इस कहानी में जहां एक औरत की मृत्यु–शैय्या है, वहीं एक बच्चे के जन्म का भी रोजनामचा है. जहां एक तरफ़ किसी के पागलपन का उल्लेख है, वहीं उसे पागल बनाकर आत्महत्या के लिए मजबूर करने का भी ज़िक्र है. जहां एक तरफ़ अपने पति को छोड़ने का मामला है, वहीं पति द्वारा ठुकराए जाने का किस्सा भी मौजूद है. कहानी में जैसे–जैसे सुजारिया की ज़िंदगी की तहें खुलती हैं, वैसे–वैसे गिरमिटिया मज़दूरी के अंधकार में डूबे हुए पहलू भी प्रज्जवलित होते जाते हैं. चूंकि गिरमिटिया मज़दूरी का इतिहास बहुत मज़बूती के साथ भारत से जुड़ा हुआ है, इसलिए इस किताब का अनुवाद हिंदी और दूसरी भारतीय भाषाओं में भी होना चाहिए. इस किताब में इतिहास, यात्रा वृतांत और पत्रकारिता मिलकर एक हो जाते हैं. अभी हाल में इसे प्रतिष्ठित जॉर्ज ओरवेल पुरस्कार के लिए सूचीबद्ध किया गया है. ■

feedback@chauthiduniya.com

## कविताएं

### चुनावी दोहे

आनंद फैजाबादी

प्यास मेरे लहू से बुझाता है तू,
कुर्सियां मरघटों पर बिछाता है तू.
मैं आख़िर तुझे वोट कैसे करूं,
नर्करूपी सियासत चलाता है तू.
इस चुनाव में लग रहा मामला संगीन,
कुछ के मुख ताला पड़ा, कुछ बैठे गमगीन.
ख़तरनाक है दिख रहा इस बार आयोग,
लगे खोपड़ी पीटने, अब तो नेता लोग.
वोटर के घर जा रहे नेता अपने आप,
दुआ बंदगी कर रहे, कह वोटर को बाप.
वोटर खुद से कर रहा अब तो पश्चाताप,
कौन जन्म के उदय हो गए, भगवन मेरे पाप.
सत्ता जिनको सौंप दी, वही हो गए चोर,
वोट उन्हें कैसे करूं, होकर भाव विभोर.

---

### अंधकार

शफीक आलम

वो कर्मिंगाह है!
वहां अंधरे शिकारी ने,
उजाले की उम्मीद का सपना दिखाकर
बहुतों को लूटा!
वो,
वहां पर जो सज्जन
खुद ही,
खुद को समझा रहे हैं
मन ही मन मुस्कुरा रहे हैं!
उन्हें भी इसी अंधरे ने
पहली बारिश की मस्त हवाओं
की नर्म थपकी से बेबस किया था
उसी के असर में
वो भी अंधेरा मिटाने
चले आए थे!

feedback@chauthiduniya.com

## खरी–खोटी

# करे कोई, सुने कोई

महेंद्र अवधेश

भइयालाल गली से गुजर रहे थे, तभी उनकी नज़र एक जगह चख–चख कर रहे कुछ लोगों पर पड़ी. भइयालाल की जिज्ञासा बढ़ी कि आख़िर बात क्या है? नज़दीक जाकर देखा, तो कल्लन हेयर ड्रेसर, चक्की वाले शर्मा, उनके पड़ोसी राव साहब और आसपास की दो–तीन महिलाएं, सबके सब मिलकर गली बनाने वाले ठेकेदार को कोस रहे थे. वजह यह कि गली बनने के पंद्रह दिनों बाद ही पछाड़ खाने यानी उखड़ने लगी थी.

शर्मा बोले, सारा पैसा हजम कर गया. एक रुपये में सिर्फ़ दस–बीस पैसे भर काम करते हैं ये ठेकेदार और सारी रकम डकार जाते हैं. तभी तो देश जहां का तहां है, हमारा इलाका जहां का तहां है, हम अक्सर जलभराव का सामना करते हैं. खुद तो एक काम में दो साल का हिसाब–किताब बना लेते हैं और भुगतने के लिए हमें छोड़ देते हैं.

आप सही कहते हो शर्मा जी, न उसने ढंग से रोड़ी कुटवाई, न मिट्टी डलवाई और सीमेंट के नाम पर तो सिर्फ़ खेल होता है, कल्लन हेयर ड्रेसर ने शर्मा की बात का समर्थन करते हुए राव साहब की ओर देखा. राव साहब भला कहां चूकने वाले थे, बोले, अरे भाई, हर जगह भ्रष्टाचार का बोलबाला है, जिसे देखो उसी का हाथ कमीशनखोरी में काला है, ग़रीबों का निकल गया दीवाला है.

अमां कविता क्यों कर रहे हो? यहां समस्या पर बात हो रही है, आप हैं कि जहां मौक़ा देखा, तुकबंदी चालू कर दी, चक्की वाले शर्मा जी ने बहस में अपनी टांग अड़ाते हुए कहा.

कविता नहीं कर रहा हूं, बात को अपने अंदाज में कह रहा हूं, राव साहब ने सफाई पेश करते हुए कहा, कविता या तो दु:ख में सूझती है या सुख में. मेरी तुकबंदी का अर्थ बूझोगे, तो समझ जाओगे कि मैंने कविता में आख़िर कहा क्या है. वही बात कही है, जो आप सब कह रहे हैं. जिस समस्या से आप दो–चार हैं, उससे हम कहीं अलग थोड़े हैं.

अब तक शांत खड़ी महिलाओं ने भी राव के सुर में सुर मिलाया. एक बोली, हम तो कहते हैं कि अबकी जब ठेकेदार यहां आसपास नज़र आए, तो उसे घेरकर पीटना चाहिए और फिर पूछना चाहिए कि उसने ऐसा घटिया काम क्यों किया? क्या उसके घर–परिवार, बीवी–बच्चे नहीं हैं? कुछ तो डरना चाहिए, सोचना चाहिए कि ऐसा करना पाप है. दूसरी बोली, अरे, उसका परिवार यहां थोड़े ही रहता है, जो वह सोचेगा कि हम गलत कर रहे हैं या सही. हम ठीक कह रहे हैं न?

बिल्कुल नहीं, क्योंकि परिवार कहीं भी रहे, हमारे हर सही–गलत काम का असर उस पर पड़ता ज़रूर है, एक अन्य महिला ने पहले वाली महिला को ज्ञान दिया.

भइयालाल अब तक बड़े ध्यान से सबकी बातें सुन रहे थे. वह कुछ और नज़दीक जाकर बोले, गली निर्माण में गड़बड़ी के लिए ज़िम्मेदार कोई और है, ठेकेदार से कहीं ज़्यादा. अरे भाई, जब ठेकेदार को 100 रुपये के काम में केवल 50–55 रुपये हाथ आएंगे, बाकी के पैसे बाबू–अफसर और नेता खा जाएंगे, तो वह हमारी–आपकी गली में सीमेंट की जगह रेत नहीं मिलाएगा, तो और क्या करेगा? ठेका मिलना–टेंडर पास होना कोई हंसी–ठट्ठे का खेल नहीं है. इस बाबू से उस बाबू, इस अफसर से उस अफसर तक चक्कर पर चक्कर लगाता है ठेकेदार. नेता और पुलिस को पूजता है घाते में. जब 100 के काम पर 55 मिलेंगे, तो 20–25 वह अपने और परिवार के लिए भी तो बचाएगा या नहीं? हम उसे पानी पी–पीकर कोस रहे हैं, क्योंकि वह हमारे सामने आता है. बाकी लोग पर्दे के पीछे आधा पैसा खा जाते हैं, उनका कुछ नहीं बिगड़ता. इसे कहते हैं, करे कोई, सुने कोई. समझे! ■

**अबकी जब ठेकेदार यहां आसपास नज़र आए, तो उसे घेरकर पीटना चाहिए और फिर पूछना चाहिए कि उसने ऐसा घटिया काम क्यों किया? क्या उसके घर–परिवार, बीवी–बच्चे नहीं हैं? जब ठेकेदार को 100 रुपये के काम में केवल 50–55 रुपये हाथ आएंगे, बाकी के पैसे बाबू–अफसर और नेता खा जाएंगे, तो वह हमारी–आपकी गली में सीमेंट की जगह रेत नहीं मिलाएगा, तो और क्या करेगा? ठेका मिलना–टेंडर पास होना कोई हंसी–ठट्ठे का खेल नहीं है. इस बाबू से उस बाबू, इस अफसर से उस अफसर तक चक्कर पर चक्कर लगाता है ठेकेदार. नेता और पुलिस को पूजता है घाते में.**

mahendra.awdhesh@gmail.com

# सोनी की एक्स एवी-712 बीटी

कार चलाने में आसानी हो, इसके लिए सोनी ने इन-कार एवी सेंटर हेड यूनिट एक्सएवी-712 बीटी लॉन्च किया है. यह चालक को ड्राइविंग के दौरान म्यूजिक, नेविगेशन और एंड्रॉयड स्मार्ट फोन ऐप्स की सुविधा देती है. इसमें डबल-डिन मल्टीमीडिया सेंटर है, जो आसानी से स्मार्ट फोन से कनेक्ट हो सकता है. इसमें मिरर लिंक टेक्नोलॉजी है, जिससे एवी सेंटर हेड यूनिट के साथ स्मार्ट फोन की स्क्रीन दोनों ओर से कनेक्ट की जा सकती है. इसमें ऐप रिमोट वर्जन 2.0 का सपोर्ट है. इससे ड्राइविंग के दौरान इनकमिंग टेक्स्ट मैसेजिंग, ट्वीट्स और कैलेंडर रिमाइंडर भी आसानी से पढ़े जा सकते हैं. एमएचएल या एचडीएमएल टेक्नोलॉजी होने से यूजर हेड यूनिट डिस्प्ले के जरिये ऑडियो और वीडियो कंटेंट को एंजॉय कर सकता है. इसकी क़ीमत 27,995 रुपये है.■

# सैमसंग की नई गैलेक्सी टैब सीरीज

**ये टैबलेट्स 1.2 गीगाहर्ट्ज क्वाडकोर प्रोसेसर, 1.5 जीबी रैम और 16 जीबी इंटरनल स्टोरेज के साथ हैं. 7 इंच गैलेक्सी टैब-4 में 8 जीबी वैरिएंट मॉडल का भी विकल्प मिलेगा.**

*गैलेक्सी टैब-4 7.0 की बैटरी के बारे में कोई जानकारी नहीं दी गई. फोटोग्राफी के लिए 3 मेगा पिक्सल का मुख्य कैमरा और 1.3 मेगा पिक्सल का सेकेंड्री कैमरा है.*

सैमसंग ने गैलेक्सी टैब-4 सीरीज के तीन नए टैब पेश किए हैं, गैलेक्सी टैब-4 7.0, गैलेक्सी टैब-4 8.0, गैलेक्सी टैब-4 10.1. इन टैबलेट्स की स्क्रीन को छोड़ दें तो अन्य फीचर्स में कोई खास अंतर नहीं है. अलग-अलग स्क्रीन साइज के उक्त टैबलेट्स डब्लूएक्सजीए (1280 गुणा 800 पिक्सल) डिस्प्ले रेजोलूशन पर काम करते हैं. ये टैबलेट्स 1.2 गीगाहर्ट्ज क्वाडकोर प्रोसेसर, 1.5 जीबी रैम और 16 जीबी इंटर्नल स्टोरेज के साथ हैं. 7 इंच गैलेक्सी टैब-4 में 8 जीबी वैरिएंट मॉडल का भी विकल्प मिलेगा. माइक्रो एसडी कार्ड के जरिए एक्सटर्नल मेमोरी को 64 जीबी तक बढ़ाया जा सकता है. सैमसंग के ये तीनों टैबलेट्स एंड्रॉयड ऑपरेटिंग 4.4 किटकैट आधारित हैं. पावर बैकअप के लिए गैलेक्सी टैब-4 10.1 में 6800 एमएएच, गैलेक्सी टैब-4 8.0 में 4450 एमएएच की बैटरी है. गैलेक्सी टैब-4 7.0 की बैटरी के बारे में कोई जानकारी नहीं दी गई. फोटोग्राफी के लिए 3 मेगा पिक्सल का मुख्य कैमरा और 1.3 मेगा पिक्सल का सेकेंड्री कैमरा है. कनेक्टिविटी के लिए 3जी, एलटीई, वाई-फाई, ब्लूटूथ की सुविधा है. ■

## बाज़ार में आया इलेक्ट्रिक स्कूटर

इलेक्ट्रिक वाहन बनाने वाली जापानी कंपनी टैरा मोटर्स भारत सहित एशियन मार्केट में अपना नया स्टाइलिश इलेक्ट्रिक स्कूटर ए-4000 आई लॉन्च करने वाली है. इस स्कूटर की खास बात यह है कि इसमें आईफोन इनबिल्ड किया गया है. स्कूटर में आईफोन लगाने का मकसद उसे स्टेटस और नेविगेशन तकनीक के तौर पर इस्तेमाल करना है. ए-4000 आई अपनी तरह का ऐसा पहला स्कूटर होगा, जिसमें स्मार्ट फोन इनबिल्ड है.

उम्मीद है कि आईफोन के अलावा इसमें दूसरे स्मार्ट फोन इस्तेमाल किए जा सकते हैं. इनबिल्ड स्मार्ट फोन आपको बैटरी स्टेटस, माइलेज और एवरेज स्पीड की जानकारी देगा.

कंपनी ने अपने इस स्कूटर में टैरा लिथियम ईओन बैटरी का इस्तेमाल किया है, जो इसे 50 हज़ार किमी तक चलने में मदद करती है. एक बार फुल चार्ज होने के बाद स्कूटर 65 किमी तक चलता है. स्कूटर की बैटरी 4.5 घंटे में फुल चार्ज की जा सकती है.■

## लावा का सस्ता टैबलेट

भारत की जानी-मानी स्मार्ट फोन कंपनी लावा ने क्यूपैड ई-704 नाम से टैबलेट लॉन्च किया है, इस टैबलेट की क़ीमत मात्र 9,999 रुपये है. लावा क्यूपैड ई-704 डुअल सिम वाला 3 जी टैबलेट है. इसमें 1.2 गी-गाहर्ट्ज क्वाडकोर ब्रॉडकोम प्रोसेसर है. इसमें खास तौर पर ग्राफिक्स इंजन आधारित वीडियोकोर मल्टीमीडिया तकनीक का उपयोग किया गया है, जिस पर गेम, वेब ब्राउजिंग एवं इंटरटेनमेंट का लाभ उठाया जा सकता है. टैबलेट में 1024 गुणा 600 पिक्सल रेजोलूशन वाला 7.0 इंच का मल्टीटच आईपीएस स्क्रीन डिस्प्ले है. यह एंड्रॉयड ऑपरेटिंग 4.2.2 जेलीबीन आधारित है. इसमें 1 जीबी रैम, 4 जीबी इंटर्नल मेमोरी के अलावा 32 जीबी तक एक्सपेंडेबल मेमोरी की भी सुविधा है. कनेक्टिविटी ऑप्शन के तौर पर टैबलेट में वाई-फाई, ब्लूटूथ, 2जी, 3जी एवं एज शामिल हैं. पावर बैकअप के लिए क्यूपैड ई-704 टैबलेट में 3,500 एमएएच की बैटरी है. कंपनी के अनुसार, इसकी बैटरी 300 घंटे का स्टैंडबाई टाइम और 10 घंटे का टॉकटाइम देने में सक्षम है. फोटोग्राफी के लिए 3.2 मेगा पिक्सल रियर कैमरा एवं वीडियो कॉलिंग के लिए 0.3 मेगा पिक्सल कैमरा है. युवाओं में लोकप्रिय कुछ एप्लिकेशन एवं गेम भी इसमें प्री-लोडेड हैं, जैसे वीचैट, वाइबर, अस्पफाल्ट-7 एचडी आदि.■

चौथी दुनिया ब्यूरो

feedback@chauthiduniya.com

## हाई स्पीड इंटरनेट मोबाइल नेटवर्क

इंटरनेट की स्पीड को लेकर परेशान नेट यूजर्स के लिए एक अच्छी ख़बर है. जानी-मानी टेक्नोलॉजी कंपनी गूगल अब मोबाइल नेटवर्क के क्षेत्र में आ सकती है. दुनिया को सबसे सफल मोबाइल आपरेटिंग सिस्टम एंड्रॉयड और सर्च इंजन गूगल ने अब मोबाइल नेटवर्क के क्षेत्र में उतरने का फ़ैसला लिया है. कंपनी अब खुद का वायरलेस नेटवर्क शुरू करने की योजना बना रही है, जो यूजर को फोन करने, मैसेज भेजने और इंटरनेट के इस्तेमाल तक की सुविधा देगा. गूगल अमेरिका में पहले से ही सबसे तेज ब्रॉडबैंड इंटरनेट कनेक्शन की सुविधा मुहैया करा रही है. योजना के तहत गूगल मौजूदा मोबाइल नेटवर्क कंपनियों से ही 3 जी और 4 जी नेटवर्क खरीद कर उसे कम क़ीमत में यूजर तक पहुंचाएगी. ऐसे में गूगल एक वर्चुअल मोबाइल नेटवर्क ऑपरेटर (एमवीएनओ) की भूमिका में होगा. एक ऐसा नेटवर्क ऑपरेटर, जो मौजूदा नेटवर्क के माध्यम से ग्राहकों तक अपने सर्विस प्लान पहुंचाता है.■

# महिंद्रा एक्सयूवी का नया मॉडल

कई कंपनियों के बाद महिंद्रा एंड महिंद्रा ने भी अपनी अपडेटेड बोलेरो का स्पेशल एडिशन बाज़ार में उतारा है. महिंद्रा स्कार्पियों और बोलेरो एसयूवी सेगमेंट में सबसे ज़्यादा बिकने वाली कारें हैं. महिंद्रा बोलेरो के इस स्पेशल एडिशन की सिर्फ़ 500 यूनिट्स ही बनाई जाएंगी. नई अपडेट बोलेरो स्पेशल एडिशन के फीचर्स की बात करें, तो इसमें एबीएस, पर्ल व्हाइट, स्पोर्टी बॉडी लुक, यूरोपियन लेदर इंटीरियर, ब्लू विजन हेडलाइट्स, यूरोपियन लेदर सीट्स, ब्लूटूथ-यूएसबी कनेक्टिविटी, म्यूजिक सिस्टम आदि शामिल हैं. कंपनी ने इसके इंजन में कोई बदलाव नहीं किया है. यह 2.5 लीटर, 4-सिलेंडर डीजल इंजन, 62 एचपी पावर, 195 एनएम के टॉर्क एवं 5-स्पीड मैन्युअल गियर बॉक्स के साथ काम करता है. ■

# दोतरफ़ा यूएसबी

**इस यूएसबी को लागू करने वाले फोरम ने आशा व्यक्त की है कि नया डिजाइन जुलाई तक आएगा. मोबाइल फोन और कैमरा चार्ज करने के लिए प्रयोग में आने वाले टाइप-सी मानक का यह नया यूएसबी केबल आकार में मौजूदा माइक्रो-यूएसबी कनेक्टर जितना होगा.**

यूएसबी को गलत साइड से लगाने वाले लोगों को प्रतिदिन अड़चनों का सामना करना पड़ता है. इससे निजात दिलाने के लिए यूएसबी केबल का एक नया डिजाइन आया है. यूएसबी 3.1 टाइप-सी अपनी तरह का पहला ऐसा केबल होगा, जो

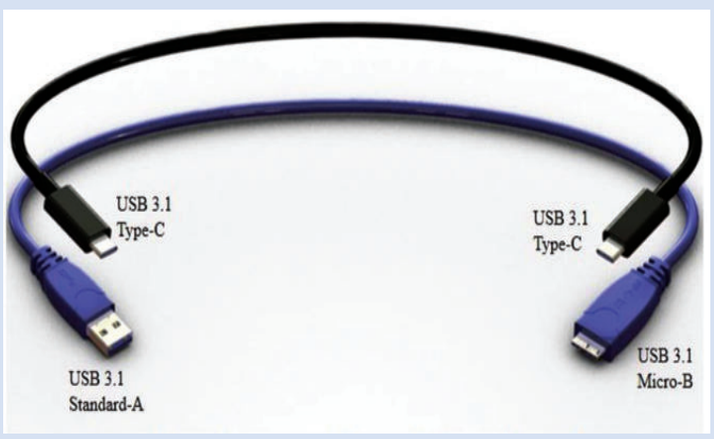


सीधे-उल्टे, दोनों तरफ़ से कनेक्ट किया जा सकेगा. इस यूएसबी को लागू करने वाले फोरम ने आशा व्यक्त की है कि नया डिजाइन जुलाई तक आएगा. मोबाइल फोन और कैमरा चार्ज करने के लिए प्रयोग में आने वाले टाइप-सी मानक का यह नया यूएसबी केबल आकार में मौजूदा माइक्रो-यूएसबी कनेक्टर जितना होगा. अब तक यह डाटा कनेक्शन के लिए कंप्यूटर या दूसरे उपकरणों में केवल एक ओर से लगाया जाता रहा है. नया यूएसबी केबल 100 वाट तक की ऊर्जा का ट्रांसफर कर सकेगा. इसके अलावा, यूएसबी 3.1 में 10 गीगाबाइट्स की गति से डाटा ट्रांसफर होगा.■

# ट्रांसेंड ड्राइव प्रो-200

**इसे फुल एचडी 1080 पिक्सल रेजोलूशन और नाइट शूटिंग में भी इस्तेमाल किया जा सकता है.**

ड्राइविंग करते समय हर स्थिति को रिकॉर्ड करने के लिए आप इस कैमरे का इस्तेमाल कर सकते हैं. इसे कार में लगे विंडशील्ड से जोड़कर फुल एचडी वीडियो रिकॉर्ड किया जा सकता है. यही नहीं, इसे फुल एचडी 1080 पिक्सल रेजोलूशन और नाइट शूटिंग में भी इस्तेमाल किया जा सकता है. इसमें 2.4 इंच कलर्ड एलसीडी स्क्रीन, 160 डिग्री वाइड एंगल ग्लास लेंस, बिल्ट-इन माइक्रोफोन एवं स्पीकर, डॉट मूव फाइल फॉर्मेट में वीडियो रिकॉर्डिंग और 16 जीबी माइक्रो एसडी मेमोरी कार्ड जैसे फीचर्स हैं. यह 13 भाषाओं को सपोर्ट करता है.■

विज्ञापन हेतु संपर्क करें : email : advt@chauthiduniya.com

# शूमाकर की सेहत में सुधार

गत वर्ष दिसंबर में फ्रेंच आल्प्स में एक स्कीइंग दुर्घटना में जर्मन के फॉर्मूला वन चैंपियन शूमाकर (47) के सिर में गंभीर चोट लग गई थी, जिससे वह कोमा में चले गए थे और अभी भी उनका इलाज चल रहा है. उनके प्रतिनिधि सैबाइन केम के अनुसार, शूमाकर की हालत में सुधार हो रहा है, डॉक्टरों की टीम उन्हें कोमा से बाहर लाने के लिए प्रयासरत है. केम ने कहा कि ग्रेनोबल में अस्पताल की टीम के साथ उनके इस लंबे और कठिन संघर्ष के दौरान हम सब साथ हैं. हम अपने शुभचिंतकों को धन्यवाद देना चाहेंगे, लेकिन उनसे यह समझने की उम्मीद भी करते हैं कि हम शूमाकर की हालत के बारे में बहुत विस्तार से कुछ नहीं बता सकते. पिछले महीने शूमाकर के परिवारीजनों ने कहा था कि उनकी स्थिति में मामूली, लेकिन आशाजनक सुधार के संकेत दिखाई दिए हैं. हादसे की जांच कर रहे अधिकारियों का कहना है कि दुर्घटना का शिकार होने से पहले शूमाकर की गति अच्छे स्कीअर की रही होगी, फिर वह गिर गए और पत्थर से टकरा गए. विशेषज्ञों ने शूमाकर के स्कीइंग उपकरण और हेलमेट में लगे कैमरे की फुटेज के आधार पर दुर्घटना का दृश्य पुनर्निर्मित किया, ताकि कारणों का पता चल सके. फॉर्मूला वन रेसिंग में 19 साल के करियर के बाद शूमाकर 2012 में रिटायर हो गए थे. ■

# कैफ को सचिन-सहवाग से उम्मीद

**कैफ को विश्वास है कि उनके उक्त वरिष्ठ सहयोगी चुनाव में उनकी मदद करेंगे. कैफ कहते हैं कि क्रिकेट ने मुझे देश के विभिन्न हिस्सों की यात्रा करने का मौक़ा दिया. मैंने जब भी महाराष्ट्र या दक्षिणी राज्यों की यात्रा की, मुझे विकास के लिहाज से वे उत्तर प्रदेश से बेहतर नज़र आए.**

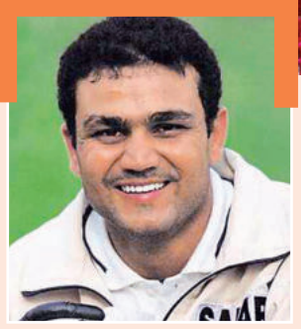

क्रिकेट की दुनिया से राजनीति में आए और कांग्रेस के टिकट पर उत्तर प्रदेश की फूलपुर लोकसभा सीट से चुनाव लड़ रहे मोहम्मद कैफ को सचिन तेंदुलकर, सौरव गांगुली एवं वीरेंद्र सहवाग जैसे प्रसिद्ध क्रिकेटरों ने अपनी शुभकामनाओं से नवाजा है. कैफ को विश्वास है कि उनके उक्त वरिष्ठ सहयोगी चुनाव में उनकी मदद करेंगे. कैफ कहते हैं कि क्रिकेट ने मुझे देश के विभिन्न हिस्सों की यात्रा करने का मौक़ा दिया. मैंने जब भी महाराष्ट्र या दक्षिणी राज्यों की यात्रा की, मुझे विकास के लिहाज से वे उत्तर प्रदेश से बेहतर नज़र आए. हमारे यहां खेलों के लिए आधारभूत ढांचे का अभाव है. कैफ कहते हैं कि वह अपने गृहराज्य और खास तौर से गृहनगर इलाहाबाद के लिए कुछ करना चाहता था, जहां खेलों की अनगढ़ प्रतिभाओं का खजाना है, जो प्रशिक्षण एवं कोचिंग की अच्छी सुविधाओं के अभाव में आगे नहीं बढ़ पा रही हैं. अभी तक वह खुद को असहाय पाते थे और समझ में नहीं आता था कि कैसे क्या करें, लेकिन अब लगता है कि उनके पास एक मंच है, जहां से वह अपने लोगों की सेवा कर सकते हैं. कैफ कहते हैं कि वह अपनी बल्लेबाजी की तरह राजनीति में भी काम करेंगे. भले ही बहुत सारे चौके-छक्के न लगा पाएं, लेकिन एक-दो रन बनाकर स्कोर बोर्ड गतिमान बनाए रखेंगे.■

# मुझसे शादी कर लो!

भारतीय क्रिकेटरों के अभिनेत्रियों के साथ अफेयर के चर्चे हमेशा से रहे हैं. हाल में विराट कोहली और अनुष्का शर्मा की लव स्टोरी भी खूब चर्चा में रही है. अब इंग्लैंड की क्रिकेटर डानिएल वैट ने विराट कोहली को शादी का प्रस्ताव भेजा है. सोशल नेटवर्किंग साइट ट्वीटर पर डानिएल ने ट्वीट के जरिए कहा कि विराट कोहली, मुझसे शादी कर लो! हालांकि डानिएल के ट्वीट में कोहली के नाम की स्पेलिंग थोड़ी अलग थी. उनके ट्वीट के बाद जब कोहली के प्रशंसकों ने उन्हें बताया कि ऐसी चर्चा है कि कोहली बॉलीवुड अभिनेत्री अनुष्का शर्मा को डेट कर रहे हैं, तो डानिएल ने जवाब में कहा कि नहीं, वह नहीं कर रहे. डानिएल के इस ट्वीट पर उनकी साथी क्रिकेटर कैथरीन ब्रंट ने भी चुटकी ली. ब्रंट ने ट्वीट किया, तुमने देर कर दी डानिएल, विराट ने मुझे पिछले हफ्ते ही प्रस्ताव भेजा है. शायद डानिएल को यह नहीं पता है कि अनुष्का शर्मा कौन हैं, लेकिन उनके ट्वीट ने सोशल मीडिया की दुनिया में हलचल ज़रूर मचा दी है. डानिएल की उम्र 22 साल हैं. वह ऑफ स्पिनर हैं और 32 एक दिवसीय और 50 ट्वेंटी-20 मैचों में इंग्लैंड की तरफ़ से खेल चुकी हैं. हालांकि वह अभी इंग्लैंड की महिला ट्वेंटी-20 टीम की सदस्य नहीं हैं.■

# सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी के लिए जगह नहीं

**संदीप सिंह को एचआईएल में शानदार प्रदर्शन करने के बाद राष्ट्रीय शिविर में भाग लेने के लिए बुलाया गया था, लेकिन जब टीम चुनने का समय आया, तो उन्हें बाहर का रास्ता दिखा दिया गया. पिछले साल भी उनके साथ यही बर्ताव किया गया था.**

किसी भी खेल में सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों को महत्व दिया जाता है, वहीं भारतीय हॉकी टीम में सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों को जगह नहीं मिलती. हॉकी इंडिया लीग के दोनों संस्करणों में सबसे अधिक स्कोर बनाने वाले एक खिलाड़ी को बाहर रखने की वजह से कई सवाल उठने लगे हैं. बीते 23 जनवरी से 23 फरवरी तक हुए एचआईएल के दूसरे संस्करण में सबसे ज़्यादा गोल करने वाले पंजाब वॉरियर्स टीम के हॉकी खिलाड़ी संदीप सिंह की चयनकर्ताओं ने एक बार फिर उपेक्षा की है. नीदरलैंड में 31 मई से होने जा रहे एफआईएच विश्वकप से पहले यूरोपीय दौरे के लिए भारतीय हॉकी टीम में उनका चयन नहीं किया गया. खास बात यह है कि संदीप सिंह को एचआईएल में शानदार प्रदर्शन करने के बाद राष्ट्रीय शिविर में भाग लेने के लिए बुलाया गया था, लेकिन जब टीम चुनने का समय आया, तो उन्हें बाहर का रास्ता दिखा दिया गया. पिछले साल भी उनके साथ यही बर्ताव किया गया था. वह एचआईएल के पहले संस्करण के भी सर्वश्रेष्ठ स्कोरर थे. संदीप सिंह लंदन ओलंपिक में आख़िरी स्थान पर रही भारतीय टीम में शामिल थे. खास बात यह है कि मुख्य कोच टैरी वाल्श ने एचआईएल के दूसरे सत्र में दिल्ली वेवराइडर्स की जीत में अहम भूमिका निभाने वाले गुरबाज को टीम में शामिल किया है. ऐसे में चयन प्रक्रिया पर सवाल उठना लाजिमी है. जब गुरबाज का चयन हो गया, तो उससे अच्छा खेलने वाले संदीप सिंह की उपेक्षा क्यों? ■

चौथी दुनिया ब्यूरो

feedback@chauthiduniya.com

# 7 फुटबॉलर गिरफ्तार

भारत क्रिकेट में फिक्सिंग को लेकर परेशान है और इसके चलते काफी किरकिरी भी हो चुकी है, लेकिन इंग्लैंड के फुटबॉल खिलाड़ी भी भारतीय क्रिकेट खिलाड़ियों से पीछे नहीं हैं. इंग्लैंड के उत्तरी-पश्चिमी फुटबॉल लीग के सात खिलाड़ियों को कथित रूप से स्पॉट फिक्सिंग के आरोप में गिरफ्तार किया गया है. राष्ट्रीय अपराध एजेंसी (एनसीए) के अनुसार, इन सभी फुटबॉलरों की उम्र 18 से 30 वर्ष के बीच है. इनमें से 6 को पिछले साल दिसंबर में भी शक के आधार पर गिरफ्तार किया गया था, लेकिन बाद में ये जमानत पर रिहा हो गए थे. अभी तक कुल 13 खिलाड़ियों को गिरफ्तार किया जा चुका है और स्पॉट फिक्सिंग व मनी लांड्रिंग में उनकी संलिप्तता को लेकर पूछताछ की जा रही है. बावजूद इसके इंग्लैंड फुटबॉल में फिक्सिंग रुक नहीं रही है. ■

# कैंसर का मरीज बना फुटबॉल खिलाड़ी

कैंसर से पीड़ित एक युवक को चेचन्या की प्रमुख फुटबॉल टीम में शामिल किया गया है. रूस के एक राजनेता ने युवक के प्रति सहानुभूति व्यक्त की, उसके बाद क्लब ने यह निर्णय लिया. तेरेक ग्रोजनी फुटबॉल क्लब के मानद अध्यक्ष एवं चेचन्या के प्रसिद्ध क्षेत्रीय नेता रमजान कादरोव ने कहा कि वह ग्रिगोरी सिमोनयान के बारे में जानकर बहुत दुःखी हुए. अपने इंस्टाग्राम एकाउंट पर 18 वर्षीय सिमोनयान की फोटो लगाकर कादरोव ने लिखा कि उन्होंने फुटबॉल क्लब को सिमोनयान के इलाज का खर्च उठाने को भी कहा है. कादरोव का इंस्टाग्राम एकाउंट बहुत लोकप्रिय है. उन्होंने लिखा कि पूरी तरह ठीक होने पर ग्रिगोरी क्लब के लिए खेल सकेगा. ठीक होने में भगवान उसकी मदद करें. समझौता पत्र पर हस्ताक्षर करने के बाद सिमोनयान का इलाज जर्मनी में किया जाएगा. सिमोनयान को पिछले साल सितंबर में अपनी बीमारी के बारे में पता चला. उसके तुरंत बाद उनका एक ऑपरेशन भी हुआ. ■

भारतीय दर्शकों के दिलों पर राज कर रहीं अभिनेत्री कटरीना कैफ लोकसभा चुनाव के लिए मतदान नहीं कर पाएंगी, क्योंकि उनके पास भारतीय नागरिकता नहीं है. दरअसल, वह हांगकांग में पैदा हुईं, जबकि उनके पास नागरिकता है इंग्लैंड की और उन्हें कामयाबी मिली भारत में. कटरीना की मां ब्रिटिश मूल की हैं और पिता भारतीय कश्मीरी.

# बॉलीवुड के सितारे, जो नहीं दे पाएंगे वोट

प्रियंका प्रियम तिवारी

feedback@chauthiduniya.com

बॉलीवुड सितारों और भारत की राजनीति के बीच गहरे संबंध हैं. ये सितारे कभी चुनाव में किसी पार्टी विशेष का प्रचार, तो कभी जनता को मतदान के लिए जागरूक करते नज़र आते हैं और तो कभी ख़ुद किसी पार्टी के टिकट पर चुनाव लड़ते नज़र आते हैं. बॉलीवुड सितारों की लोकप्रियता मतदान को प्रभावित करती है. जनता कई बार अपने लोकप्रिय सितारे को जिताने के लिए पार्टी को भी नज़रअंदाज़ कर देती है. वह वोट देते समय सिर्फ़ अपने पसंदीदा कलाकार को देखती है. लेकिन, आपको यह जानकर हैरानी होगी कि आपके कई पसंदीदा कलाकार मतदान नहीं कर पाएंगे. बॉलीवुड के कई सितारे, जिन्हें दर्शकों ने तहेदिल से स्वीकार किया, जिन्हें दौलत-शोहरत सब कुछ दिया, लेकिन वे लोकसभा चुनाव में मतदान नहीं कर पाएंगे. क्यों? पढ़िए *चौथी दुनिया* की यह रिपोर्ट...

## कटरीना कैफ

कटरीना कैफ बॉलीवुड की बेहतरीन अभिनेत्रियों में से एक हैं. ऐश्वर्या के बाद दर्शकों ने उन्हें काफ़ी पसंद किया. अपनी सभी समकालीन अभिनेत्रियों को कटरीना ने पीछे छोड़ दिया. यह जानकर हैरानी होगी कि आपकी चहेती स्टार कटरीना मतदान नहीं कर पाएंगी, क्योंकि उनके पास भारतीय नागरिकता नहीं है. वह हांगकांग में पैदा हुई, जबकि उनके पास नागरिकता है इंग्लैंड की और उन्हें कामयाबी मिली भारत में. कटरीना की मां ब्रिटिश मूल की हैं और पिता भारतीय कश्मीरी. उनकी मां एक चैरिटेबल संस्था में काम करती थीं, ऐसे में उन्हें दुनिया भर में घूमना पड़ता था. हर दो साल बाद कटरीना का परिवार किसी दूसरे देश में शिफ्ट हो जाता था. भारतीय नागरिकता के मुद्दे पर एक इंटरव्यू में उन्होंने विवादास्पद बयान देते हुए राहुल गांधी को भी लपेट लिया था. उन्होंने कहा था, मैं जो हूं, उसमें बहुत खुश हूं और मुझे समझ में नहीं आता कि लोगों को इससे समस्या क्या है? मैंने कभी यह बात नहीं छिपाई कि मेरी मां ब्रिटिश मूल की हैं. क्या मुझे इस बात पर शर्म आनी चाहिए कि मैं आधी एशियन हूं और आधी यूरोपियन? राहुल गांधी भी आधे भारतीय और आधे इटैलियन हैं, उसी तरह मैं आधी भारतीय हूं, तो इसमें गलत क्या है? ■

## नरगिस फाकरी

अमेरिका की टॉप मॉडल नरगिस फाकरी ने इम्तियाज अली की फिल्म रॉकस्टार से बॉलीवुड में एंट्री की. पहली ही फिल्म में वह मुख्य अभिनेत्री की भूमिका में थीं और उनके अपोजिट थे बॉलीवुड के रणबीर कपूर. नरगिस ने काफी मेहनत की और अब तो वह हिंदी सीखने के लिए भी काफी मेहनत कर रही हैं. उन्होंने कई फिल्मों में काम किया. बॉलीवुड ने अब उन्हें अपना लिया है, पर वह भी लोकसभा चुनाव में मतदान नहीं कर पाएंगी, क्योंकि उनके पिता पाकिस्तानी एवं उनकी मां चेक गणराज्य की हैं और नरगिस का जन्म हुआ था न्यूयॉर्क में. ■

## आलिया भट्ट

महेश भट्ट और सोनी राजदान की बेटी आलिया भट्ट इन दिनों बॉलीवुड में एक के बाद एक फिल्में कर रही हैं, लेकिन आलिया वोट नहीं दे पाएंगी, क्योंकि उनके पास ब्रिटिश पासपोर्ट है. दरअसल, उनकी मां सोनी राजदान ब्रिटिश मूल की हैं और आलिया भी ब्रेटेन में ही पैदा हुई थीं. वह चाहती हैं कि उन्हें भारत की नागरिकता भी मिल जाए, जिससे वह अगली बार मतदान ज़रूर कर सकें, लेकिन आलिया को शायद इस बात की जानकारी नहीं है कि भारत में अभी तक दोहरी नागरिकता की मान्यता नहीं है.

## जैकलिन फर्नांडीज

मिस श्रीलंका जैकलिन फर्नांडीज ने भी बॉलीवुड को अपना घर मान लिया है. कई फिल्मों में अभिनय और आइटम डांस करके तारीफ़ बटोर चुकीं जैकलिन अब जल्द ही अपना घर बसाने वाली हैं फिल्म निर्माता साजिद ख़ान के साथ. साजिद जानी-मानी कोरियोग्राफर एवं फिल्म निर्माता फ़राह ख़ान के भाई हैं. भारत जैकलिन की कर्मभूमि है और शायद उनका भविष्य भी, पर वह मतदान नहीं कर पाएंगी. दरअसल, उनके पिता श्रीलंका के हैं, जबकि मां कैनेडियन एवं मलेशियन. जैकलिन जन्मी और पली-बढ़ी बहरीन में हैं. हालांकि जैकलिन पूरी तरह ख़ुद को श्रीलंका मूल की मानती हैं. ■

# पूरब को ट्रैवलिंग पसंद है

पूरब कोहली ने अपने करियर की शुरुआत वर्ष 2003 में फिल्म यूं ही से की थी. वो लम्हे और रॉक ऑन समेत दर्जनों फिल्मों में काम किया, लेकिन वे उनके करियर के लिए ख़ास साबित नहीं हुईं. हालिया रिलीज फिल्म जल में वह मुख्य भूमिका में नज़र आए. इसमें पानी की विकराल समस्या को दिखाया गया है. कच्छ के दो गांव, जहां दूर-दूर तक पानी का नामोनिशान नहीं है, वहां पानी के लिए मारपीट तक हो जाती है. फिल्म में बक्का बने पूरब कोहली पानी के देवता माने जाते हैं, क्योंकि वह ज़मीन में कान लगाकर सुनते हैं और बता देते हैं कि किस जगह खुदाई करने से पानी निकलेगा. उनकी अधिकतर भविष्यवाणी सही साबित होती है. पूरब इस फिल्म को लेकर काफ़ी उत्साहित हैं. पूरब को घूमना काफ़ी पसंद है. वह कहते हैं कि अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग लोगों से मिलकर उन्होंने ज़िंदगी की असल किताब पढ़ी है. पूरब ने अपने ट्रैवल शो के दौरान पूरा देश घूमा. वह कहते हैं कि यही वह चीज है, जो ज़िंदगी को समझने का मौक़ा देती है. पूरब अभी तक मणिपुर, त्रिपुरा एवं मिजोरम नहीं गए हैं, पर अगले पांच सालों में उनकी वहां भी जाने की योजना है. वह मानते हैं कि घूमने के लिए कच्छ सबसे बढ़िया जगह है. वहां के लोग, वहां का कल्चर, रहन-सहन, ऐसा लगता है, मानो भगवान ने एक बहुत बड़ा सेट डिजाइन किया हो. अपनी फिल्म जल के बारे में वह कहते हैं कि जल की कहानी जितनी प्रभावी है, उतना ही दमदार उनका किरदार भी है. बक्का सीधा-सादा है, लेकिन एक इंसान के तौर पर उसमें भी कुछ कमियां हैं. वह भी ग़लतियां करता है. पूरब का सपना था कि वह पायलट बनें, लेकिन यह आसान नहीं था. वे सोचते कि अगर उन्हें जॉब नहीं मिली तो? वजह, 1995-96 के दौर में एयरलाइंस ज़्यादा नहीं थीं, इसलिए यह सपना उन्होंने बीच में ही छोड़ दिया. पढ़ाई में उनका मन ज़्यादा नहीं लगता था, लेकिन हार्डवर्क से वह नहीं घबराते. और तो और, वह 11वीं कक्षा में एक बार फेल भी हो चुके हैं, पर वह निराश नहीं हुए. उन्होंने फिर मेहनत की और अच्छे नंबरों से पास हुए. ■

## इमरान खान

एक तरफ़ अभिनेता आमिर खान देश में जागरूकता लाने के लिए कई प्रयासों से जुड़े हैं. वह देश को भ्रष्टाचार मुक्त बनाना चाहते हैं. वहीं दूसरी तरफ़ उनके भांजे इमरान खान 2014 के लोकसभा चुनाव में मतदान तक नहीं कर पाएंगे, क्योंकि इमरान के पास अमेरिका की नागरिकता है. इमरान कहते हैं कि अगर वह अमेरिका की नागरिकता वापस करके भारत की नागरिकता लेते हैं, तो उन्हें एडवांस में दस साल का टैक्स चुकाना होगा. ■

## फिल्म प्रीव्यू

### रिवॉल्वर रानी

फिल्म क्वीन में एक सीधी-सादी लड़की की भूमिका में अपने अभिनय का लोहा मनवाने के बाद कंगना अब फिल्म रिवॉल्वर रानी में नज़र आएंगी. यह एक कॉमेडी फिल्म है. इसके लेखक और डायरेक्टर साई कबीर हैं. फिल्म में मुख्य भूमिका में हैं कंगना रानावत और वीर दास, जबकि सह-कलाकार हैं पीयूष मिश्रा, जाकिर हुसैन और पंकज सारस्वत. चंबल का नाम आते ही उन डाकुओं की याद आती है, जो जमींदारों एवं साहूकारों को लूटते थे. उन डाकुओं को अंग्रेज बागी कहते थे, क्योंकि उनमें भी देशभक्ति का जज्बा कूट-कूट का भरा था. वे क्रांतिकारियों की मदद करते थे. वे उन्हें असलहे, गोला-बारूद ही मुहैया नहीं कराते थे, बल्कि मौक़ा पड़ने पर शरण भी देते थे. वे राजनीति में भी खासे सक्रिय थे. उसी चंबल की डाकू है अलका गुर्जर, जिसे लोग रिवॉल्वर रानी कहते हैं. रिवॉल्वर रानी ग्वालियर की राजनीति में सक्रिय है और उसके अपोजिट है तोमर पार्टी. रिवॉल्वर रानी का एक ब्वॉयफ्रेंड भी है, जो बॉलीवुड का हीरो बनने की ख्वाहिश रखता है. फैशनेबल रिवॉल्वर रानी के कपड़े इटली से आते हैं. वह कहती भी है, हम हैं अलका सिंह, आई लव फैशन, फन एंड गन. इस फिल्म के लिए कंगना ने काफी मेहनत की है. उन्होंने भाषा से लेकर बंदूक चलाने तक का अभ्यास किया. फिल्म में कंगना बुंदेली मिश्रित हिंदी बोलती हैं. फिल्म की शूटिंग चंबल में की गई है. ■

| | | |
|---|---|---|
| डायरेक्टर | : | साई कबीर श्रीवास्तव |
| प्रोड्यूसर | : | राजू चड्ढा, नितिन तेज आहूजा एवं राहुल मित्रा |
| कलाकार | : | कंगना रानावत, पीयूष मिश्रा, वीर दास, जाकिर हुसैन |
| भाषा | : | हिंदी |
| रिलीज | : | 25 अप्रैल, 2014 |

## शकीरा नहीं करेंगी पुरुषों के साथ काम

कोलंबियन पॉप सुपरस्टार शकीरा अब किसी म्यूजिक वीडियो में किसी ग़ैर-मर्द के साथ थिरकती नज़र नहीं आएंगी यानी अपनी अदाएं नहीं दिखाएंगी. उन पर यह प्रतिबंध लगाया है उनके पार्टनर जेराई पीके ने. शकीरा ने हाल में बताया कि पीके को उनके किसी पुरुष के साथ म्यूजिक वीडियो में काम करने पर आपत्ति है. 37 वर्षीय शकीरा ने हाल में गायिका रिहाना के साथ एक नया म्यूजिक वीडियो शूट किया है. इस वीडियो में शकीरा और रिहाना अपने सेक्सी अवतार में नज़र आ रही हैं और इसमें दोनों के काफी इंटिमेट सींस हैं. जब उनसे पूछा गया कि अपने इस वीडियो में उन्होंने एक महिला के साथ काम क्यों किया? तो शकीरा ने बताया कि दरअसल, उनके पति पीके को उनका किसी पुरुष के साथ काम करना पसंद नहीं है. न्यूज वेबसाइट डिजिटल स्पाई के मुताबिक, शकीरा ने कहा कि दरअसल, पीके थोड़े ईर्ष्यालु स्वभाव के हैं और इसीलिए उन्होंने उन्हें दूसरे पुरुषों के साथ शूटिंग करने की इजाजत नहीं दी. रिहाना के साथ शूटिंग के लिए भी उन्होंने पीके से बात की और उनके हां कहने पर ही रिहाना के साथ काम किया. वह कहती हैं कि पीके उनसे बेहद प्यार करते हैं और उन्हें लेकर थोड़े पजेसिव एवं जेलस भी हैं. हालांकि पीके ने यह बात कभी खुलकर नहीं कही, लेकिन वह उनके जज्बातों को समझती हैं. शकीरा और पीके 2011 से साथ हैं और दोनों का 15 महीने का एक बेटा भी है. पीके स्पेन और एफसी बार्सिलोना की फुटबॉल टीम से खेलते हैं. ■

# चौथी दुनिया

हिंदी का पहला साप्ताहिक अख़बार

21 अप्रैल–27 अप्रैल 2014

Postal Regn. No. DL (ND)-11/6139/2012-13-14, RNI No. DELHIN/2009/30467


## बिहार–झारखंड

# दांव पर दिग्गजों की प्रतिष्ठा

सरोज सिंह

सूबे की छह सीटों पर वोटरों ने अपना फैसला सुना दिया है. लोकतंत्र के इस महापर्व में मतदाताओं ने यह साबित कर दिया कि लोकतांत्रिक प्रकियाओं में उनकी कितनी आस्था है. मतदान केंद्रों पर उमड़ी भारी भीड़ यह एहसास करा गई कि लोकतंत्र की जड़ यहां कितनी गहरी है. तमाम अगर– मगर के बीच लोगों ने जमकर वोट डाले और अपना फैसला ईवीएम में कैद करा दिया. मीरा कुमार, निखिल सिंह, उपेंद्र कुशवाहा और चिराग पासवान जैसी हस्तियों की किस्मत का फैसला जनता ने कर दिया. अब अगले चरणों में भी ढेर सारी हस्तियों की किस्मत का फैसला होना है.

छह विधानसभा वाले हाजीपुर संसदीय क्षेत्र में सात मई को चुनाव होना है. यह सीट सुरक्षित है. देश भर के पर्यवेक्षकों की नजर इस सीट पर है. लोजपा सुप्रीमो व पूर्व केंद्रीय मंत्री रामविलास पासवान यहां से प्रत्याशी हैं. वहीं जदयू ने इस बार फिर पूर्व मुख्यमंत्री रामसुंदर दास को मैदान में उतारा है और कांग्रेस की तरफ से संजीव टोनी यहां से उम्मीदवार हैं. फिलहाल दास ही यहां का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं. 1977 में यह सीट सुरक्षित घोषित हुई और रामविलास पासवान पहली बार यहां से सर्वाधिक मतों के अंतर से जीते. पहली बार पासवान ने कांग्रेस के बालेश्वर राम को चार लाख से अधिक मतों से हराया था. रामसुंदर दास और पासवान लंबे समय से एक दूसरे के खिलाफ चुनाव लड़ते आ रहे हैं. पासवान यहां का सात बार प्रतिनिधित्व कर चुके हैं वहीं दास दो बार यहां से निर्वाचित हो चुके हैं. पिछले लोकसभा चुनाव में यहां से सात बार जीते रामविलास पासवान को रामसुंदर दास ने लगभग सैंतिस हजार मतों के अंतर से हराया था. नीतीश ने एकबार फिर दास पर ही दांव खेला है. बताया जाता है कि यह सीट खुद नीतीश के लिए प्रतिष्ठा का विषय बन गई है लेकिन इसबार दास का रास्ता आसान नहीं है. भाजपा से अलगाव के बाद से जिस जनाधार का नुकसान जदयू को हुआ है उसका खामियाजा दास को इसबार भुगतना पड़ेगा वहीं पासवान भाजपा के साथ हैं और इसबार उन्हें अपनी छवि के साथ साथ नमो की लहर का भरोसा है. यहां के वोटर मान रहे है कि इस बार रामविलास पासवान का केंद्र में मंत्री बनना तय है इसलिए उन्हें ही अपना सांसद बनाया जाए ताकि हाजीपुर का विकास फिर से पटरी पर आ सके और यह संसदीय क्षेत्र देश दुनिया के पटल पर चमक सके. कांग्रेस के संजीव टोनी को राजद के आधार वोट पर भरोसा है. टोनी को यादव वोटों का आसरा है.

सारण लोकसभा सीट पर सात मई को चुनाव होना है. देश भर की निगाहें इस सीट पर इसलिए है कि हर कोई देखना चाह रहा है कि आखिर लालू के बाद कौन? लालू पहली बार 1977 में यहां से चुने गए और 2013 में चारा घोटाले में सजा मिलने के बाद उन्हें अपनी सीट छोड़नी पड़ी. राजद की तरफ से लालू यादव की पत्नी और पूर्व मुख्यमंत्री राबड़ी देवी यहां से उम्मीदवार हैं वहीं भाजपा ने एक बार फिर राज्यसभा सदस्य व पार्टी के महासचिव राजीव प्रताप रूडी को उम्मीदवार बनाया है. जदयू ने यहां से सलीम परवेज को मैदान में उतारा है. राजीव पिछले दो लोकसभा चुनाव से लालू प्रसाद से हार रहे थे साथ ही वे दो बार यहां से सांसद भी चुने जा चुके हैं. जदयू उम्मीदवार सलीम परवेज पिछली बार भी यहां से चुनाव लड़े थे लेकिन तब वे बसपा में थे और इन्हें 45 हजार मत मिले थे. सारण राजपूत और यादव बहुल सीट माना जाती है लेकिन कुर्मी मतों की संख्या भी यहां अच्छी खासी है. इस सीट पर पहले कांग्रेस का बोलबाला हुआ करता था लेकिन कांग्रेस के इस किले को जनता पार्टी के टिकट से चुनाव लड़ने आए लालू ने 1977 में ध्वस्त किया. वे यहां से सबसे अधिक चार बार चुने गए. सलीम परवेज को यहां नीतीश की छवि और उनके आधार मतों पर भरोसा है साथ ही जो कुर्मी वोट अबतक रूडी को मिलता था इसबार सलीम को मिलेगा ऐसी संभावना है. वहीं रूडी राजपूत बिरादरी के मत पर विश्वास जमाए बैठे हैं और उन्हें भाजपा की लहर पर भरोसा है. वहीं इसबार रूडी को नीतीश के आधार मतों का नुकसान होगा. राबड़ी के साथ नाकारात्मक पक्ष यह है कि इसबार उन्हें यहां के मुसलमानों का मत नहीं मिलने की आशंका है. वहीं वैशाली लोकसभा क्षेत्र भी हाई प्रफाईल सीट माना जा रही है. यहां से केंद्रीय मंत्री रह चुके रघुवंश प्रसाद सिंह राजद के उम्मीदवार हैं. जदयू ने यहां से विजय सहनी को उतारा है वहीं एनडीए गठबंधन की तरफ से लोजपा ने यहां से रामा सिह को मैदान में उतारा है. 1996 से रघुवंश प्रसाद सिंह यहां से चुनाव लड़ते रहे हैं और अब तक उन्होंने ही यहां का प्रतिनिधित्व किया है. बीते लोकसभा चुनावों को अगर देखें तो हर बार यहां सीधा मुकाबला हुआ करता था बावजूद इसके रघुवंश जीतते रहे हैं. पिछले लोकसभा में उनका मुकाबला जदयू उम्मीदवार मुन्ना शुक्ला से हुआ था और उस समय उन्हें कड़ी टक्कर मिली थी. रामा सिंह विधायक रह चुके हैं. उन्हें भाजपा के आधार वोट और राजपूत वोट पर आस है. उन्हें इम्मीद है कि इस बार भुमिहार और राजपूत मिलकर उन्हें वोट देंगे. लेकिन ऐसा होता दिख नहीं रहा है. इस संसदीय क्षेत्र का इतिहास रहा है कि राजपूत और भुमिहार हमेशा एक–दूसरे के विरोध में ही वोट करते रहे हैं. जानकारों की माने तो ऐसा पहली बार 94 में हुआ था जब लवली आनंद चुनाव लड़ी थीं. मतों के लिहाज से देखें तो यहां राजपूत, भुमिहार, अतिपिछड़ा और कुर्मी मतदाताओं की संख्या अधिक है. जदयू के उम्मीदवार विजय सहनी को अतिपिछड़े और कुर्मी मतदाता का ही भरोसा है और इसी समीकरण ध्यान में रखकर वृषिण पटेल भी यहां से टिकट मांग रहे थे. पटेल यहां से दो बार चुनाव लड़ भी चुके हैं. जदयू के उम्मीदवार के लिए बुरी खबर यह है कि इस बार यहां से अन्नु शुक्ला भी निर्दलीय चुनाव लड़ रही हैं. यह नुकसान जदयू को ही होने वाला है. भागलपुर संसदीय क्षेत्र में चुनाव 24 अप्रैल को होना है. भाजपा की तरफ से शाहनवाज हुसैन यहां से उम्मीदवार है. वहीं राजद ने बूलो मंडल और जदयू ने राजद से आए अबू कैसर को उम्मीदवार बनाया है. वर्तमान में शाहनवाज ही यहां का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं. नए परिसीमन की वजह से विरपुर और गोपालपुर विधानसभा क्षेत्र इस संसदीय क्षेत्र में जुड़ा है और दोनों विधानसभा क्षेत्र भुमिहार बहुल है साथ ही यह माना जाता है कि यहां के भुमिहार भाजपा समर्थित हैं. वहीं इस संसदीय क्षेत्र शहरी और आसपास के इलाके में वैश्य मतों की संख्या भी अच्छी है. वहीं मुस्लिम मतों की संख्या भी अच्छी है. भाजपा को शाहनवाज की व्यक्तिगत छवि की वजह से थोड़ा बहुत मुस्लिम मत भी मिलता रहा है. शाहनवाज के साथ परेशानी यह है कि इस बार इसे जदयू का आधार मत नहीं मिलेगा. जदयू ने अबू कैसर को अपना उम्मीदवार बनाया है. कैसर को मुसलमान मतों के साथ साथ जदयू के आधार वोट का सहारा है और जदयू के आधार वोटों की संख्या अच्छी मानी जाती है. अबू कैसर दंगा पीड़ितों के बीच काफी सक्रिय भी रहे हैं जिसका उन्हें फायदा मिल सकता है लेकिन राजद ने यहां से बूलो मंडल को उम्मीदवार बनाकर जदयू को परेशानी में डाल दिया है. मंडल अति पिछड़ी समुदाय के गंगोता जति से आते हैं. इस जाति से पहली बार किसी को उम्मीदवार बनाया गया है. साथ ही मंडल को राजद के आधार मतों का भरोसा है. फिलहाल यहां की लड़ाई त्रिकोणीय ही दिख रही है. कटिहार बिहार के इन जिलों में से है जहां मुसलमानों की आबादी चालीस फीसदी से ज्यादा है लेकिन पिछले तीन चुनाव से भाजपा के निखिल कुमार चौधरी का इस सीट पर कब्जा है. भाजपा की तरफ से इस बार भी चौधरी ही यहां से उम्मीदवार हैं. केंद्र में मंत्री और रांकपा के तारिक अनवर के आ जाने से इस सीट पर पूरे देश की नजर है. तारिक को पिछले तीन लोकसभा चुनाव से यहां से हार का सामना करना पड़ रहा है. तारिक 1980, 84, 96 और 98 में यहां से जीत दर्ज कर चुके हैं. यूपीए गठबंधन के तहत मात्र एक सीट कटिहार ही रांकपा के हिस्से में आई है. वर्तमान सांसद को अपनी छवि के साथ साथ भाजपा के वोट बैंक और नमो की लहर का भरोसा है. पिछले चुनाव में निखिल ने तारिक को 14 हजार से ज्यादा मतों से हराया था वहीं लोजपा के अशफाक करीम को 45 हजार मत मिले थे. निखिल को जहां जदयू के आधार मतों के खोने का खतरा है वहीं लोजपा का मत इनके पाले में आने की संभावना है. तारिक महाराष्ट्र के कोटे से राज्यसभा सदस्य हैं और केंद्र में मंत्री हैं. उन्हें भरोसा है कि मंत्री रहते हुए उन्होंने कटिहार के विकास के लिए जो कार्य किया है उसका फायदा मिलेगा. वहीं जदयू ने यहां से पूर्व विधायक प्रो. रामप्रकाश महतो को मैदान में उतारा है. महतो कटिहार सदर से विधायक और राजद सरकार में मंत्री रह चुके हैं. महतो को अपनी छवी के साथ साथ नीतीश के विकास पुरुष वाली छवि और जदयू के कैडर का भरोसा है. लेकिन यहां समस्या है कि मनिहारी के पूर्व विधायक मुबारक हुसैन के बेटे हामिद मुबारक भी जदयू से टिकट चाह रहे थे लेकिन इन्हें निराशा हाथ लगी. इसका खामियाजा महतो को इठाना पड़ सकता है. तारिक को भरोषा है कि इन्हें राजद के आधार वोट के साथ साथ यहां मुसलमान मतों की संख्या अच्छी है और मुसलमान समुदाय से अकेले उम्मीदवार हैं

वैसे तो कई महारथी इस बार बिहार की लोकसभा चुनाव में कूद चुके हैं लेकिन ये कुछ चर्चित चेहरे हैं जिनपर देश भर की नजर है. अब देखना यह है कि किस महारथी की नैया पार लगती है और किसकी डूब जाती है.■

**भागलपुर संसदीय क्षेत्र में चुनाव 24 अप्रैल को होना है. भाजपा की तरफ से शाहनवाज हुसैन यहां से उम्मीदवार हैं. वहीं राजद ने बूलो मंडल और जदयू ने राजद से आए अबू कैसर को उम्मीदवार बनाया है. वर्तमान में शाहनवाज ही यहां का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं. नए परिसीमन की वजह से विरपुर और गोपालपुर विधानसभा क्षेत्र इस संसदीय क्षेत्र में जुड़े हैं.**


feedback@chauthiduniya.com

www.chauthiduniya.com
चौथी दुनिया



# रामराज्य के सपनों पर सवार हुई भाजपा

नमो की सभा में उमड़ी भीड़ और उनके सवालों पर जनता के उत्साह से जातीय गोलबंदी बिखर गई. बिजली, सड़क, तथा सिंचाई का आईना दिखा बिजुरिया बाबा के नाम से प्रसिद्ध सांसद जगदानंद सिंह के दावे के विपरित इन्हीं मुद्दों को लेकर कई गांवों में वोट बहिष्कार के नारों से कथित विकास की कलई खुल गई है. ब्रह्मपुर विधानसभा के चार बार राजद के विधायक अजीत चौधरी तथा राजद प्रत्याशी में इतनी कड़वाहट बढ़ गई कि चुनाव के मौके पर ही चौधरी जदयू का दामन थाम कर राजद को खुलेआम ललकार रहे है.



जयमंगल पांडेय
feedback@chauthiduniya.com

भाजपा के पीएम पद के उम्मीदवार नरेंद्र मोदी की बक्सर में हुई चुनावी सभा के बाद मतदाताओं के मुखर होने से चुनावी स्थिति साफ होने लगी है. [illegible]

[illegible] अजीत चौधरी तथा राजद प्रत्याशी में इतनी कड़वाहट बढ़ गई कि चुनाव के मौके पर ही चौधरी जदयू का दामन थाम कर राजद को खुलेआम ललकार रहे है. कभी सांसद के चहेते रहे चौधरी पिछड़ों की राजनीति कर लोगों को लड़ाने से बाज नहीं आते. अब वे अपने समर्थकों से राजद से अपमान का बदला चुकाने का एलान कर रहे हैं. [illegible] बिखराव होगा. जदयू को तो यहां पर डायनेमिक प्रत्याशी नहीं मिला तो हर चुनाव में दल–बदल के लिए [illegible] को जोड़ने तथा दूसरे को तोड़ने की भरपूर कोशिश के बाद भी चुनाव के परिणाम चौकाने वाला होगा.

## आरा में मुखिया हत्याकांड से गूंज रही सत्ता विरोधी लहर

बिहार में सत्ता की सियासत तथा जाति समीकरण को प्रभावित करने वाली एक प्रमुख घटना इसी आरा शहर में हुई थी. जहां एक जून 2012 को रणवीर सेना सुप्रीमो ब्रह्मेश्वर मुखिया की गोली मार कर हत्या कर दी गई. इस घटना ने राज्य सरकार को हिला कर रख दिया. इस घटना के आक्रोश में काफी राजनीतिक तथा सामाजिक प्रतिक्रिया भी हुई और मुखिया समर्थकों ने इसका चुनाव में बदला चुकाने की मुहिम शुरू कर दी. परिणाम स्वरूप इस बार के चुनाव में सत्ता विरोधी लहर की गूंज आरा लोकसभा संसदीय क्षेत्र में सुनाई पड़ रही है. पूर्व में हुई नक्सली तथा जातीय हिंसा से यहां की राजनीति प्रभावित होती रही है. जातीय तथा सामाजिक समीकरण



बदलने के कारण ही पहली बार 1989 में भाकपा (माले) के रामेश्वर प्रसाद सांसद चुने गये. लेकिन हिंसा प्रतिहिंसा का दौर थमते ही वामपंथियों का कुनबा बिखर गया. भोजपुर मुखियां की हत्या के बाद शहर अचानक उबल उठा. इसी प्रतिक्रिया में यहां के जातीय तथा सामाजिक समीकरण चुनाव को प्रभावित कर रहे है. सत्ता विरोधी लहर को अपनी ओर खींचने के लिए भाजपा प्रत्याशी आर.के. सिंह तथा राजद प्रत्याशी श्रीभगवान सिंह कुशवाहा जोर लगाए हुए हैं. गठबंधन टूटने से परेशान जदयू की मैडम मीना सिंह सरकार विरोधी आक्रोश तथा विकास के मुद्दे पर परेशान है. मुखियां हत्या के बाद सरकार विरोधी उपजे आक्रोश का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने तत्काल होने वाली संकल्प सभा को रद्द कर दिया और आज तक आरा शहर में कोई सभा नहीं कर पाये. राजद ने जदयू से आये पूर्व मंत्री श्रीभगवान सिंह कुशवाहा को आरा से प्रत्याशी बना कर अपने दो विधायकों नाराज कर दिया. राजद विधायक भाई दिनेश की नाराजगी यह है कि जगदीशपुर विधानसभा क्षेत्र में जदयू के टिकट पर चुनाव हारने वाले इनके प्रतिद्वंदी को प्रत्याशी बना दिया गया. इसी प्रकार बड़हरा के राजद विधायक राघवेन्द्र प्रताप सिंह भी नाराज है. जाहिर है कि दोनों विधायकों की नाराजगी राजद प्रत्याशी के लिए महंगी साबित हो रही है.

दूसरी ओर नरेन्द्र मोदी की बक्सर में हुई चुनावी सभा का असर आरा में भी देखने को मिल रहा है. ईमानदार तथा साफ सुथरी छवि वाले नौकरशाह भाजपा प्रत्याशी आर.के. सिंह मोदी लहर तथा सामाजिक समीकरणों के सहारे मजबूत चुनौती दे रहे है. ब्राह्मण, भूमिहार, कायस्त, वैश्य का समीकरण भाजपा के साथ है. पिछड़ी तथा अल्पसंख्यक मतों का बिखराव हो रहा है. राजपूत मतदाता भाजपा तथा जदयू में बंटे हुए है. यादव तथा पिछड़ी मतों को खींचने के लिए राजद तथा भाकपा (माले) प्रत्याशी राजू यादव जोर लगाये हुए है. वर्षो बाद चुनाव मैदान में भाजपा की मौजूदगी से सभी दलों को सामाजिक तथा राजनीतिक समीकरणों में सेंध लगा दी है. राजद तथा जदयू के बाहर भीतर चल रहे घात–प्रतिघात के साथ ही प्रतिदिन बदलती हुई राजनीतिक परिस्थितियां चुनाव परिणाम को चौंका सकती है. क्षेत्र में बिजली, बाढ़ कटाव, सड़क तथा अमन चैन के मुद्दे प्रत्याशियों को परेशान कर रहे है. मुखिया हत्या काण्ड को लेकर पूछे जाते सवाल भी असहज स्थिति पैदा कर देते है. कुल मिला कर गर्माते चुनावी माहौल से आरा में त्रिकोणात्मक लड़ाई की स्थिति बनी है और स्थिति भी साफ होने लगी है.

– जय मंगल पाण्डेय

Enjoy with Nature
MOULDED FURNITURE
NATURE MOULDED FURNITURE
WINNER OF NATIONAL AWARD
1 YEAR GUARANTY शर्तें लागू
Contact : 9386595926, 9334115955

दांतों की सुरक्षा कैसे
ariskon Pharma Pvt.Ltd.
An ISO 9001 : 2008 Certified Co.
डॉ नीशु कुमारी
दन्त चिकित्सक, पटना

हमारे मुंह बैक्टीरिया से भरे हुए है. जिसमें कुछ बैक्टीरिया सहायक होते हैं लेकिन कुछ हानिकारक भी हो सकते हैं. पटना की रहनेवाली डेंटिस्ट नीशु कुमारी ने बताया, कि लार दांतो के लिए आवश्यक है यह खाद्य कणों को पचाने में मदद करता है। यादि खादय कण दांतो के बीच फंसे रहें तो केवटीज हो सकती है, कभी कभी ठंढा या गरम खाने से हमारे दांतो में दर्द या झंझनाहट हाती है यह प्रॉब्लम सेंसिटिविटि के कारण होता है, दांतो में पीलापन कैल्शियम की कमी के कारण होता है. डॉ. नीशु आगे बताती हैं कि फ्लोराइड दांतो की रक्षा के लिए काम करता है, इसलिए हमें फ्लोराइड युक्त टूथपेस्ट इस्तेमाल करना चाहिए, इससे हमारे दांतो में सेंसिटिविटि होने के आसार कम हो जाते हैं और दांत पीले भी नहीं होते. कैविटीज से बचने के लिए फ्लोराड्ड टूथपेस्ट का इस्तेमाल दैनिक जीवन में आवश्यक है. दिन में प्रतिदिन दो बार ब्रश करना बहुत आवश्यक है साथ ही एंटीसेप्टिक माउथवॉश या एंटीप्लेग माउथवॉश का प्रयोग अवश्य करे. अच्छी तरह से दांत साफ करने के लिए चिकित्सक का सलाह लें और साल में दो बार अपने दांतो का चेकप जरूर कराएं। प्रस्तुतिःअमृता कुमारी

URSLIV Tab.
Ursodeoxycholic Acid 300 mg
Rabinok-DSR
Entenic Coated Rabeprazole & Domeridone Sustained Release Cap.
AREX
Dextromethorphan, Guaiphenesine Ammonium chloride Cough Syp.
DUCORT
Deflazacort Tab/Sus.
ARISKONZYME Syrup.
For Proper Digestion & Normal gastric functions
NOKSIRA
NOKSIRA Pharma Pvt.Ltd.
A Division of AriskonPharma

समस्या आपकी समाधान Dr. Advice से

प्रश्न : मेरे ससुर जी के आंख में मोतियाबिंद की शिकायत है और वे ऑपरेशन से बचना चाहते हैं। ऐसी स्थिति में CINERARIA MARITIMA REPL डालना उचित होगा। रिचा स्वामी, राजस्थान
उत्तर : आप CINERARIA MARITIMA REPL दिन में 2 बार दोनों आँखों में 2-2 बूंद डालें। यह प्रक्रिया कुछ दिनों तक चालू रखें। आपको स्थायी निदान मिलेगा। क्योंकि यह बाजार में अन्य आईड्रॉप से अधिक प्रभावशाली व परिष्कृत है।
प्रश्न : डॉ साहब मेरी उम्र 23 वर्ष है, गलत आदतों के कारण अत्यधिक कमजोरी है, इच्छा मात्र से ही असंयमित हो जाता हूँ। मधुरेन्द्र, देहरादून
उत्तर : गलत संगत या बुरी आदत के कारण अक्सर ये सब होता है। आप अपने काम पर ध्यान दें और विगोरा 2000 की 7 शीशी का कोर्स करें निश्चित फायदा होगा।
प्रश्न : मेरी आयु 33 वर्ष है एवं मैं विवाहित हूँ पेशाब में धातक्षीणता की शिकायत है। जिससे मैं कफी चिंतित रहता हूँ। कोई अच्छा और हानिरहित उपाए बतायें। आविद, फिरोजाबाद।
उत्तर : आप निराशा मन से निकाल दें और विगोरा 5000 की 6 शीशी का कोर्स करें एवं विगोरा ऑयल से मालिश करें। यह होमियोपैथिक लिक्यूड दवा है जिसका कोई भी साइड इफेक्ट नहीं है।
प्रश्न : मेरी उम्र 54 साल है, मैं बाबासीर का मरीज हूँ, पिछले कुछ दिनों से इच्छा होते हुए भी समर्थ नहीं हो पाता हूँ। स्थायी उपचार बतायें। सुधीर सिंह, जयपुर
उत्तर : सुधीर जी! बाबासीर की रोकथाम के लिये आप पाइलेलैक्स लिफलेट के निर्देशानुसार इस्तेमाल करें और विगोरा 5x का 6 शीशी का कोर्स करें और सुबह-शाम हाई पावर मुसली आयल से दो महीने तक लगातार मालिश करें। आपको लाभ होगा।
प्रश्न : डॉ. साहब मेरी उम्र 68 वर्ष है। शरीर से बिल्कूल स्वस्थ्य हूँ, लेकिन इच्छाशक्ति के रहते हुये भी शरीर साथ नहीं देता। कोई आयुर्वेदिक तात्कालिक समाधान बतायें। जगदीश प्रसाद, झरिया।
उत्तर : आप सुपर सोनिक कैप्सूल समय से दो घंटा पहले लें। यह दवा पूर्णतः आयुर्वेदिक है एवं इसका कोई भी साइड इफेक्ट नहीं है।
प्रश्न : पिछले 7-8 वर्षों से मेरे घुटनों और कमर में बहुत दर्द रहता है। दर्द की वजह से चलना-फिरना मुश्किल हो गया है कोई आयुर्वेदिक उपचार बतायें। देवंती सिंह, दिल्ली
उत्तर : आप ऑर्थोविट कैप्सूल सुबह-शाम एक कैप्सूल लें और ऑर्थोविट ऑयल से प्रभावित जोड़ों की मालिश करें काफी लाभ होगा।
प्रश्न : मेरी उम्र 24 वर्ष है। अविकसित सीना के कारण हीन-भाव से ग्रसित हूँ। आशा है कि आप मुझे सही मार्गदर्शन करेंगे। स्नेहलता वर्मा, नोयडा।
उत्तर : सीना का संपूर्ण विकास नहीं होने के अनेक कारण हैं, जैसे हार्मोन्स की कमी अनुवांशिक। आप चिन्ता मन से निकाल दें एवं Breastriim Oil का सुबह-शाम दिये गये निर्देश के अनुसार 3 माह तक मसाज करें। इसके नियमित इस्तेमाल से सीना का विकास आयेगा एवं आप आकर्षक नजर आएंगी।
प्रश्न : बालों के निरन्तर झड़ते रहने के कारण सिर पर गंजापन हो गया है, मैं इस समस्या से बहुत चिन्तित हूँ, उपाय बतायें। उपेन्द्र सिंह, कानपुर
उत्तर : बालों के झड़ने, टुटने से बचने के लिए आप केशवर्धक तेल का नियमित इस्तेमाल करें। इसके इस्तेमाल से बाल झड़ना एवं टूटना तत्काल समाप्त हो जायेगा।
प्रश्न : मैं 38 वर्षीय पुरूष हूँ। समस्या यह है कि शरीर में हर वक्ता आलस बना रहता है काम में भी मन नहीं लगता है। कोई आयुर्वेदिक दवा बताये। शम्भु सिंह, देहरादून
उत्तर : शम्भु जी! आप हाईपावर मुसली कैप्सूल का 1 कैप्सूल प्रत्येक दिन रात में सोते वक्त दूध के साथ लें और हाई पावर मुसली ऑयल दो बार 45 दिनों तक इस्तेमाल करें आपके शरीर में शक्ति आयेगी एवं आलस भी दूर रहेगा।
चिकित्सीय परामर्श के लिए स्वपता लिखित डाक लिफाफा, निम्न पते पर भेजें : REPL प्लाजा, तीसरा तल्ला फेडरल, पटना - 801505
विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें 9304291051
किसी भी रोग संबंधी निदान के लिए Dr. Advice पुस्तिका (होमियोपैथिक) निकटतम स्टॉकिस्ट से मुफ्त प्राप्त करें।
REPL द्वारा जनहित में प्रकाशित

# सीमांचल में आसान नहीं है मुकाबला

किशनगंज में लोक सभा चुनाव के साथ यहां की दो विधान सभा सीटों बायसी एवं कोचाधामन पर भी 24 अप्रैल को ही उपचुनाव हो रहे हैं. भाजपा ने शेरशाहबादी के प्रत्याशी को कोचाधामन से उम्मीदवार बनाया है. वहीं बायसी से कुल्हैया के मुसलमान को प्रत्याशी बनाया है, जिससे ये दोनो समुदाय भाजपा प्रत्याशी को मात देने के लिए गोलबंद हो रहे हैं. वहीं सुरजापुरी मुसलमान का वोट भी दिलीप जायसवाल को मिलने की संभावना है क्योंकि विकास को लेकर इस समुदाय के लोग जदयू एवं कांग्रेस पर सवाल खड़ा कर रहे हैं.

नीरज सिंह
feedback@chauthiduniya.com

सीमांचल की लोकसभा सीटों पर मतदान एक ही दिन 24 अप्रैल को होना है. सभी राजनीतिक दल चुनावी मैदान में जोर अजमाने को लेकर अपने उम्मीदवारों के पत्ते खोल चुके हैं. अगर देखा जाए तो सीमांचल विगत दो दशकों से भाजपा का गढ़ बना हुआ है लेकिन सीमांचल के राजनीतिक जानकारों एवं विश्लेषकों के अनुसार इसबार जदयू ने भाजपा एवं नरेन्द्र मोदी को रोकने के लिए हम नहीं तो तुम भी नहीं की तर्ज पर राजनीतिक चक्रव्यूह की रचना कर डाली है. मालूम हो कि नीतीश कुमार की नरेन्द्र मोदी के साथ प्रतिस्पर्धा जगजाहिर है. यहां तक कि राजनीतिक महात्वकांक्षा को लेकर नीतीश कुमार पर भाजपा से गठबंधन तोड़ने का आरोप लगा. नरेन्द्र मोदी के समर्थन में और नीतीश कुमार के विरोध में जो दो नेता बिहार में तेजी से उभरे उनमें पूर्णियां सांसद उदय सिंह उर्फ पप्पू सिंह एवं पुर्व मंत्री गिरिराज सिंह प्रमुख थे. उदय सिंह जहाॅ पूर्णिया से सांसद हैं और चुनाव मैदान में हैं वहीं गिरिराज सिंह को नवादा से भाजपा ने टिकट दिया है. अतः इन दोनों नेताओं पर बिहार के मुख्यमंत्री की पैनी नजर है.

पूर्णिया में पहले जदयू द्वारा लेसी सिंह को लड़ाने कि चर्चा थी लेकिन बाद में नीतीश कुमार ने बायसी विधायक संतोष कुशवाहा को तोड़कर जदयू का टिकट थमा दिया हालांकि पूर्णिया में यह सबको मालूम है कि पूर्णिया सांसद उदय सिंह कि कृपा से ही संतोष कुशवाहा को बायसी से भाजपा का टिकट मिला था और चुनाव में उदय सिंह ने संतोष कुशवाहा को जीत दिलाने के लिए एड़ी– चोटी एक कर दिया था. मालूम हो कि मुस्लिम बहुल बायसी में चुनाव जीतकर भाजपा ने इतिहास रचा था. लेकिन आज संतोष कुशवाहा पूर्णिया सांसद को ही चुनौती पेश कर रहे हैं. जदयू द्वारा यहां तर्क यह दिया जा रहा है कि संतोष कुशवाहा कोयरी–कुर्मी, मुस्लिम एवं अन्य जातियों को गोलबंदी करके उदय सिंह को कड़ी ठक्कर दे सकते हैं. वहीं संतोष कुशवाहा वैसे भाजपा कार्यकताओं से मिल रहे हैं जो दो लोक सभा चुनाव जीतने के बाद भी सांसद के यहां सम्मान नहीं मिलने व विकास योजनाओं में सहभागी नही बनाए जाने से नाराज दिख रहे हैं. मालूम हो कि पूर्णिया ससंदीय क्षेत्र में 14 लाख के आसपास मतदाता हैं. 2009 के लोकसभा चुनाव में कुल 7 लाख 4 हजार 752 मत पड़े थे. इस चुनाव में उदय सिंह ने 3 लाख 62 हजार 952 मत प्राप्त करके कांग्रेस समर्थित निर्दलीय प्रत्याशी व पूर्व सासंद पप्पू यादव की मां शांति प्रिया को 1 लाख 86 हजार 227 मतों के अन्तर से हराया था. किशनगंज लोकसभा की अगर बात की जाए तो यहां नीतीश कुमार ने राजद विधायक अख्तरुल ईमान को जदयू से लोकसभा का टिकट दिया है. जबकि यहां कांग्रेस ने वर्तमान सांसद मौलाना असरारुल हक कासमी पर ही विश्वास जताया है. मुसलमानों की 68 प्रतिशत अबादी वाले इस क्षेत्र में सुरजापुरी 47 प्रतिशत कुल्हैया में लगभग 30 प्रतिशत शेरशाहबादी में 15 प्रतिशत व अन्य मुसलमानो की आबादी 3 प्रतिशत है. जदयू प्रत्याशी अख्तरुल ईमान एवं कांग्रेस प्रत्याशी मौलाना असरारुल हक दोनों सुरजापुरी मुसलमानों से ही आते हैं.



भाजपा ने यहां किशनगंज स्थित एमजीएम मेडिकल कॉलेज के निदेशक विधान पार्षद व भाजपा कोषाध्यक्ष दिलीप जायसवाल को मैदान में उतारा है. 2009 के लोक सभा चुनाव में जहां बिहार में एनडीए ने दूसरे दलो को सकते में डाल दिया था वही किशनगंज में कांग्रेस ने एनडीए के रथ को रोक दिया था. कांग्रेस के मौलाना असरारुल हक कासमी ने जदयू के महमूद अशरफ को करीब 79 हजार मतों के अतंर से हराया था जबकि राजद के तस्लीमुद्दीन तीसरे स्थान पर रहे थे. 2004 में यहां से राजद के तस्लीमुद्दीन सांसद थे.

भाजपा ने यहां किशनगंज स्थित एमजीएम मेडिकल कॉलेज के निदेशक विधान पार्षद सह भाजपा कोषाध्यक्ष दिलीप जायसवाल को मैदान में उतारा है. 2009 के लोक सभा चुनाव में जहां बिहार में एनडीए ने दूसरे दलो को सकते में डाल दिया था वही किशनगंज में कांग्रेस ने एनडीए के रथ को रोक दिया था. कांग्रेस के मौलाना असरारुल हक कासमी ने जदयू के महमूद अशरफ को करीब 79 हजार मतों के अतंर से हराया था जबकि राजद के तस्लीमुद्दीन तीसरे स्थान पर रहे थे. 2004 में यहां से राजद के तस्लीमुद्दीन सांसद थे. जबकि इससे पहले भाजपा के शाहनवाज हुसैन यहां से सांसद बने थे लेकिन तब भाजपा एवं जदयू मिलकर चुनाव लड़ रहे थे लेकिन अब दोनों दलों कि राहे अलग है. किशनगंज में इसबार का लोक सभा चुनाव राष्ट्रीय मुद्दे को छोड़कर स्थनीय मुद्दे पर लड़ा जा रहा है. जहां जदयू एएमयू कृषि कॉलेज के देने के मुद्दे पर चुनाव मैदान में है तो कांग्रेस एएमयू के मुद्दे पर चुनाव मैदान में है जबकि भाजपा सामाजिक तथा कई तरह के स्थानीय मुद्दों को लेकर चुनाव मैदान में है. भाजपा प्रत्याशी दिलीप जायसवाल डोर–टू–डोर संपर्क अभियान चलाकर विगत 25 वर्षो से लायन्स क्लब एमजीएम मेडिकल कॉलेज के सौजन्य से किए गए स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में मुफ्त चिकित्सा सेवा उपलब्ध कराने को लेकर सभी जाति धर्मो के गरीब जनता से कार्यों का फल मांग रहे हैं ताकि सांसद बनाने के बाद किशनगंज लोकसभा क्षेत्र में विकास की गंगा बह सके. अपने चुनावी दौरे में दिलीप जायसवाल किशनगंज के चाय, अनानास उत्प–ादक छोटे किसानों के दुख–दर्द का उल्लेख कर रहें हैं. किशनगंज के पिछड़ेपन को लेकर उनके द्वारा यह उल्लेख किया जाता है कि आजादी के 65 साल तक यहाँ कि जनता ने सबको मौका दिया एक बार यहाँ कि जनता मुझे मौका दे दिलीप जायसवाल कि बातों का सर्मथन करते हुए किशनगंज के वरिष्ठ भाजपा नेता व भाजपा क्रीड़ा मंच के प्रदेष उपाध्यक्ष वरुण सिंह का कहना हैं कि कांग्रेस के सासंद रहते हुए भी किशनगंज रेलवे के विकास के मामले में उपेक्षित रहा. जहां गलगलिया– अलुवाबाड़ी रेल खंड को ट्रेन एवं स्टेशन के मामले में उपेक्षित कर दिया वहीं अररिया– गलगलिया रेल खंड का निर्माण नहीं हो सका. वहीं प्रदेश की जदयू सरकार द्वारा पोठिया में सरकारी क्षेत्र में टी प्रोसेसिंग यूनिट के नाम पर जनता की गाढ़ी कमाई का 13 करोड़ रुपया पानी में बहा दिया गया.

किशनगंज में लोक सभा चुनाव के साथ यहां की दो विधान सभा सीटों बायसी एवं कोचाधामन पर भी 24 अप्रैल को हीं इपचुनाव हो रहें हैं. भाजपा ने शेरशाहबादी समुदाय के प्रत्याशी को कोचाधामन से उम्मीदवार बनाया हैं. वहीं वायसी से कुल्हैया समुदाय के मुसलमान को प्रत्याशी बनाया है जिससे इन दोनों समुदाय के लोग भाजपा प्रत्याशी को मत देने के लिए गोलबंद हो रहे हैं. वहीं सुरजापुरी मुसलमान का वोट भी दिलीप जायसवाल को मिलने कि की संभावना हैं क्योंकि विकास को लेकर इस समुदाय के लोग जदयू एवं कांग्रेस पर सवाल खड़ा कर रहे हैं .

अररिया लोकसभा चुनाव में जदय ने जाकिर अनवर के स्थान पर विजय मंडल को टिकट देकर भाजपा सांसद प्रदीप सिंह की राह कठिन कर दी हैं अररिया में विजय मंडल के स्वजातीय मतदाताओं की संख्या 4 लाख के आसपास हैं. स्थानीय जानकारों का कहना हैं कि अररिया में नीतीश कुमार ने नरेन्द्र मोदी को रोकने की चाल चली है. 2009 के लोक सभा चुनाव में प्रदीप सिंह ने 2502 मतों के मामूली अंतर से जाकिर अनवर खान को हराया था. यहां भी भाजपा कार्यकर्ता प्रदीप सिंह से नाराज दिख रहे हैं. अगर मुस्लिमों का ध्रुवीकरण हुआ तो कुल आबादी का 40 प्रतिशत मुसलमान वाले इस क्षेत्र में चौकाने वाले परिणाम हो सकते हैं. कटिहार में भी जदयू ने एनसीपी के तारिक अनवर एंव भाजपा के निखिल चौधरी के खिलाफ पूर्व विधायक रामप्रकाश महतो को चुनाव मैदान में उतारा है. अगर मुस्लिम मतों का ध्रुवीकरण होता है तो यहां भी चौकाने वाले परिणाम आ सकते हैं क्योंकि लगभग 40 प्रतिशत मुसलमानों की आबादी वाले इस क्षेत्र में 2009 के लोकसभा चुनाव में लोजपा कि तरफ से अशफाक करीम भी मैदान में थे वे इसबार चुनाव मैदान मे नहीं हैं. कुल मिलाकर चुनाव परिणाम के बाद ही पता चलेगा कि भाजपा, जदयू के राजनीतिक चक्रव्यूह को कहां तक भेद पाती है.

# एक नज़र

## खुशहाल समाज के लिए तालीम जरूरी



जब तक पूरा समाज तालीमयाफ्ता नहीं हो जाता तब तक समाज व राष्ट्र की तरक्की संभव नहीं है. तालीम से ही इंसान की पहचान होती है और उसकी प्रतिभा में निखार आता है. अरेराज अनुमण्डल के दरियापुर मदरसा में संकल्प एवं आशा संगठन द्वारा आयोजित क्विज प्रतियोगिता के बाद समारोह को संबोधित करते हुए वक्ताओं ने कही. समारोह को संबोधित करते हुए अध्यक्ष नुसरत अली खां ने कहा कि मजहब–ए–इस्लाम हमेशा शिक्षा हासिल करने का संदेष देता है और जीने का मकसद बताता है. उन्होंनें कहा कि तालीम एक ऐसी चीज है जिसकी खरीद व बिक्री नहीं हो सकती. उन्होने लड़कों के साथ–साथ लड़कियों की तालीम पर विशेष ध्यान देने का आहवान किया और कहा कि लड़कियों को तालीमयाफ्ता होना समय की मांग है. इस अवसर पर मौजूद सचिव अशरफ अली ने शिक्षा पर विशेष जोर देते हुए अभिभावकों से अपने–अपने बच्चों को बेहतर तालीम देने की अपील की. उन्होंने तालीमयाफ्ता समाज की विशेषताओं पर विस्तार से रोशनी डाली और नसीहत लेने का आहवान किया. मौके पर सीईओ आलमगीर खां, मीडिया इंचार्ज ओजैर सालीम, सुबहानी खां, अब्दुल गनी खां, हाजी इजहार हुसैन, शाहआलम अंसारी, उमर खां व अन्य मौजूद थे.

– इन्तेजारुल हक

## मुकाबला भाजपा–कांग्रेस में



चतरा संसदीय सीट का ध्रुवीकरण दो पक्षीय लग रहा है. भाजपा के प्रत्याशी सुनील कुमार सिंह चुनावी समर में हैं. उनके प्रचार–प्रसार में सभी दिग्गज चुनाव प्रचार में उतर गए हैं. वहीं कांग्रेस प्रत्याशी धीरज प्रसाद साहु के प्रचार में केवल केन्द्रीय मंत्री जयराम रमेश, प्रदेश अध्यक्ष सुखदेव भगत ही क्षेत्र का भ्रमण कर रहे हैं. जनता के रुझान से चतरा संसदीय सीट पर भाजपा की पकड़ मजबूत मानी जा रही है. इधर झारखण्ड विकास मोर्चा में अन्तर्कलह सतह पर आ गई है जिसका नुकसान वर्तमान प्रत्याशी नीलम देवी को हो सकता है. – अमरेंद्र सिंह

## 27 वां श्री विराट विष्णु महायज्ञ आयोजित



विश्व शांति एवं मानव कल्याणार्थ श्री श्री 1008 श्री विराट विष्णु महायज्ञ का भव्य आयोजन फॉरबिसगंज स्थिति कोठी हाट रोड में किया गया. श्री विष्णु यज्ञ समिति के तत्वावधान में यह आयोजन पिछले 27 वर्षों से अनवरत जारी है. यह आयोजन चैत्र शुक्ल एकम से प्रारंभ होकर एकादशी तिथि तक चलता है. इस यज्ञ को लेकर लोगों में यह मान्यता है कि श्रद्धापूर्वक मांगी गई मन्नत भगवान विष्णु एवं माता लक्ष्मी सहित सभी देवी देवताओं के द्वारा अवश्य रूप से पूरी की जाती है. इसी मान्यता को लेकर न सिर्फ फॉरबिसगंज शहरवासी वरन ग्रामीण क्षेत्रों के अलावा पूरे अररिया जिला एवं नेपाल के हजारों श्रद्धालुओं की भीड़ पूरे ग्यारह दिन तक बनी रहती है. पूजन का कार्य पड़ोसी राष्ट्र नेपाल के विद्वान आचार्यो के द्वारा भक्ति–भाव से मुख्य यजमान के जरिए कराया जाता है. अनवरत यज्ञ में अग्नि देवता को आहूति भी श्रद्धालुओं के द्वारा दी जाती है. हरे राम– हरे राम– हरे कृष्ण हरे–कृष्ण की धुन से पुरा शहर विष्णु मय हो चुका है. यज्ञ स्थल पर मेले का दृश्य बना हुआ है. यज्ञ समिति के सभी सदस्य सक्रिय रूप से श्रद्धालुओं की सेवा में जुटे हैं.

– संतोष झा

## अररिया में सभी 13 नामाकंन जांच में वैध पाए गए



अररिया संसदीय क्षेत्र के लिए चुनाव लड़ने के लिए इच्छुक उम्मीदवारों के द्वारा जिला निर्वाची पदाधिकारी अजय कुमार चौधरी के समक्ष दायर किए गए नामाकंन पत्रों की जांच का कार्य चुनाव आयोग द्वारा नियुक्त किए गए प्रेक्षक के समक्ष सोमवार को पूरा हुआ. इस जांच में सभी 13 प्रत्याशियों के नामाकंन फार्म वैध पाए गए. उल्लेखनीय है की अररिया संसदीय क्षेत्र से भारतीय जनता पार्टी से प्रदीप कुमार सिंह, राष्ट्रीय जनता दल से मो. तसलीमुद्दीन, जदयू से विजय कुमार मंडल, बसपा से अब्दुल रहमान, आम आदमी पार्टी से चन्द्रभूषण, जनता दल राष्ट्रवादी पार्टी से मो. असलम बेग, भारत विकास मोर्चा से राजेश कुमार, लोक दल से रामानंद ऋषिदेव, बहुजन मुक्ति पार्टी से विद्यानंद पासवान, भाकपा माले से संजय कुमार ऋषिदेव, सजपा राष्ट्रीय पार्टी से सरबात जहारे अंसारी का नाम शामिल हैं.

– चौथी दुनिया ब्यूरो

## मारवाड़ी समुदाय ने किया मां शीतला पूजनोत्सव

ठंडी–ठंडी रहियो माता शीतला के जयघोष के साथ मारवाड़ी समुदाय के लोगों के द्वारा मां शीतला का पूजनोत्सव काफी श्रद्धापूर्वक एवं भक्तिभाव के साथ किया गया. इस अवसर पर एक दिन पूर्व भोजन तैयार कर फारबिसगंज स्थित श्री श्री 1008 श्री लक्ष्मी नारायण मारवाड़ी ठाकुरबाड़ी में मां शीतला की प्रतिमा पर प्रसाद चढ़ाया गया एवं शीतल–शीतल जल अर्पण किया गया. लोगों के द्वारा अपने अपने परिवार के साथ पूरे समाज एवं पूरे राष्ट्र में शीतलता प्रदान करने का अनुरोध मां शीतला से किया गया. – संतोष झा

## अध्यक्ष बने अवधेश

बिहार केमिस्ट एंड ड्रगिस्ट एसोशिएसन की फारबिसगंज इकाई के लिए अध्यक्ष, सचिव एवं कोषाध्यक्ष का चुनाव काफी गहमा–गहमी के बीच स्थानीय सिद्ध सागर भवन में संपन्न हुआ. इस चुनाव में 339 मतदाताओं में से 318 मतदाताओं ने अपने–अपने मताधिकार का प्रयोग किया. इस चुनाव में अध्यक्ष पद के प्रत्याशी अवधेश कुमार साह ने जुबेर आलम को 31 मतों से, सचिव पद पर मनोज भारती ने सुरेन्द्र केशरी को 42 मतों से तथा कोषाध्यक्ष पद के लिये सुशील सोमानी ने अर्जुन साह को 29 मतों से पराजित किया. चुनाव का संचालन संघ के संरक्षक विनोद कुमार सरावगी, जयप्रकाश केडिया, खुर्शीद आलम, दीपक शर्मा, श्याम नारायण सिंह, लक्ष्मीकांत अग्रवाल, आशिक हुसैन, रंजन कुमार वर्मा के द्वारा किया गया. – अजातशत्रु अग्रवाल

# चुनावी समर में जाति व पार्टी आमने–सामने

लोकसभा चुनाव की तिथि करीब आने के साथ ही राजनीतिक चहलकदमी जोर पकड़ने लगी है. प्रत्याशियों ने जनसम्पर्क अभियान में अपनी ताकत झोंक दी है. शहर से लेकर गांव की गलियों तक चमचमाते वाहनों पर सवार राजनीतिक दल के प्रत्याशियों एवं नेताओं का काफिला लोगों के बीच फरियाद करने में लगा हुआ है. मजे की बात यह है कि तकरीबन सभी दलों में जाति व पार्टी की जीत को लेकर ही चुनावी बिसात बिछाई जा रही है. समस्या निदान को लेकर आंदोलनों की श्रृंखला चलाने वालों से लेकर नेता तक को फिलहाल जनसमस्याओं का ख्याल नही रह गया है. सीतामढ़ी में जाति के ठेकेदारों की चलेगी अथवा पार्टी का झंडा लहराएगा, फिलहाल यह बात पहेली बनी हुई है....

वाल्मीकि कुमार

लोकसभा चुनाव का समय जैसे–जैसे करीब आता जा रहा है, वैसे–वैसे चुनावी अखाड़े के पहलवानों की कसरत में भी इजाफा होता जा रहा है. सीतामढ़ी लोकसभा सीट से अब तक आधा दर्जन प्रत्याशी चुनावी दंगल में आ चुके हैं. 12 से 19 अप्रैल तक नामांकन के बाद ही साफ हो पाएगा कि



लड़ाई के मैदान में कुल सूरमाओं की संख्या कितनी है? जदयू से निवर्तमान सांसद डॉ. अर्जुन राय, राजद–कांग्रेस–राकांपा गठबंधन से पूर्व सांसद सीत–ाराम यादव, भाजपा–रालोसपा–लोजपा गठबंधन से राम कुमार शर्मा, बसपा से डॉ. महेश कुमार, टीएमसी से डॉ. राजीव रंजन एवं आम आदमी पार्टी से प्रो. किशोरी दास चुनावी अभियान में लगे हैं. दूसरी पूर्व सांसद नवल किशोर राय एवं रामेश्वर कुमार निर्दलीय रूप से ही मैदान में ताल ठोंक रहे हैं. इस चुनाव को लेकर सीतामढ़ी में नया समीकरण बनाने की दिशा में हर संभव प्रयास किया जाने लगा है. एक ओर भाजपा के नमो मंत्र का अखंड जाप चल रहा है तो दूसरी ओर दशकों की राजनीतिक विरासत को बचाने की मुहिम भी चलाई जा रही है.

राजद व जदयू के टिकट पर स्वजातीय प्रत्याशी होने के कारण यादव जाति के मतदाताओं में रस्साकशी की स्थिति बनी है. गैर भाजपा मुस्लिम मतों की बदौलत राजद प्रत्याशी व पूर्व सांसद सीत–ाराम यादव को जीताने में एक पक्ष लगा है तो दूसरा पक्ष टिकट वितरण में पार्टी के शीर्ष नेतृत्व की मनमानी से आहत होकर पार्टी प्रत्याशी को नुकसान देने की फिराक में लगा है. जदयू प्रत्याशी व निवर्तमान सांसद डॉ. अर्जुन राय की भी इस बार चुनावी समर में राह आसान नही नजर आ रही है. पिछले चुनाव में भाजपा–जदयू गठबंधन से लोकसभा पहुंचे अर्जुन को इस बार अपने ही दल के कार्यकर्ताओं का कोपभाजन बनना पड़ रहा है. सीतामढ़ी शहर के राधा कृष्ण गोयनका कॉलेज में हाल में सम्पन्न जदयू कार्यकर्ताओं की बैठक ने सबकुछ साफ कर दिया. पार्टी कार्यकर्ताओं की माने तो पिछले 5 साल में सांसद अर्जुन राय ने कार्यकर्ताओं की भावना की अनदेखी करने का काम किया है. इसका नतीजा है कि आसन्न चुनाव में कार्यकर्ता खुलकर मदद से परहेज कर रहे है. उधर भाजपा–रालोसपा–लोजपा गठबंधन के तहत राम कुमार शर्मा को बतौर प्रत्याशी मैदान में उतारा गया है. उनको गठबंधन दल के कुचक्र का सामना की विवशता परेशानी में डाल सकती है. जिले की राजनीति में पैठ रखने वालों की माने तो भाजपा नेतृत्व को ही सीतामढ़ी सीट मिलने की उम्मीद थी, परंतु गठबंधन के तहत सीट रालोसपा के पाला में आ गई. इसको लेकर कार्यकर्ता जिले के वरिष्ठ भाजपा नेताओं को जिम्मेदार मान रहे है. वहीं भाजपा के ही टिकट के दावेदार रहे नेताओं को भी रालोसपा प्रत्याशी रास नही आ रहे है. बताया जाता है कि गठबंधन धर्म की मजबूरी के कारण खुलकर विरोध तो संभव नही हो पा रहा है, लेकिन ईमानदार समर्थन की संभावना पर भी संदेह से इंकार नही किया जा सकता है. उधर शेष बचे बसपा के डॉ. महेश कुमार, आम आदमी पार्टी के प्रो. किशोरी दास एवं टीएमसी के डॉ. राजीव रंजन वोटों की सेंधमारी में जी–जान से लगे हैं. वैसे अभी सभी दलों के पास समीकरणों को ठीक करने का वक्त बचा है. समय रहते जो सही चुनावी पारी खेलने में कामयाब होगा, उसकी राह अधिक आसान होना तय है.

अब इस बात पर भी गौर करने की जरूरत है कि जाति व पार्टी के चुनावी संग्राम में अब तक कहीं भी स्थानीय मुद्दों की चर्चा तक नही की जा सकी है. सीतामढ़ी लोकसभा क्षेत्र में विकास का दंभ भरने वाले जनप्रतिनिधियों की सक्रियता का आलम रहा है कि पूर्व से चयनित अधिकांश योजन–ाओं के कार्यान्वयन पर ही अपनी पीठ ठोंकते रहे हैं. जाति व पार्टी की डफली बजाने वाले आम मतदात–ाओं से लेकर समाजसेवा के क्षेत्र में सजगता का राग अलापने वाले तथाकथित जातीय ठेकेदारों ने भी जनसमस्याओं को चुनावी मुद्दा बनाने से परहेज किया है. सीतामढ़ी शहर के मध्य से प्रवाहित होने वाली पावन लक्ष्मणा नदी का अस्तित्व रक्षा को लेकर लगातार विभिन्न राजनीतिक दलों व संगठनों द्वारा आंदोलनों की श्रृंखला चलाई गई, लेकिन चुनावी साल में अब तक यह मुद्दा नही बनाया जा सका है. तकरीबन दो दशक पूर्व से संचालित दूरदर्शन केंद्र की सच्चाई है कि जिले के लोगों को भी पता नहीं है कि सीतामढ़ी में दूरदर्शन केंद्र भी है. कारण कि केंद्र को बदहाली से उबारने की दिशा में पहल करने का जनप्रतिनिधियों ने प्रयास ही नहीं किया है.

छात्र नेताओं का राजनीतिक क्षेत्र में आने के बाद कॉलेजों की दशा भी दयनीय होकर रह गई है. दर्जनों प्राध्यापकों से भरे रहने वाले सरकारी कॉलेजों में महज चंद प्राध्यापक रह गए हैं लेकिन नेताओं की चापलूसी में लगे छात्र नेताओं को इसकी परवाह नहीं है. चुनावी साल में छात्र–छात्राएं जनप्रतिनिधियों को घेर पाएंगे, असंभव प्रतीत हो रहा है. किसानों का हितैषी होने का दंभ भरने वाले किसान नेता भी सत्ता के गलियारे में दलगत झंडा ढोने में लग गये है. गन्ना किसानों के बकाया भुगतान को लेकर धरना–प्रदर्शन करने वाले इस वक्त किसानों की परछाई से दूर नजर आ रहे हैं. सिंचाई की सुविधा का अभाव परेशानी का सबब बना है. बांध से विस्थापितों के पुनर्वास एवं फसल क्षति को लेकर मुआवजा की मांग भी गुम हो गई है. स्वास्थ्य सेवा का आलम है कि सीतामढ़ी को जिले का दर्जा मिलने के तीन दशक बाद भी सदर अस्पताल की स्वीकृति नही मिल सकी है. नगर के एक मात्र उद्यान का सौंदर्यीकरण मुश्किल बना है. वहीं दूसरी ओर जिला मुख्यालय डुमरा में मौजूद निर्माणाधीन स्टेडियम जिले की खेल प्रतिभाओं को तनाव दे रहा है. ऐसा भी नही कि जिले में विकास कार्य की गति अवरुद्ध है, मगर यह विडंबना ही है कि सड़क–पुल–पुलिया व रेल की पटरिया ही राजनीति का केंद्र बना रहा है. अरबों रुपये प्रति वर्ष विकास योजनाओं में खर्च के बाद भी जिले में रोज–गार सृजन का नींव नही डाला जा सकी है. सौ साल पुरानी रीगा चीनी मिल के अलावा एक अदद औद्योगिक इकाइयों की स्थापना नही करायी जा सकी है. सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों की छोड़ भी दे तो शहर में लोगों को स्वच्छ पेयजल की समस्या से निजात नही मिल सका है.

स्वच्छता अभियान के बावजूद भी कचरों का सर्वत्र अंबार आम बात है. अतिक्रमण, यातायात व सुरक्षा अब भी गंभीर चुनौती बनी है. जगत जननी मां जानकी की पावन जन्म स्थली होने के बाद भी पर्यटन के दृष्टिकोण से समुचित विकास अब तक नही किया जा सका है. इनके साथ अन्य सवालों की चर्चा हर चौपालों पर होती है. हर कोई खुले मन से अपनी कमजोरी को स्वीकारते भी है, लेकिन कही जातीय बंधन तो कही पार्टी का इज्जत के सवाल पर चुप हो जा रहे है. 16 वीं लोकसभा चुनाव से पूर्व स्थानीय समस्याओं पर मतदाताओं का एक मत होता है अथवा जाति व पार्टी के बैनर में सभी गुम हो जाते है कुछ ही दिनों में साफ हो जायेगा. अब देखना है कि आसन्न चुनाव में जनससमस्या के निदान का मामला सामने आता है अथवा जाति–पार्टी के ठेकेदारों का झंडा लहरायेगा.

feedback@chauthiduniya.com

> कांग्रेस का राजद से यहां गठबंधन है. समस्तीपुर सुरक्षित लोकसभा क्षेत्र से पिछली बार जदयू के महेश्वर हजारी चुनाव जीते थे. वे इसबार भी जदयू उम्मीदवार हैं. दूसरे नंबर पर राजद लोजपा के उम्मीदवार लोजपा सुप्रीमो के अनुज रामचन्द्र पासवान रहे थे. तीसरे नम्बर पर कांग्रेस के डॉ. अशोक राम रहे परन्तु इस बार परिदृश्य कुछ और है.

# मिथिलांचल में उल्टा न पड़ जाए कांग्रेस का दांव

**जय शंकर पाण्डेय**

मिथिलांचल के विभिन्न लोकसभा क्षेत्रों में चुनावी रंग धीरे-धीरे परवान चढ़ने लगा है. वहीं मिथिलांचल में राजद-कांग्रेस गठबंधन के तहत समस्तीपुर सुरक्षित सीट छोड़कर यहां की सभी सीटें राजद कोटे में देने को लेकर मधुबनी में कांग्रेस पार्टी में विद्रोह शुरू हो गया है. अभी तक दस प्रखंड के प्रखंड अध्यक्ष व जिला कमेटी के 16 अधिकारी अपना इस्तीफा दे चुके हैं. वैसे इस्तीफा का सिलसिला अभी भी जारी है. साथ ही दरभंगा व सीतामढ़ी में भी अन्दर ही अन्दर विद्रोह की आग सुलग रही है. उल्लेखनीय है कि शिवहर, सीतामढ़ी, मधुबनी, झंझारपुर, दरभंगा, समस्तीपुर सुरक्षित व इजियारपुर सीट में से सिर्फ समस्तीपुर सुरक्षित सीट से डॉ. अशोक राम कांग्रेस के उम्मीदवार हैं. शेष सीटों पर राजद के उम्मीदवार हैं. मालूम हो कि 1980 तक मिथिलांचल कांग्रेस का गढ़ रहा है. इस गढ़ को 1989 में जनता दल की आंधी ने धवस्त कर दिया. तब से आज तक अधिकांश बार जनता दल, राजद या फिर राजग गठबंधन के भाजपा व जदयू के उम्मीदवार ही विजय रहे हैं. इसके बावजूद भी मधुबनी एक ऐसी सीट है जिस पर जनता दल या राजद का उम्मीदवार पिछला चुनाव छोड़कर कभी भी चुनाव नहीं जीता. मधुबनी से पूर्व में भाकपा या कांग्रेस उम्मीदवार ही चुनाव जीतते रहे हैं. कहा जाता है कि 1977 में जनता पार्टी से एक बार हुकुम देव नारायण यादव मधुबनी से चुनाव जीते थे. इसके अलावा भाकपा या कांग्रेस का ही इस सीट पर कब्जा रहा है. इधर दो बार भाजपा उम्मीदवार के रूप में हुकुमदेव नारायण यादव सांसद बनने में कामयाब हुए. पिछली बार जब राजद का कांग्रेस के साथ गठबंधन नहीं हो पाया, तो राजद की टिकट पर अब्दुल बारी सिद्दीकी ने किस्मत आजमाया था. भाजपा के हुकुमदेव नारायण यादव को 1,64,049 राजद के अबदुल बारी सिद्दीकी को 1,54,167 जबकि कांग्रेस उम्मीदवार डॉ. शकील अहमद को 1,11,423 मत मिला था. अब्दुल बारी सिद्दीकी भाजपा के हुकुमदेव नारायण यादव से चुनाव हारे थे. जबकि कांग्रेस तीसरे नम्बर पर रही. अब्दुल बारी सिद्दीकी दूसरे स्थान पर रहते हुए लगभग 10,000 मतों से चुनाव हारे थे और इसी को सिद्दीकी मुद्दा बनाकर मधुबनी से चुनाव लड़ने के लिए अड़ गए. यहां सवाल यह उठता है कि जब अब्दुल बारी सिद्दीकी पिछले चुनाव में मधुबनी से चुनाव लड़े थे और वे दूसरे स्थान पर रहे थे. जब इस बात को हवा देकर सिद्दीकी मधुबनी से चुनाव लड़ सकते हैं तो सीतामढ़ी में पिछली बार कांग्रेस के समीर महासेठ दूसरे स्थान पर रहे थे. उन्हें 1,22,216 मत मिला था. जदयू के अर्जुन राय लोक सभा चुनाव जीते थे. उन्हें 2,32,782 मत मिला जबकि राजद उम्मीदवार सीताराम यादव तीसरे नंबर रहते हुए 1,18,798 मत हासिल किए थे. इस आधार पर सीतामढ़ी की सीट कांग्रेस को मिलनी चाहिए थी, लेकिन ऐसा नहीं कर तीसरे स्थान पर रहे सीताराम यादव को वहां उम्मीदवार बनाया. शिवहर सीट पर भाजपा के रमा देवी चुनाव जीती थीं. श्रीमती देवी को 2,33,499 मत मिला था. दूसरे स्थान पर बसपा उम्मीदवार अनुबारूल हक रहे थे. उन्हें 1,07,515 मत मिला जबकि राजद के सीताराम सिंह को 89,584 मत मिला था. वे तीसरे स्थान पर चले गए थे. सीताराम सिंह के मृत्यु के बाद दूसरे स्थान पर रहे बसपा उम्मीदवार अनुवारूल हक को राजद ने इस बार अपना उम्मीदवार बनाया.

झंझारपुर में पिछले चुनाव में जदयू की टिकट पर मंगनी लाल मंडल सांसद बने. श्री मंडल को 2,65,175 जबकि राजद उम्मीदवार रहे प्रो. देवेन्द्र प्रसाद यादव को 1,92,466 वहीं कांग्रेस उम्मीदवार रहे कृपानाथ पाठक को 86,228 मत प्राप्त हुआ. इस चुनाव में पिछली बार राजद के उम्मीदवार रहे प्रो. देवेन्द्र प्रसाद यादव अबकी बार जदयू उम्मीदवार हैं जबकि जदयू की टिकट पर चुनाव जीते मंगली लाल मंडल इसबार लालटेन लेकर चुनाव मैदान में भाग्य आजमाने को तैयार हैं. जहां तक दरभंगा की बात है तो पिछली बार यहां से भाजपा नेता और पूर्व क्रिकेटर कीर्ति झा आजाद चुनाव जीतने में सफल हुए थे. कीर्ति को 2,39,268 मत मिला था वहीं पूर्व केन्द्रीय राज मंत्री रहे मो. अली असरफ फातमी को 1,92,815 मत मिला था और वे दूसरे स्थान पर रहे जबकि कांग्रेस उम्मीदवार अजय जलान को 40,724 मत प्राप्त हुआ था. कीर्ति झा आजाद भाजपा की टिकट पर इस पुन: भाग्य आजमा रहे हैं जबकि मो. अली असरफ फातमी राजद के इस बार भी यहां से उम्मीदवार हैं.

कांग्रेस का राजद से यहां गठबंधन है. समस्तीपुर सुरक्षित लोकसभा क्षेत्र से पिछली बार जदयू के महेश्वर हजारी चुनाव जीते थे. पुन: इसबार भी जदयू उम्मीदवार हैं. दूसरे नंबर पर राजद लोजपा के उम्मीदवार लोजपा सुप्रीमो के अनुज रामचन्द्र पासवान रहे थे. तीसरे नम्बर पर कांग्रेस के डॉ. अशोक राम रहे परन्तु इस बार परिदृश्य कुछ और है. लोजपा के रामचन्द्र पासवान इस बार एनडीए गंठबंधन की ओर से संयुक्त उम्मीदवार हैं. वहीं कांग्रेस-राजद की ओर से डॉ. अशोक राम साझा उम्मीदवार हैं. सम्पूर्ण मिथिलांचल में मात्र यही सीट राजद ने काँग्रेस के लिए छोड़ी है. जहाँतक इजियारपुर सीट की बात है तो पिछली दफा यहाँ से जदयू उम्मीदवार अश्वमेघ देवी चुनाव जीती थी. अश्वमेघ देवी को 1,80,044 मत मिला था जबकि राजद की ओर से युवा राजद के राष्ट्रीय अध्यक्ष आलोक कुमार मेहता को 1,54,770 मत मिला था व दूसरे स्थान पर रहे. वहीं माकपा के रामदेव वर्मा को 58,900 मत मिला था. इस बार जदयू ने पुन: अश्वमेघ देवी को उम्मीदवार बनाया है. वहीं कांग्रेस और राजद गठबंधन की ओर से आलोक कुमार मेहता चुनाव लड़ रहे हैं. पिछली बार काँग्रेस से शिवकुमार राय यहां से चुनाव लड़े थे और उन्हें 43,038 मत मिला था. भाजपा की ओर से नित्यानंद राय को उम्मीदवार बनाया गया. अब यहां सवाल यह उठ रहा है कि राजद गठबंधन के तहत इन सभी सीटों पर राजद का उम्मीदवार चुनाव लड़ेगा सिर्फ समस्तीपुर सुरक्षित सीट पर कांग्रेस चुनाव लड़ेगी.

श्री राम महादलित वर्ग से आते हैं. मिथिलांचन के सात सीटों में से छह पर राजद और एक पर कांग्रेस चुनाव लड़ेगा. कांग्रेस में भी अपने कोटे का समस्तीपुर सुरक्षित सीट अशोक राम को दिया है. वहीं पर राजद ने अपने कोटे के छह सीट में से एक भी सीट पर उच्च जाति को टिकट नहीं दिया. जिसका कि सीधा प्रभाव लोक सभा सीटों पर पड़ सकता है. कांग्रेस के साथ उच्च वर्ग में खासकर ब्राह्मण समाज आज भी है और वे कांग्रेस के लिए वोट करते हैं. ब्राह्मण-मुस्लिम गठजोड़ का परिमाण रहा है कि कांग्रेस विपरीत परिस्थिति में भी मधुबनी सीट पर कई बार चुनाव जीती है. पिछली बार मुस्लिम मत में विखराव के कारण काँग्रेस इम्मीदवार डॉ. शकील अहमद तीसरे नंबर पर चले गए थे. इस बार राजद इम्मीदवार अब्दुल बारी सिद्दीकी के जिद के कारण डॉ0 शकिल अहमद ने गठबंधन के लिए अपनी सीट राजद को दे दिया ताकि राजद काँग्रेस के गठबंधन हो सके और धर्मनिरपेक्ष में बिखराव नहीं होने पावे. भले ही डॉ. शकील अहमद ने धर्मनिरपे-क्षता के नाम खुद का सीट राजद के लिए छोड़ दी है परन्तु कांग्रेस कार्यकर्ताओं में बड़ा उबाल आ चुका है. वे लोग राजद और कांग्रेस के इस निर्णय को पचा नहीं पा रहे हैं और इसी का नतीजा है कि मधुबनी में अभी तक दस प्रखंड के प्रखंड अध्यक्ष सहित जिला कमेटी 16 पदाधिकारियों ने अपना इस्तीफा जिला अध्यक्ष को सौंप दिया. जिला कमेटी के जिन लोगों ने अपना इस्तीफा जिला अध्यक्ष को सौंपा है इसमें प्रमुख हैं - जिला महासचिव महेन्द्र नारायण झा, कृष्णकान्त झा, गुड्डू, राज कुमार झा राजू, मिथिलेश कुमार झा एकवाल अंसारी समसुल हक, समीम आजद, मो. अतुल अंजुम, गणेश झा, गंगाधर पासवान, शिवनाथ ठाकुर, शुभकान्त झा एवं मीनू पाठक प्रमुख हैं. इसके अलावा बेनीपट्टी के प्रखंड अध्यक्ष अवधेश सिंह रहिका के सनाउल्लाह, बिस्फी से वशिष्ट नारायण झा, हरलाखी के अजय कुमार, कलुवाही मो. शकील, पंडोल से पिताम्बर झा, बाबूबड़ही से कमलनाथ झा, अन्धराठाढ़ी से शुभंकर झा एवं झंझारपुर से सुजित कुमार झा सभी प्रखंड अध्यक्षों ने सामूहिक इस्तीफा जिला अध्यक्ष को सौंपा है. इनलोगों को कहना है कि समस्तीपुर सुरक्षित सीट राजद ने कांग्रेस को देकर कांग्रेस से जुड़े लोगों की भावना के साथ खिलवाड़ किया है. राजद ने भी एक भी उच्च वर्ग को इन सीटों पर टिकट नहीं देकर गठबंधन को कमजोर करने का काम किया है. मधुबनी, झंझारपुर या सीतामढ़ी सीट को क्यों नहीं राजद ने कांग्रेस के लिए छोड़ा. कांग्रेस कार्यकर्ता ने यह बगावती तेवर लगभग मधुबनी के अलावे समस्तीपुर, दरभंगा, सीतामढ़ी व शिवहर जिला कमिटी में भी सुलग रहा है. जिसका की सीधा असर लोक सभा चुनाव पर पड़ेगा. ■

> कांग्रेस के साथ उच्च वर्ग में खासकर ब्राह्मण समाज आज भी है और वे कांग्रेस के लिए वोट करते हैं. ब्राह्मण-मुस्लिम गठजोड़ का परिमाण रहा है कि कांग्रेस विपरीत परिस्थिति में भी मधुबनी सीट पर कई बार चुनाव जीती है.

feedback@chauthiduniya.com

# कास्ट फैक्टर के भरोसे प्रत्याशी

**इन्तेजारुल हक**

पूर्वी चम्पारण संसदीय क्षेत्र में विकास का मुद्दा एक बार फिर जाति व व्यक्ति आधारित समीकरण में खो गया है.पार्टियों द्वारा इम्मीदवारों के घोषणा किये जाने के साथ ही नेता व समर्थक विकास और बदलाव की बात भुलकर कास्ट फैक्टर के भरोसे अपनी नैया पार लगाने की जुगत में लग गये हैं.हालांकि इस क्षेत्र की जनता 1952 के लोकसभा चुनाव के बाद से ही विकास के मुद्दे व परिवर्तन की पुरजोर समर्थन करती रही है,बावजूद इसके नेताओं पर परिवर्तन का कोई असर नही दिखा.हर चुनाव की तरह इस बार भी हर दल के इम्मीदवार कास्ट फैक्टर पर ही जीत का गुणा-भाग और जोड़-घटाव करने में लगे हुए हैं. मोतिहारी लोक सभा सीट पर 1952 से 1977 तक व 1984 से लेकर 1989तक सब से अधिक समय तक कांग्रेस का वर्चस्व रहा,परन्तु अपने 20 वर्षो के प्रतिनिधित्व काल में कांग्रेस के किसी सांसद ने क्षेत्र के विकास की प्राथमिकता नही दी.इस लोक सभा क्षेत्र की एक और विशेषता यह रही है कि 1977 के लोकसभा चुनाव के बाद यह सीट किसी एक दल या या इम्मीदवार के प्रभाव में नही रही है.चार बार भाजपा व दो बार माकपा के अलावा अन्य पार्टियों का भी इस सीट पर कैंजा रहा है.हालाकि इनपर राजनीतिक दलों द्वारा प्रचारित जाति और दल आधारित भाषणों का असर यहां रहा है और मतदाता भी इसी आधार पर वोट देती रही है.इस सीट से सांसद बन दिल्ली पहुंचे कई नेता केन्द्र की सरकार में महत्वपूर्ण ओहदा प्राप्त करते रहे हैं किन्तु कभी भी पूर्वी चम्पारण को आगे बढ़ाने पर ध्यान नही दिया. उद्योग,बिजली,सड़क,शिक्षा और रोजगार के मामले में यह क्षेत्र अब भी काफी पिछड़ा है.यहां जदयू ने बिहार विधान सभा में शून्यकाल के पूर्व सभापति अवनिश कुमार सिंह,राजद ने विनोद श्रीवास्तव तथा भाजपा ने निवर्तमान सांसद राधामोहन सिंह को मैदान में उतारा है. इस लोक सभा निर्वाचन क्षेत्र में 6 विधान सभा क्षेत्र आता है जिसमें कायस्थ समाज के करीब 55 हजार, भूमिहार 70 हजार,राजपूत 80 हजार, वैश्य 2 लाख, मुस्लिम 1.82 लाख व यादव 1.50 लाख मतदाता है. इस लोक सभा क्षेत्र में कुल 14 लाख 22 हजार सतरह मतदाता हैं जिसमें 7 लाख 72 हजार 392 पुरूश,6लाख 49 हजार 591 महिला तथा 34 अन्य हैं. वहीं मदतान केन्दों की संख्या एक हजार 333 है. इस बार के चुनाव में राजद को अपने माय समीकरण के साथ-साथ कायस्थ्य मतदाताओं का समर्थन मिलने का भरोसा है तो वहीं भाजपा प्रत्याशी राधा मोहन सिंह को नमो की आंधी व अपने स्वजातीय मतदाताओं के बल पर अपनी नैया पार करने का प्रयास कर रहे हैं. वहीं जदयू प्रत्याशी अवनीश कुमार सिंह मुस्लिम व अपने स्वजातीय मतदाताओं के साथ-साथ अन्य समाज के मतदाताओं को गोलबंद करने में लगे हैं. कायस्थ्य समाज हमेशा से भाजपा का वोट बैंक रहा है और इसका सीधा लाभ राधामोहन सिंह को मिलता रहा है. दुसरी तरफ बसपा ने दलित समाज से सुरेश पासवन ने भी यहां अपने इम्मीदवार को खड़ा किया है.कुल मिलाकर पूर्वी चम्पारण संसदीय क्षेत्र में इस बार कास्ट फैक्टर सब से अधिक हावी है और सभी प्रत्याशी कास्ट आधारित वोटों पर जोड़-घटाव कर रहे हैं. ■

### इतिहास के आइने में मोतिहारी संसदीय क्षेत्र

**1952 से लेकर अब तक के सासंदों की सूची**

1-1952 से लेकर1957 तक विभूति मिश्रा-कांग्रेस
2-1957 से लेकर 1971तक विभूति मिश्रा -कांग्रेस
3-1971-1977तक विभूति मिश्रा- कांग्रेस
4-1977-1980 तक ठाकुर रामपति सिंहा-जनता पार्टी
5-1980-1984 तक कमला मिश्र मधुकर-सीपीआई
6-1984-1989 तक प्रभावती गुप्ता-कांग्रेस
7-1989-1991 तक राधामोहन सिंह-बीजेपी
8-1991-1996 तक कमला मिश्रा मधुकर-सीपीआई
9-1996-1998 तक राधामोहन सिंह-बीजेपी
10-1998-1999 तक रामादेवी-आरजेडी
11-1999-2004 तक राधामोहन सिंह-बीजेपी
12-2004-2009 तक डा0 अखिलेश प्रसाद सिंह-आरजेडी
13-2009-अब तक राधामोहन सिंह बीजेपी

कुल विधान सभा क्षेत्रों की संख्या-6
महिला मतदाताओं की संख्या-649591
पुरुष मतदाताओं की संख्या-772392
अन्य मतदाता-34
कुल मतदाता-1422017
कुल मतदान केन्द्रों की संख्या-1333

feedback@chauthiduniya.com

# चौथी दुनिया

हिंदी का पहला साप्ताहिक अख़बार

21 अप्रैल–27 अप्रैल 2014

Postal Regn. No. DL (ND)-11/6139/2012-13-14, RNI No. DELHIN/2009/30467

## उत्तर प्रदेश– उत्तराखंड

# दिग्गजों की लड़ाई

फोटो : प्रभात पाण्डेय

**कांग्रेस-भाजपा-सपा-बसपा आदि दलों ने लोकसभा चुनाव की बिसात पर कई मौजूदा और पूर्व सांसदों, विधायकों को उतारा है, वहीं ऐसे नेताओं पर भी दांव लगाया गया है, जो पिछला लोकसभा/विधानसभा चुनाव जीत नहीं सके थे. देश की दो प्रमुख पार्टियों कांग्रेस-भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष क्रमश: सोनिया गांधी और राजनाथ सिंह के अलावा, राहुल गांधी, रीता बहुगुणा जोशी, वरूण गांधी, जगदंबिका पाल, पीएल पुनिया, बेनी प्रसाद वर्मा, स्मृति ईरानी, कुमार विश्वास, बाहुबली ब्रज भूषणशरण सिंह, अतीक अहमद, रिजवान जहीर, पुराने और कांग्रेसी नेता जफर अली नकवी और जावेद जाफरी जैसे सितारे भी इसी क्षेत्र से किस्मत आजमा रहे हैं.**

अजय कुमार

उत्तर प्रदेश की सियासी बिसात पर अवध का डंका अलग बजता है. भौगोलिक रूप से अवध की जो परिभाषा तय की जाती है, उसके अनुसार अवध में 17 जिले (अंबेडकर नगर, बहराइच, बलरामपुर, बाराबंकी, फैजाबाद, गोंडा, हरदोई, लखीमपुर खीरी, लखनऊ, इलाहाबाद, कौशाम्बी, प्रतापगढ़, रायबरेली, सीतापुर, श्रावस्ती, सुल्तानपुर, उन्नाव) आते हैं. अगर यह कहा जाए कि यूपी और उसमें भी खासकर अवध क्षेत्र ने देश को आजादी के बाद हिन्दुस्तान की सियासत को कई आंदोलन और तमाम प्रधानमंत्री दिए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी. अवध की जमीं से जीत कर पंडित जवाहर लाल नेहरू, लाल बहादुर शास्त्री, इंदिरा गांधी, राजीव गांधी, वीपी सिंह, अटल बिहारी वाजपेयी ने देश–दुनिया में भारत का नाम खूब रोशन किया. आजादी के बाद सबसे अधिक समय देश पर राज करने वाले नेताओं की सूचि में उक्त नेताओं के नाम अग्रणी हैं. सियासत से अलग अवध भगवान राम की जन्मस्थली है, तो आदिकाल की लक्ष्मण नगरी (आज का लखनऊ), जिसे कालांतर में नवाबों के शहर के नाम से भी पहचाना गया. अवध क्षेत्र ने अपने जीवन में कई सियासी और सामाजिक उतार–चढ़ाव देखे.

आजादी के बाद देश की सियासत और जातिगत तानाबाना हिला कर रख देने वाला राम मंदिर और नौकरियों में आरक्षण आंदोलन यहीं की उपज था, जिसे मंडल–कमंडल के नाम से खूब सुर्खियां मिली थी. कांग्रेस के प्रधानमंत्री राजीव गांधी के कार्यकाल में अयोध्या मंदिर का ताला खुलने के बाद अस्सी के दशक में जब भारतीय जनता पार्टी और अन्य हिन्दूवादी संगठनों ने राम मंदिर आंदोलन की अलख जगाई, तो भाजपा के हिन्दुत्व के वेग को रोकने के लिए तत्कालीन प्रधानमंत्री वीपी सिंह ने मंडल कमीशन की सिफारिशें लागू करने के लिए सामाजिक समरसता को दांव पर लगा दिया. मंडल की आग में पूरा देश झुलस गया. आरक्षण समर्थकों और विरोधियों के बीच सड़क पर तांडव होने लगा. युवा सड़कों पर आत्मदाह करने लगे. भाजपा को मंडल कमीशन की सिफारिशें लागू होने से राजनैतिक नुकसान होते दिखा, तो इस समय के भाजपा के लौहपुरूष लालकृष्ण आडवाणी इसकी काट के लिए सोमनाथ से रामरथ लेकर चल पड़े. 'राम लला हम आएंगे और मंदिर वहीं बनाएंगे' के उद्घोष ने आग पर पानी डालने का काम किया. भाजपा की राजनीति इसके बाद उबाल पर आई और यह सिलसिला तब तक चलता रहा जब तक कि विवादित ढांचा नेस्तेनाबूद नहीं कर दिया गया.

अवध में इस बार भी कई नामचीन नेता, प्रधानमंत्री पद के संभावित दावेदार, सिने स्टार आदि दिग्गज भाग्य आजमा रहे हैं. अवध के 17 जिलों की सभी लोकसभा सीटों पर विभिन्न दलों ने जीत के लिए पूरी ताकत झोंक रखी है. कांग्रेस–भाजपा–सपा–बसपा आदि दलों ने लोकसभा चुनाव की बिसात पर कई मौजूदा और पूर्व सांसदों, विधायकों को उतारा है, वहीं ऐसे नेताओं पर भी दांव लगाया गया है, जो पिछला लोकसभा/विधानसभा चुनाव जीत नहीं सके थे. देश की दो प्रमुख पार्टियों कांग्रेस–भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष क्रमश: सोनिया गांधी और राजनाथ सिंह के अलावा, राहुल गांधी, रीता बहुगुणा जोशी, वरूण गांधी,जगदंबिका पाल, पीएल पुनिया, बेनी प्रसाद वर्मा, स्मृति ईरानी, कुमार विश्वास, बाहुबली ब्रज भूषणशरण सिंह, अतीक अहमद, रिजवान जहीर, पुराने और कांग्रेसी नेता जफर अली नकवी और जावेद जाफरी जैसे सितारे भी इसी क्षेत्र से किस्मत आजमा रहे हैं.

समाजवादी पार्टी ने अंबेडकर नगर सीट से राममूर्ति वर्मा को प्रत्याशी बनाया है. राममूर्ति वर्मा इसी जिले की अकबरपुर सीट से विधायक और वर्तमान में प्रदेश सरकार में कैबिनेट मंत्री हैं. गोंडा सीट से नंदिता शुक्ला को प्रत्याशी बनाया है, जो इसी जिले की गुजेहना सीट से विधायक हैं. मित्रसेन यादव फैजाबाद संसदीय सीट से सपा प्रत्याशी हैं और जिले की ही बीकापुर सीट से विधायक हैं. ऐसे ही अभिषेक मिश्र लखनऊ सीट से राजनाथ के मुकाबले सपा के उम्मीदवार है. जबकि वह लखनऊ उत्तर सीट से विधायक व प्रदेश सरकार में राज्यमंत्री हैं. कैसरगंज लोकसभा सीट से सपा प्रत्याशी विनोद कुमार सिंह उर्फ पंडित भी गोंडा सदर सीट से विधायक हैं. अध्यक्ष रहीं रीता बहुगुणा जोशी के घर पर आगजनी के आरोपी जितेंद्र सिंह बबलू को बसपा ने फैजाबाद लोकसभा सीट से प्रत्याशी बनाया है. यहां मित्रसेन यादव सपा के टिकट से, कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष निर्मल खत्री को टक्कर देने के लिए भाजपा ने लल्लू सिंह को प्रत्याशी बनाया है. वह पिछला विधानसभा चुनाव अयोध्या विधानसभा सीट से हार गए थे. श्रावस्ती लोकसभा सीट से भाजपा प्रत्याशी दद्दन मिश्रा भी पिछला चुनाव श्रावस्ती जिले की भिनगा विधानसभा सीट से हार गये थे.

कैसरगंज से भाजपा ने बाहुबली ब्रज भूशण शरण सिंह को मैदान में उतारा है. इनका मुकाबला अखिलेश सरकार के मंत्री विनोद इर्फ पंडित सिंह से है. कांग्रेस के लिए अबकी से सुल्तानुपर लोकसभा सीट आसान नही रह गई है. कांग्रेस प्रत्याशी अमीता सिंह अमेठी विधानसभा सीट से पिछला इलाके का चुनाव दिलचस्प हो गया है. सोनिया गाधी रायबरेली से और राहुल बगल की अमेठी सीट से पहले से ही चुनाव लड़ते रहे हैं. नई इंट्री के रूप में सुल्तानपुर लोकसभा सीट से सोनिया गांधी के भतीजे वरूण गांधी भाजपा प्रत्याशी हैं. इनका मुकाबला यहां के निवर्तमान सांसद संजय सिंह की पत्नी अनीता सिंह से है.

अनीता सिंह कांग्रेस के टिकट से मैदान में हैं. अमेठी में अभिनय से राजनीति में आईं स्मृति ईरानी और लखनऊ में फिल्म कलाकार जावेद जाफरी के मैदान में कूदने से अवध इलाके की दोनों सीटों (अमेठी और लखनऊ लोकसभा सीट) पर मुकाबला दिलचस्प हो गया है. भाजपा ने स्मृति ईरानी को अमेठी में राहुल गांधी के मुकाबले उतार दिया है, वहीं आम आदमी पार्टी कवि से नेता बने कुमार विश्वास के सहारे राहुल गांधी को टक्कर दे रहे हैं. अमेठी में कुमार विश्वास घर लेकर परिवार के साथ रहने भी लगे हैं, ताकि उन पर बाहरी होने का दाग नहीं लगे. उत्तर प्रदेश में मोदी की लहर चल रही है. इससे अवध भी अछूता नहीं है. मोदी के चलते भाजपा को अवध में बड़ी कामयाबी की उम्मीद है.■


feedback@chauthiduniya.com

**अमेठी में अभिनय से राजनीति में आईं स्मृति ईरानी और लखनऊ में फिल्मी कलाकार जावेद जाफरी के मैदान में कूदने से अवध इलाके की दोनों सीटों (अमेठी और लखनऊ लोकसभा सीट) पर मुकाबला दिलचस्प हो गया है. भाजपा ने स्मृति ईरानी को अमेठी में राहुल गांधी के मुकाबले उतार दिया है, वहीं आम आदमी पार्टी कवि से नेता बने कुमार विश्वास के सहारे राहुल गांधी को टक्कर दे रहे हैं. अमेठी में कुमार विश्वास घर लेकर परिवार के साथ रहने भी लगे हैं, ताकि उन पर बाहरी होने का दाग नहीं लगे.**

भाजपा ने भी अवध इलाके के अपने दो विधायकों कलराज मिश्र व सावित्रीबाई फुले को मैदान में उतारा है. कलराज मिश्र लखनऊ पूर्व सीट से विधायक हैं. इन्हें देवरिया सीट से पार्टी ने लोकसभा प्रत्याशी बनाया है. वहीं सावित्रीबाई फुले को बहराइच सुरक्षित लोकसभा सीट से भाजपा उम्मीदवार है. वह जिले की बलहा सुरक्षित सीट से विधायक हैं. कांग्रेस ने भी अवध क्षेत्र के अपने दो विधायकों को मैदान में उतारा हैं. रीता बहुगुणा जोशी लखनऊ कैंट सीट से विधायक हैं. बहराइच जिले की प्रयागपुर सीट से कांग्रेस विधायक मुकेश श्रीवास्तव को पार्टी ने कैसरगंज लोकसभा सीट से प्रत्याशी बनाया है.

भाजपा, बसपा और कांग्रेस ने ऐसे नेताओं पर भी दांव लगाया है, जो बीते विधानसभा के चुनाव में ही पराजित हो गए थे. बसपा के कद्दावर नेता व पूर्व कैबिनेट मंत्री रहे लालजी वर्मा को पार्टी ने श्रावस्ती लोकसभा सीट से मैदान में उतारा है. पिछला विधानसभा चुनाव वह अपने गृह जनपद अंबेडकर नगर की कटेहरी विधानसभा सीट से हार चुके हैं. नकुल दुबे को लखनऊ लोकसभा सीट से बसपा ने प्रत्याशी बनाया है. वह भी पिछला विधानसभा चुनाव हार गए थे. इनको भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजनाथ सिंह और सपा के अभिषेक मिश्रा तथा आम आदमी पार्टी के अभिनेता प्रत्याशी जावेद जाफरी से कड़ी टक्कर मिल रही है. कांग्रेस की प्रदेश चुनाव हार चुकी हैं. अंबेडकर नगर लोकसभा सीट से कांग्रेस प्रत्याशी अशोक सिंह फैजाबाद जिले की अयोध्या विधानसभा सीट पर कांग्रेस प्रत्याशी के रूप में अपनी जमानत जब्त करवा चुके हैं. इस बार से इनको सपा सरकार में मंत्री राममूर्ति वर्मा से कड़ी टक्कर मिल रही है. कभी पंडित जवाहरलाल नेहरू का संसदीय क्षेत्र रहे इलाहाबाद पर अब सपा का कब्जा है. सपा के कद्दावर नेता रेवती रमण सिंह यहां के सांसद हैं. सपा से आए पूर्व सांसद श्यामाचरा गुप्ता को भाजपा ने अपना प्रत्याशी बनाया है. गुप्ता को मोदी के नाम के सहारे बैतरणी पार कर लेने की उम्मीद है. आम आदमी पार्टी ने यहां से आदर्श शास्त्री को टिकट दिया है. इलाहाबाद जिले की ही फूलपुर संसदीय सीट पर कांग्रेस ने क्रिकेटर मो0 कैफ को उतार कर मुकाबला रोचक बना दिया है. बसपा के निर्वतमान सांसद कपिलमुनि करवरिया, सपा से पूर्व सांसद धर्मराज सिंह पटेल और आम आदमी से शिमला श्री मैदान में हैं. अवध में ही आता है जिला प्रतापगढ़. यहां से कांग्रेसी राजकुमारी रत्ना सिंह सांसद हैं. इससे पहले भी वह दो बार 1996 और 1999 में भी जीत चुकी हैं. भारतीय जनता पार्टी ने यह सीट समझौते के तहत अपना दल को दे दी है. सपा और बसपा को जनाधार तो है, लेकिन दोनों पार्टियों में बाहरी प्रत्याशी को लेकर द्वन्द्व छिड़ा हुआ है. इससे कांग्रेस की बल्ले–बल्ले है.

कई स्टार और दिग्गजों के मैदान में आ जाने से अवध


चौथी दुनिया

आवश्यकता है

संवाददाता, विज्ञापन प्रतिनिधि, प्रसार प्रतिनिधि

चौथी दुनिया के लिए उत्तर प्रदेश के सभी मंडल और जिला मुख्यालयों पर अनुभवी संवाददाताओं, विज्ञापन और प्रसार प्रतिनिधियों की. पारिश्रमिक योग्यता अनुसार. शीघ्र आवेदन करें.

E-mail- konica@chauthiduniya.com
ajaiup@chauthiduniya.com
चौथी दुनिया F-2, सेक्टर 11, नोएडा
(गौतमबुद्ध नगर) उत्तर प्रदेश–201301,
PH : 120-6450888, 6451999

www.chauthiduniya.com
चौथी दुनिया



# सतपाल महाराज का सद्भावना सम्मेलन भगवा-सम्मेलन में बदलेगा

रेनु शर्मा



इस बार गढ़वाल सांसद व धार्मिक नेता सतपाल महाराज का सद्भावना सम्मेलन नमो–नमो के उद्घोष के बीच भगवा–सम्मेलन बन कर चुनावी रंग में नजर आएगा. सम्मेलन में चटक भगवा रंग हावी होगा. जानकारों का मानना है कि महराज इस बार अपना रंग भाजपा में जमाने के लिए पूर्व मुख्यमंत्री निशंक का दाग धोने में अपने सद्भावना मंत्र का जाप करेंगे. हरिद्वार के राजनीतिक गलियारों में कई ऐसे सवाल यक्ष–प्रश्न बनकर जनमानस में तैर रहे हैं. यहां की जनता में भी भारी उत्सुकता है कि कांग्रेस छोड़कर पाला बदलने के बाद सतपाल महाराज के इस धार्मिक कार्यक्रम को इतनी ही सफलता मिल सकेगी, जितनी कांग्रेस के नेता के तौर पर मिलती थी. यह भी तय माना जा रहा है कि इस बार प्रशासन और चुनाव आयोग की पैनी नजरें भी सम्मेलन पर होंगी. प्रेम नगर आश्रम के अध्यक्ष व गढ़वाल सांसद सतपाल महाराज लम्बे समय से बैसाखी के पर्व पर हरिद्वार में तीन दिवसीय सद्भावना सम्मेलन का आयोजन करते रहे हैं. अब तक तिरंगे में सद्भावना सम्मेलन का विशाल पंडाल बनाया जाता था तथा देश के सभी धर्मों के धर्माचार्य को एक मंच पर लाकर सद्भावना का संदेश दिया जाता था. अब तक के सद्भावना सम्मेलनों में मुख्य रूप से कांग्रेस के कई बड़े नेताओं ने शिरकत की है. मुस्लिम धर्म के कई नामचीन मौलवी, ईसाई धर्म के पादरी, बौध, जैन, पारसी सहित अन्य कई धर्मों के प्रमुख लोग सद्भावना सम्मेलन में शामिल होते रहे हैं. लेकिन इस बार सम्मेलन में फिजा बदलती नजर आएगी. ऋषिकुल मैदान में आयोजित होने वाले सद्भावना सम्मेलन में भाजपा–संघ परिवार के नेता ही भाग लेंगे. सूत्रों की मानें तो भाजपा यहीं से सतपाल महाराज के जरिए पार्टी का उदारवादी चेहरा प्रस्तुत कर सकती है. यह आयोजन पूरी तरह धार्मिक के साथ राजनैतिक कार्यक्रम बनने की सम्भावना है. अब तक इस धार्मिक मंच का पूर्व में भी कभी राजनीतिक इस्तेमाल नहीं हुआ है. सतपाल महाराज आध्यात्मिक संत भी हैं. इन्हें ऋषिकुल मैदान में होने वाले सद्भावना सम्मेलन को अध्यात्म तक ही सीमित रखना होगा, मंच का किसी भी प्रकार राजनीतिक इस्तेमाल किया गया तो आचार संहिता का उल्लंघन होगा. यदि ऐसा हुआ तो आयोजन का समस्त खर्च भाजपा प्रत्याशी के चुनावी व्यय में जोड़ने की मांग की जाएगी.■

feedback@chauthiduniya.com

# पीलीभीत जिले के मुख्य विकास अधिकारी का गैर जिम्मेदाराना बयान

प्रमोद कुमार श्रीवास्तव

पीलीभीत जिले के मुख्य विकास अधिकारी डी.सी.त्रिपाठी ने लोकसभा के चुनावी समर में गैर–जिम्मेदाराना बयान देकर अपनी ओछी मानसिकता को उजागर किया. एक पत्रकार द्वारा चुनाव ड्यूटी में लगे सरकारी कर्मचारियों के समबन्ध में उनसे जब जानकारी मांगी गई तो उन्होंने बताया कि पहली जारी लिस्ट में 130 प्रतिशत ड्यूटी लगाई गई थी. दूसरी जारी लिस्ट में वह 110 प्रतिशत रह गई. गौरतलब है कि चुनाव ड्यूटी में लगे सरकारी कर्मचारियों की ड्यूटी मुख्य विकास अधिकारी कार्यालय से 1000 से 2000 रुपए लेकर काटी जा रही है. जो कर्मचारी चढ़ावा चढ़ा रहा है, उसकी ड्यूटी काट दी जाती है. चढ़ावा नहीं चढ़ाने पर चुनाव जैसी सख्त ड्यूटी का डर दिखाया जा रहा है. उस उक्त पत्रकार ने पूछा कि ऐसा कैसे हो रहा है तो मुख्य विकास अधिकारी बोले यह सब कंप्यूटर सॉफ्टवेयर के कारण हो रहा है. पहले उसने 130 प्रतिशत से 110 प्रतिशत कर दी. आगे कितने प्रतिशत बाकी रह जाएगी कंप्यूटर सॉफ्टवेयर ही मालिक है. अब सोचने वाली बात यह है कि इतने बड़े और जिम्मेदार पद पर बैठा व्यक्ति यह कैसा बयान दे रहा है.■

feedback@chauthiduniya.com

# बस्ती, डुमरियागंज और संतकबीर नगर में दिग्गजों के बीच दिलचस्प मुकाबला







लक्ष्मी नरायण पाण्डेय

बस्ती मंडल की तीनों संसदीय सीटों पर कांग्रेस को छोड़ बाकी सभी प्रमुख राजनैतिक दलों ने जातिगत समीकरणों के भरोसे ही चुनावी वैतरणी पार लगाने के लिए अपने–अपने उम्मीदवार चुनाव मैदान में उतार दिए हैं. कांग्रेस से जगदम्बिका पाल के इस्तीफे के बाद सुर्खियों में रही डुमरियागंज संसदीय सीट पर टिकट के बंटवारे को लेकर सबसे ज्यादा खींचतान मची. भारी विरोध और बदले माहौल के बीच श्रीपाल जहां भाजपा का टिकट हासिल करने में कामयाब रहे. वहीं तरूण पटेल की उम्मीदवारी के बाद कांग्रेस पार्टी में पैदा हुए भूचाल को पार्टी ने भाजपा के टिकट के दावेदार और बांसी सीट के पार्टी विधायक जय प्रताप सिंह की पत्नी वसुन्धरा कुमारी को उम्मीदवार बनाकर खत्म कराया. मौजूदा समय में भाजपा विधायक जयप्रताप सिंह पार्टी अनुशसन को दरकिनार जहां अपनी पत्नी कांग्रेसी उम्मीदवार वसुन्धरा कुमारी के चुनाव प्रचार में जुटे हैं. वहीं, संसदीय सीट के कांग्रेस और भाजपा कार्यकर्ताओ के बारे में यह पता लगा पाना मुस्किल हो रहा है कि कौन किस खेमे में है.

इस सीट पर बीस प्रतिशत मुस्लिम मतों के लालच में बसपा ने पूर्व सांसद मो मुकीम, आप ने बदरे आलम और समाजवादी पार्टी ने विधानसभाध्यक्ष माता प्रसाद पाण्डेय को जहां उम्मीदवार बनाया है. वहीं पीस पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा अयूब खुद उम्मीदवार हैं. समाजवादी को छोड़ इस सीट पर सभी राजनैतिक दलों के दलबदलुओ को चुनाव मैदान में उतारने से भाजपा के जगदम्बिका पाल बसपा के मो0 मुकीम और सपा के माता प्रसाद पाण्डेय बीच जहां काटे के मुकाबले के आसार हैं, वहीं मोदी लहर और मुस्लिम मतों का विखराव भाजपा उम्मीदवार की जीत आसान बना सकती है. कुर्मी और दलित मतों के गठजोड़ के सहारे पिछले चुनाव में बस्ती संसदीय सीट पर अपना परचम लहरा चुकी बसपा ने इस बार पार्टी छत्रप और कप्तानगंज पार्टी विधायक राम प्रसाद चौधरी को चुनाव मैदान में उतारकर जहां अन्य पार्टियों को मात देने की कोशिश की है. वहीं, इस सीट से पिछले चुनाव में किस्मत आजमा चुके प्रदेश सरकार के मंत्री राज किशोर सिंह के छोटे भाई बृज किशोर सिंह को उम्मीदवार बनाकर इनका रास्ता रोकने की घेरे बन्दी कर दी है. भाजपा ने काफी खींचतान के बाद हरीश द्विवेदी चुनाव मैदान में उतारा है. कार्यकर्ताओं के बीच खासे लोकप्रिय श्री द्विवेदी की उम्मीदवारी से इस सीट पर भाजपा बसपा और सपा उम्मीदवारो के बीच कड़े मुकाबले के आसार हैं. इस सीट पर कांग्रेस ने रूधौली सीट के पार्टी विधायक संजय जयसवाल को चुनाव मैदान में उतारा है, लेकिन इन पर आजमगढ़ की एक महिला द्वारा यौन उत्पीड़न का मुकदमा दर्ज कराने के बाद पार्टी में इनकी जगह दूसरे उम्मीदवार को उतारे जाने की चर्चा चल रही है.

**मुस्लिम मतों के लालच में बसपा ने पूर्व सांसद मो मुकीम, आप ने बदरे आलम और समाजवादी पार्टी ने विधानसभाध्यक्ष माता प्रसाद पाण्डेय को जहां उम्मीदवार बनाया है. वहीं पीस पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा अयूब खुद उम्मीदवार हैं.**

संतकबीर नगर संसदीय सीट पर बसपा ने भीष्मशंकर तिवारी, सपा ने भाल चन्द यादव, भाजपा ने शरद त्रिपाठी, आप ने आफताब आलम, पीस पार्टी ने राजा राम निषाद और कांग्रेस ने रोहित पाण्डेय को चुनाव मैदान में उतारा है. लगातार तीसरी बार संसद में पहुचने की कोशिश में जुटे भी भीष्मशंकर तिवारी को इस बार मतदाताओं की नाराजगी झेलने के चलते इस सीट पर सपा के भाल चन्द यादव , भाजपा के शरद त्रिपाठी और बसपा के भीष्मशंकर तिवारी के बीच तिकोने मुकाबले के आसार है.■

feedback@chauthiduniya.com

# टिहरी में महारानी और साकेत में होगी टक्कर

**उत्तरकाशी, टिहरी व देहरादून, तीन जिलों में फैली टिहरी संसदीय सीट के 14 विधानसभा क्षेत्रों में से वर्तमान में छह सीटों पर भाजपा व छह सीटों पर कांग्रेस का कब्जा है, जबकि शेष दो सीटें अन्य के पास हैं. लिहाजा, इस लोकसभा चुनाव में टिहरी संसदीय सीट पर भाजपा व कांग्रेस दोनों दलों के छह-छह सिटिंग विधायकों की भी अग्नि परीक्षा होनी है.**

रेनु शर्मा

भारतीय जनता पार्टी द्वारा महारानी राज्यलक्ष्मी को 'सिटिंग गेटिंग' के आधार पर फिर प्रत्याशी बनाने और कांग्रेस द्वारा पूर्व मुख्यमंत्री विजय बहुगुणा के बेटे साकेत बहुगुणा को प्रत्याशी बनाने से टिहरी संसदीय सीट पर एक बार फिर भाजपा व कांग्रेस के बीच कांटे की टक्कर होने के आसार नजर आ रहे हैं. इसकी वजह यह है कि विधानसभा चुनाव में टिहरी संसदीय सीट के अंतर्गत पड़ने वाली 14 विधानसभा सीटों पर दोनों ही दल छह–छह के स्कोर से बराबरी पर रहे थे, जबकि शेष दो में से एक सीट पर 'उक्रांद' व एक सीट पर निर्दलीय प्रत्याशी ने बाजी मारी थी. कुल प्राप्त वोटों के आधार पर कांग्रेस, भाजपा पर कुछ भारी पड़ी. यहां यह जिक्र करना भी जरूरी होगा कि विधानसभा चुनाव के कुछ समय बाद ही जब कांग्रेस हाईकमान ने विजय बहुगुणा को उत्तराखंड का मुख्यमंत्री बना दिया, तो रिक्त सीट पर हुए उपचुनाव में भाजपा कांग्रेस को शिकस्त भी दे चुकी है. यह शिकस्त भाजपा ने तब दी जब कांग्रेस ने मुख्यमंत्री पुत्र के नाते साकेत को रानी टिहरी के मुकाबले उतारा. यह पूरा चुनाव ही 'मुख्यमंत्री आवास' से मुख्यमंत्री की 'नाक' की सीट बना कर लड़ा गया. इनके बेटे साकेत को करारी हार का मुंह देखना पड़ा.

उत्तरकाशी, टिहरी व देहरादून, तीन जिलों में फैली टिहरी संसदीय सीट के 14 विधानसभा क्षेत्रों में से वर्तमान में छह सीटों पर भाजपा व छह सीटों पर कांग्रेस का कब्जा है, जबकि शेष दो सीटें अन्य के पास हैं. लिहाजा, इस लोकसभा चुनाव में टिहरी संसदीय सीट पर भाजपा व कांग्रेस दोनों दलों के छह–छह सिटिंग विधायकों की भी अग्नि परीक्षा होनी है. ऐसे में अपने छह–छह मजबूत 'गढ़ों' के आधार पर दोनों ही राष्ट्रीय दलों के बीच टिहरी लोकसभा सीट पर कांटे की टक्कर होने के आसार बन सकते हैं. 2012 के विधानसभा चुनाव में 14 सीटों पर दोनों दलों को मिले वोट के आधार पर कांग्रेस कुछ मजबूत स्थिति में दिखाई पड़ रही है. खासतौर पर देहरादून व उत्तरकाशी जिलों में कांग्रेस ने भाजपा के मुकाबले अधिक वोट हासिल किए थे. दिलचस्प पहलू यह है कि टिहरी लोकसभा सीट पर 2012 में हुए उपचुनाव में भी राजनीतिक समीकरण कांग्रेस के ही पक्ष में बनते दिख रहे थे. भाजपा इन संभावनाओं को पीछे छोड़ते हुए कांग्रेस को अप्रत्याशित रूप से शिकस्त देने में कामयाब रही. वह भी तब जबकि राज्य की कांग्रेसनीत सरकार के मुखिया विजय बहुगुणा के पुत्र साकेत बहुगुणा कांग्रेस की ओर से मैदान में थे.

साथ ही, भाजपा की ओर से मैदान में उतरी महारानी माला राज्यलक्ष्मी शाह का वह पहला चुनाव था. इस चुनाव में रानी भले पहली बार चुनाव लड़ रही थी, टिहरी राजपरिवार की यह परम्परागत सीट रही. विधानसभा चुनाव के बाद बदली परिस्थितियां कांग्रेस के प्रतिकूल रहीं. यही वजह है कि प्रदेश की कांग्रेसनीत सरकार ने इस बीच टिहरी संसदीय क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण विकास योजनाएं शुरू कीं. उत्तरकाशी में आपदा से बचाव के लिए बाढ़ नियंत्रण कार्य, रंवाल्टा समुदाय को ओबीसी दर्जा, पॉलीटेक्निक व आईटीआई आदि के निर्णय किए. टिहरी में झील विकास प्राधिकरण की स्थापना समेत देहरादून में अंतर्राष्ट्रीय स्टेडियम, स्पाईस पार्क, हॉकी टर्फ, विधानसभा भवन के लिए भूमि चयन किया. सरकार के ये फैसले चुनाव में कांग्रेस के कितने काम आएंगे, यह क्षेत्र के मतदाताओं को तय करना है. वर्तमान में बहुगुणा को इनके बदनामी के कारण ही इन्हें चुनाव से पहले हटा कर हरीश रावत को लाने की जो कवायद कांग्रेस हाईकमान ने किया है, वही कवायद बहुगुणा के उत्तराधिकारी साकेत के गले की फांस बन गई है. ■

feedback@chauthiduniya.com

# मछली शहर में चुनावी हलचल तेज, कोई आगे और कोई पीछे

वीरेन्द्र प्रताप सिंह

शिराज ए हिन्द के नाम से मशहूर जनपद जौनपुर की मछली शहर संसदीय सीट इस समय चर्चा में है. यहां से सपा के निवर्तमान सांसद तूफानी सरोज चौतरफा घिरे हुए हैं. 1962 में बने इस संसदीय क्षेत्र का कुछ भाग फूलपुर में था. जहां से भारत के प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू चुने जाते रहे. बाद में जौनपुर की सीट तथा प्रतापगढ़ के दो क्रमशः खुटहन, गडवारा, मछली शहर, वीरापुर एवं पट्टी विधानसभा क्षेत्र इसमे शामिल हुए. फिलहाल, इसमें मछली शहर मडियाहू, जफाराबाद केराकत जौनपुर जनपद से और पिण्डरा वाराणसी जनपद का विधानसभा क्षेत्र इसमें शामिल हैं.



मछली शहर संसदीय क्षेत्र से उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री होने वाले श्रीपति मिश्र भी यहां से सांसद रह चुके हैं और रामविलास वेदान्ती, उमाकान्त यादव जैसे धुरंधर भी यहां से संसद के लिए चुने जा चुके हैं. वर्तमान में यह संसदीय क्षेत्र सुरक्षित हैं और यहां से तूफानी सरोज सपा रामचरित्र निशाद भाजपा, तूफानी निशाद कांग्रेस, बी.पी.सरोज बसपा एवं विरेन्द्र कुमार आप से चुनाव लड़ने की तैयारी कर रहे हैं.

मछली शहर संसदीय क्षेत्र में देखा जाए तो 1962 में गनपत राम कांग्रेस, 1967 में कामेश्वर द्विवेदी कांग्रेस 1971 में फिर द्विवेदी कांग्रेस 1977 की लहर में राजकेशर सिंह लोक दल से, 1980 में शिवशरण वर्मा वीएनपी. 1984 में श्रीपति मिश्र कांग्रेस, 1989 एवं 1991 में शिवशरण वर्मा जनता दल 1996 में रामविलास वेदान्ती भाजपा 1999 में सीएन.सिंह सपा 2004 में उमाकान्त यादव बसपा और 2009 में तूफानी सरोज सपा से जीते.

क्षेत्र में जौनपुर संसदीय क्षेत्र का धमक एक ओर तो इलाहाबाद एवं वाराणसी की राजनीति का प्रभाव, दूसरी ओर इस क्षेत्र को जागृत किए हुए हैं. मतदाता मुखर नहीं है, अपनी तरह से इनको प्रभावित करने का कार्य किया जा रहा है. जैसे–जैसे चुनाव की तारीख करीब आती जा रही है, लोगों में उत्तेजना बढ़ रही है. गांव तक लोग पहुंचने लगे हैं. इस बार किसी को बढ़त मिलने की बात फिलहाल अभी कहना बेमानी होगी.■

feedback@chauthiduniya.com

# अमित शाह के बयान से वोटों के ध्रुवीकरण की राजनीति

जाहिद खान



भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव अमित शाह अपने बदला लेने वाले बयान पर फंसते नजर आ रहे हैं. चुनाव आयोग ने हाल ही में इस पूरे मामले का संज्ञान लेते हुए, उन्हें आदर्श चुनाव आचार संहिता के प्रथम–दृष्टया उल्लंघन का नोटिस जारी किया. शाह को जारी नोटिस में कहा गया कि मुजफ्फरनगर, शामली और बिजनौर में उनके भाषणों के आधार पर क्यों न उनके खिलाफ आदर्श चुनाव आचार संहिता के उल्लंघन की कार्रवाई शुरू की जाए. भाजपा के प्रधानमंत्री पद के प्रत्याशी नरेंद्र मोदी के करीबी और उत्तर प्रदेश के प्रभारी अमित शाह के उस बयान के बाद विवाद पैदा हो गया था, जिसमें उन्होंने कहा था कि आम चुनाव खासकर पश्चिम उत्तर प्रदेश में सम्मान के लिए चुनाव हैं. ये चुनाव अपमान का बदला लेने के लिए हैं. ये चुनाव उन लोगों से बदला लेने के लिए हैं, जिन्होंने अपमान किया है. यह चुनाव उनको सबक सिखाने का है, जिन्होंने अन्याय किया है. शाह ने अपनी चुनावी सभाओं के दौरान उन्मादी भाषण देते हुए ना सिर्फ जाटों को मुजफ्फरनगर के दंगों की याद दिलाई बल्कि उन्हें बदला लेने के लिए भी उकसाया. जाहिर है शाह के इस बयान के बाद उत्तर प्रदेश की राजनीति में तूफान आ गया है. सियासी पार्टियां जहां एक–दूसरे पर आरोप–प्रत्यारोप में लगी हुई हैं, तो वहीं दूसरी ओर प्रदेश में दो जगह अमित शाह के खिलाफ आइपीसी और जनप्रतिधित्व कानून की अलग–अलग धाराओं के तहत मामला दर्ज कराया गया है. शाह के खिलाफ आइपीसी की धारा 153 (लोगों को भड़काना) और जनप्रतिनिधित्व कानून की धारा 125 (अलग–अलग वर्गों के बीच दुश्मनी पैदा करना) के तहत मामला दर्ज किया गया है.

**अमित शाह ने हाल ही में अपने ऊपर लगे इन आरोपों का जवाब आयोग में दाखिल कर दिया. आयोग को दिये जवाब में शाह ने आचार संहिता के उल्लंघन के आरोपों को पूरी तरह से खारिज किया है. शाह ने बदला शब्द का इस्तेमाल करने से इंकार करते हुये कहा है कि सपा सरकार के दबाव में प्रशासन ने आयोग को दी गई सीडी में भाषण को उचित संदर्भ में पेश नहीं किया. भाषण में कुछ भी गलत नहीं है.**

लोगों की साम्प्रदायिक भावनाओं को भड़काने वाले अमित शाह के इन बयानों की जहां देश में हर तरफ निंदा हो रही है, तो वहीं इस मामले में पूरी भाजपा शाह के साथ खड़ी है. उनकी गलती को मानने की बजाय बड़ी ही बेशर्मी से शाह को बचाने की कोशिशें की जा रही हैं. शाह के खिलाफ एफआइआर की आलोचना करते हुए भाजपा इसे प्रदेश में चुनाव का ध्रुवीकरण करने की सोची समझी चाल बता रही है. उसका कहना है कि चुनावों को सांप्रदायिक रंग देने की सोची–समझी साजिश' के तहत ऐसा किया गया है और यह कार्रवाई वोट बैंक की राजनीति से प्रेरित है. अमित शाह के बचाव में ऐसी–ऐसी दलीलें दी जा रही हैं कि प्रवक्ताओं की समझ पर रोना आ जाए. भाजपा के गुणी' प्रवक्ता देश को बतला रहे हैं कि शाह की तरफ से बदला शब्द का इस्तेमाल कोई असामान्य बात नहीं है. अमेरिकी राष्ट्रपति ने भी ओहायो में चुनाव प्रचार के दौरान इस शब्द का इस्तेमाल किया था. ओबामा ने लोगों से कहा था कि मतदान सर्वश्रेष्ठ बदला है. जाहिर है कि शायद ही यह दलील किसी के गले उतरे. भड़काऊ भाषण के मामले में सिर्फ अमित शाह ही अकेले दोषी नहीं हैं, बल्कि राजस्थान की मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे ने भी पिछले दिनों एक चुनावी सभा के दौरान इसी तरह की आपत्तिजनक भाषा का इस्तेमाल करते हुये, खुली धमकी दी थी कि कौन किसके टुकड़े करता है. यह चुनाव के बाद देख लेंगे.

हालांकि, अमित शाह ही एकमात्र ऐसे नेता नहीं हैं, जिन्होंने इस तरह का बयान दिया है. समाजवादी पार्टी के नेता आजम खान पर भी चुनाव आयोग ने सख्ती दिखाई है. खान को बी प्रचार करने पर रोक लगा दी है. आजम खान ने करगिल जंग में सेना के मामले पर विवादास्पद बयान दिया था. उन्होंने कहा था कि करगिल में जीत हिंदुओं की वजह से नहीं, बल्कि मुसलमानों की वजह से हुई थी.

आदर्श चुनाव आचार संहिता के प्रावधानों के मुताबिक किसी भी पार्टी या उम्मीदवार को ऐसी किसी गतिविधियों में शामिल नहीं होना चाहिए, जो विभिन्न जातियों और समुदाय तथा धार्मिक या भाषाई आधार पर घृणा या मतभेद या तनाव पैदा करे. वहीं पार्टियों और उम्मीदवारों को ऐसी आलोचनाओं से भी बचना चाहिए जो किसी की निजी जिंदगी से संबंधित हों और नेता या कार्यकर्ता से सार्वजनिक कार्यों से जुड़े नहीं हों. आरपीएक्ट की धारा 123 (3), 123 ए और 125 ऐसी सभी गतिविधियों को पूरी तरह से गलत मानती हैं. जो इन कार्यवाहियों में दोषी पाया जाये, उसके खिलाफ संविधान और अन्य संबंधित कानूनों के मुताबिक कार्रवाई की जानी चाहिए. देश के मुख्य चुनाव अधिकारी को संविधान ने यह अधिकार दिया हुआ है कि जनप्रतिनिधित्व अधिनियम और कानून के अन्य प्रावधानों के तहत वह ऐसी पार्टियों, संगठनों एवं लोगों के खिलाफ कार्रवाई कर सकता है, जिनके क्रियाकलापों से संविधान को आघात पहुंचता हो.

अभी ज्यादा दिन नहीं बीते हैं, जब सर्वोच्च न्यायालय ने ऐसे ही एक मामले में सुनवाई करते हुये धर्म, जाति, क्षेत्र या जातीयता के आधार पर सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक नेताओं के नफरत पैदा करने वाले भाषणों को समाज के लिये हानिकारक बताते हुए कानून लागू करने वाली एजेंसियों को ऐसे व्यक्तियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने का निर्देश दिया था. जाहिर है कि इस संबंध में अदालत के साफ–साफ दिशा–निर्देश हैं और कानून में भी इसकी सख्त मनाही है. बावजूद इसके हमारे सियासतदां जरा सा भी सुधरने का नाम नहीं ले रहे. न्यायालय एवं निर्वाचन आयोग के स्पष्ट दिशा–




निर्देश और चेतावनियों के बावजूद इस चुनाव में भी नेता लगातार अभद्र और आपत्तिजनक टिप्पणियां कर रहे हैं.

भाजपा ने अमित शाह को जिस दिन से उत्तर प्रदेश में पार्टी का प्रभारी बनाया है, तभी से यह आशंकाएं जताई जाने लगी थीं कि वे चुनाव के मद्देनजर राज्य में वोटों के ध्रुवीकरण की कोशिशें कर सकते हैं. भाजपा ने मोदी के चाहने से ही पार्टी ने उन्हें उत्तर प्रदेश की कमान सौंपी. शाह जिस तरह से उत्तर प्रदेश में एक–एक कर अपने मोहरे चल रहे हैं, उससे ये लगता है कि कहीं न कहीं उनके इन फैसलों में संघ परिवार और मोदी की भी सहमति है. गर उनकी सहमति न होती, तो शाह एक कदम भी आगे नहीं बढ़ते.

अमित शाह ने हाल ही में अपने ऊपर लगे इन आरोपों का जवाब आयोग में दाखिल कर दिया. आयोग को दिये जवाब में शाह ने आचार संहिता के उल्लंघन के आरोपों को पूरी तरह से खारिज किया है. शाह ने बदला शब्द का इस्तेमाल करने से इंकार करते हुये कहा है कि सपा सरकार के दबाव में प्रशासन ने आयोग को दी गई सीडी में भाषण को उचित संदर्भ में पेश नहीं किया. भाषण में कुछ भी गलत नहीं है. यानी इस मामले में साफ–साफ ऑडियो और वीडियो सबूत होने के बाद भी चुनाव आयोग की आंखों में धूल झोंकने की कोशिशें की जा रही हैं. चुनाव आयोग से माफी मांगने की बजाये, अमित शाह अभी भी अपने आप को बेदाग बतला रहे हैं. एक तरफ निर्वाचन आयोग के सामने उनकी यह सफाई है, तो दूसरी ओर अपनी गिरफ्तारी से बचने के लिये उन्होंने इलाहबाद हाई कोर्ट मे अपील भी दाखिल की हुई थी. अदालत के सामने उन्होंने मांग की थी कि उनके खिलाफ दर्ज एफआईआर रद्द हो और उनकी गिरफ्तारी पर रोक लगे. लेकिन इस मामले में जब अदालत का कड़ा रुख सामने आया, तो अमित शाह ने पीछे हटते हुये अपनी याचिका वापस ले ली. जाहिर है यदि अमित शाह अपने आप को बेकसूरवार मानते हैं, तो उन्हें गिरफ्तारी का डर क्यों हैं ? सच बात तो यह है कि चोर की दाढ़ी में कहीं न कहीं तिनका है. यह तिनका नजर ना आ जाये, इसलिये वे इन सब बेमतलब की कवायदों में जुटे हुये हैं. बहरहाल अब फैसला चुनाव आयोग और उत्तर प्रदेश पुलिस को करना है कि उनके खिलाफ क्या कार्रवाई की जाये? ■

feedback@chauthiduniya.com

# सेर पर सवा सेर बनीं रेणुका

*कांग्रेस के दिग्गज नेता हरीश रावत ने जिस तरह घोटालों के मामले में निशंक को आइना दिखाते हुए जनता में महाकुम्भ 2010 में 'निशंक राज के घोटाले' की सच्चाई को कुरेद कर जनता का घाव हरा कर दिया है उससे अब निशंक को मोदी लहर की ही आस है.*

राज्य में राजनैतिक झंझावातों से घिरी कांग्रेस को उबारने के लिए कांग्रेस हाईकमान ने मुख्यमंत्री हरीश रावत की धर्मपत्नी रेणुका रावत पूर्व मुख्यमंत्री विजय बहुगुणा के बेटे साकेत बहुगुणा को क्रमशः हरिद्वार और टिहरी सीट पर प्रत्याशी बनाया है. मुख्यमंत्री हरीश रावत की धर्मपत्नी रेणुका रावत के हरिद्वार सीट से प्रत्याशी बनने से भाजपा के पूर्व मुख्यमंत्री रमश पोखरियाल निशंक को दिन में ही तारे नज़र आने लगे हैं. कांग्रेस के दिग्गज नेता हरीश रावत ने जिस तरह घोटालों के मामले में निशंक को आइना दिखाते हुए जनता में महाकुम्भ 2010 में 'निशंक राज के घोटाले' की सच्चाई को कुरेद कर जनता का घाव हरा कर दिया है उससे अब निशंक को मोदी लहर की ही आस है. क्षेत्रीय सांसद के साथ सूबे के सेवक मुख्यमंत्री होने का 'हरीश' का संदेश रेणुका को सेर पर सवा सेर बना दिया है. हरीश की जनता की सेवा में लम्बी पारी खेलने के साथ उनके पुत्र आनन्द रावत की युवा कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष के रूप में खड़ी की गई युवक की फौज अर्न्तकलह से जूझ रही भाजपा के कैग द्वारा दागी निशंक को इलाके में विरोध का भी सामना करना पड़ रहा है.■



चौथी दुनिया ब्यूरो

feedback@chauthiduniya.com

# नया शिक्षण सत्र शुरू होते ही निजी स्कूलों के मालिकों और प्रकाशकों-गारमेन्ट्स स्टोर्स की चांदी

प्रमोद कुमार श्रीवास्तव

feedback@chauthiduniya.com

जनपद पीलीभीत के चुनिन्दा कॉन्वेन्ट स्कूलों में 1 अप्रैल से नया शिक्षण सत्र शुरू हो गया है. इसी के साथ ही ज्यादातर अभिभावक अब अपने बच्चों की ड्रेस और पाठन सामग्री लेने शहर के चुन्निदा दो–तीन स्टेशनरी की दुकानों पर खरीदने पहुंचे और इनका मूल्य सुनकर इनके पैरों के तले जमीन खिसक गई. वे अवाक रह गए. मुंह से बोल न निकला और जब हिम्मत कर दुकान के मालिक से कहा कि पिछले सत्र में तो यह कोर्स 4 से 5 सौ रूपये कम था, तो दुकान मालिक दो टूक जवाब देता है कि लेना हो, तो लो नहीं तो आगे बढ़ो. अब अभिभाव के सामने मजबूरी है कि कान्वेन्ट स्कूल में पढ़ रहे अपने नौनिहाल का कोर्स तो इसे इसी दुकान से लेना है और कहीं मिलेगा भी नहीं. शहर के स्टशन रोड स्थित एक नामी स्टशनर्स के यहां तो रेट के चक्कर में अभिभावकों और दुकान के कर्मचारियों से साथ मारपीट तक हो गई. मीडिल क्लास आदमी अपने बच्चों को कैसे पढ़ा पाएगा. शहर के चुनिन्दा कान्वेंट स्कूल भारी भरकम कमीशन के लालच में एक ही स्टेशनर्स के यहां अपने स्कूल का ठेका देते हैं. इसके अलावा किसी और दुकान से आपको इस स्कूल का कोर्स नहीं मिलेगा. इसी कमीशन खोरी के चलते यह कान्वेन्ट स्कूल हर साल अपने यहां का कोर्स भी बदल देते हैं. शहर के स्टेशन रोड स्थित एक स्टेशनर्स के यहां पीलीभीत के सभी बड़े कान्वेन्ट स्कूल लिटिल ऐन्जिल्स, स्प्रिंगडेल कॉलेज, लायन्स बाल विद्या मन्दिर, बेनहर किड्स, ज्ञान इन्टरनेशनल, मॉम्स प्राइड स्कूल, आदि बड़े स्कूलों का कोर्स यहां पर मिल रहा है. इसके अलावा आप हर स्टशनर्स के यहां घूम आइए, लेकिन इन स्कूलों का कोर्स नहीं मिलेगा इसी तरह नए स्कूल ड्रेस में भी शहर के स्टशन रोड स्थित दो तीन नामी गारमेन्ट्स मैनी गारमेन्ट्स, सर्वोत्तम गारमेंन्ट्स आदि के यहां मंहगे दामों पर ड्रेसें बेचकर अभिभावकों की गाढ़ी कमाइयों पर डाका डाला जा रहा है. इस कमीशन खोरी में इन स्कूलों के मालिक और गारमेन्ट्स स्टोर, स्टेशनर्स मालिक दिन दूनी रात चौगनी तरक्की कर रहे हैं. ■



*आइए एक नजर डालते हैं इन कान्वेन्ट स्कूलों में बंट रही क्लासों और कोर्सेस की रेट लिस्ट–*

**लिटिल एंजिल्स का विवरण**

| कक्षा | दाम(पिछले वर्ष, रुपए में) | दाम(वर्तमान वर्ष, रुपए में) |
|---|---|---|
| प्रिएनसी | 850 | 1000 |
| एनसी | 1110 | 1330 |
| केजी | 1120 | 1347 |
| एक | 2000 | 2300 |
| दो | 2050 | 2389 |
| तीन | 2250 | 2831 |
| चार | 2300 | 2928 |
| पांच | 2700 | 3332 |
| छह | 3300 | 4028 |
| सात | 3250 | 3798 |
| आठ | 3100 | 3984 |

**स्प्रिंगडेल स्कूल का विवरण**

| कक्षा | दाम(पिछले वर्ष, रुपए में) | दाम(वर्तमान वर्ष, रुपए में) |
|---|---|---|
| प्रिएनसी | 686 | 746 |
| एनसी | 1170 | 1305 |
| केजी | 1120 | 1269 |
| एक | 1983 | 2156 |
| दो | 2039 | 2232 |
| तीन | 2390 | 2690 |
| चार | 2600 | 2891 |
| पांच | 2945 | 3119 |
| छह | 2845 | 3142 |
| सात | 2812 | 3092 |
| आठ | 3056 | 3186 |

**लायंस बाल विद्या मंदिर का विवरण**

| कक्षा | दाम(पिछले वर्ष, रुपए में) | दाम(वर्तमान वर्ष, रुपए में) |
|---|---|---|
| प्रिएनसी | 980 | 1280 |
| एनसी | 1120 | 1520 |
| केजी | 1286 | 1771 |
| एक | 1590 | 2079 |
| दो | 1856 | 2099 |
| तीन | 1920 | 2168 |
| चार | 1840 | 2169 |
| पांच | 1915 | 2271 |
| छह | 2730 | 3284 |
| सात | 2965 | 3466 |
| आठ | 2861 | 3221 |

कार्यालय
अधिशासी अभियन्ता
विद्युत वितरण खण्ड,
पीलीभीत

अल्पकालीन निविदा–सूचना

अधोहस्ताक्षर कर्ता द्वारा मध्यॉचल विद्युत वितरण निगम लि. के अन्तर्गत पंजीकृत इच्छुक एवं अनुभवी निविदादाताओं से कार्य हेतु प्रथम भाग में 2000.00 किसी भी राष्ट्रीयकृत बैंक सी.डी.आर., राष्ट्रीय बचत पत्र के रूप में जो अधोहस्ताक्षरकर्ता के नाम बन्धक हो तथा द्वितीय भाग में दरें अंकित हो दिनांक–16.04.2014 समय 15.00 बजे तक आमंत्रित की जाती है, जो उसी दिन 15.30 बजे निविदाताओं/प्रतिनिधिओं के समझ खोली जाएगी। निविदा के प्रपत्र 100+12= 113, कार्यालय में जमा कर दिनांक–15.04.2014 तक प्राप्त किए जा सकते हैं। निविदा खुलने की तिथि को यदि अवकाश होता है तो निविदा अगले कार्य दिवस में खोली जायेगी। निविदाओं के बिना किसी कारण बताए निरस्त करने का अधिकार अधोहस्ताक्षर कर्ता के पास सुरक्षित रहेगा।

01. निविदा सं.–21/ वि.वि.ख.पी/ (कार्य) 2013–14 जमा योजना के अन्तर्गत नवीन संयोजनों के उर्जीकरण एवं अन्य कार्य।

राष्ट्र हित में बिजली बचायें।

(पंकज कुमार)
अधिशासी अभियन्ता

कार्यालय
अधिशासी अभियन्ता
विद्युत वितरण खण्ड,
पीलीभीत

नीलामी–सूचना

इस खण्ड के अधीन 33/11 के.वी. उपकेन्द्र बीसलपुर, जनपद–पीलीभीत के परिसर में 9 अदद यूकेलिप्टस के वृक्ष हैं। उक्त वृक्षों को परिसर से हटाने हेतु नीलामी दिनांक– 15.04.2014 को होना निर्धारित है। इच्छुक बोलीदाता 37,000/– का बैंक ड्राफ्ट अधिशासी अभियन्ता, विद्युत वितरण खण्ड, पीलीभीत के नाम से जमा करें। बैंक ड्राफ्ट जमा करने वाले व्यक्ति ही बोली में भाग ले सकते हैं।

राष्ट्र हित में बिजली बचायें।

अधिशासी अभियन्ता

अजय कुमार , लखनऊ ब्यूरो प्रमुख कार्यालय का पता : जे–3/2 डॉलीबाग़, हजरतगंज, लखनऊ–226001, फोन –(0522) 2204678/09415005111